प्रेम ही परमेश्वर है

श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रेम ही परमेश्वर है

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य ३३.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो शब्द

'प्रेम' एक बहुत व्यापक शब्द है। इसका अर्थ ईश्वर-प्रेम और विश्व-प्रेम से लेकर निकृष्ट वासनाओं तक लगाया जाता है। निम्न कोटि के मनुष्यों ने तो इसका मतलब केवल कामुकता जन्य कृत्यों से मान लिया है। उससे कुछ ऊँचे सामान्य श्रेणी वाले अपने स्त्री-पुत्र सगे-संबधियों से लगाव, हित चिंतन को ही प्रेम मानते हैं। कुछ बुद्धिमान व्यक्ति कला, साहित्य, संगीत, ज्ञान-विज्ञान आदि की साधना को भी 'प्रेम' की संज्ञा देते हैं। पर इनमें से वास्तव में कोई प्रेम कहे जाने लायक नहीं है । ये सब स्वार्थ की सीमा में ही आते हैं जबकि सच्चा प्रेम परमार्थ का प्रमुख अंग है।

यदि हम सृष्टि और विश्व के सुदृढ़ रहस्य पर विचार करें, तो प्रतीत होता है कि प्रेम का सच्चा पात्र परमेश्वर ही है, जिसने हमको देव दुर्लभ तन, मन, विवेक और सब प्रकार की कार्यक्षमता प्रदान की और जन्म से मरण तक हमारी सुख-सुविधा की व्यवस्था करता रहता है, हमें कुमार्ग पर जाने से रोककर सुमार्ग पर चलने को बाध्य करता है। हमारी आँखें नहीं खुलतीं तो दंड विधान द्वारा भी हमको पतन के खड्ड में गिरने से बचाने का प्रयत्न करता है, वही भगवान हमारे प्रेम, भक्ति-श्रद्धा का पात्र हो सकता है। पर भगवान से हम कैसे प्रेम करें, यह एक गूढ़ समस्या है। आजकल हमारे अधिकांश भाई ईश्वर के भजन-पूजा, प्रार्थना, स्तुति-कीर्तन आदि को ही भगवान से प्रेम करना मान बैठे हैं। ये बातें भी अच्छी हैं, इनसे मनुष्य का आत्मोत्कर्ष हो सकता है, पर परमेश्वर से प्रेम करने का वास्तविक आशय उसकी बनाई सृष्टि से प्रेम करना और उसकी उचित प्रगति में सहायता करना ही है। यदि हम भगवान के बनाये प्राणियों के दुःख, अभाव, कष्टों में भाग लेकर उनकी विषम परिस्थितियों का कुछ समाधान करने में समर्थ हो सकें, तो यही परमात्मा की सच्ची सेवा मानी जा सकती है और इसी प्रकार उसके प्रति प्रेम प्रकट किया जा सकता है।

—लेखक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

१.	पढ़ै सो पंडित होय-ढाई अक्षर प्रेम के	५
२.	प्रेम-संसार का सर्वोपरि आकर्षण	१०
३.	प्रेम और उसकी शक्ति	१५
४.	प्रेम-समस्त सद्प्रेरणाओं का स्रोत	२१
५.	प्रेम-जगत का सार और कुछ सार नहीं	२७
६.	प्रेम का अमृत और उसकी उपलब्धि साधना	२८
७.	मानव-जीवन का अमृत-प्रेम	३४
८.	प्रेम का अमृत मधुरतम है	३७
९.	आनंद का मूल स्रोत प्रेम ही तो है	४३
१०.	गर न हुई दिल में मए इश्क की मस्ती	४८
११.	प्रेम साधना द्वारा आंतरिक उल्लास का विकास	५१
१२.	प्रेम का अमृत और उसका प्रतिदान	५७
१३.	प्रेम और सेवा ही तो धर्म है	६१
१४.	आत्म जागृति की अमर साधना 'प्रेम'	६६
१५.	प्रेम की परख-प्रेम की परिणति	६९
१६.	तुलसी प्रेम पयोधि की ताते माप न जोख	७२
१७.	सृष्टि का विकास प्रेम से ही संभव	७६
१८.	प्रेम की आश, प्रेम की प्यास, पशु-पक्षियों के भी पास	८२

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१९.	प्रेम का परिष्कार-पेड़, पौधों से भी प्यार	९१
२०.	प्रेम-प्रतिरोपण से पत्थर भी परमात्मा	९६
२१.	प्रेम साधना द्वारा विश्वात्मा की अनुभूति	१००
२२.	प्रेम विस्तार से परमात्मा की प्राप्ति	१०५
२३.	परमात्मा की प्राप्ति सच्चे प्रेम द्वारा ही संभव है	१११
२४.	प्रेम-साधना हमें परमात्मा से मिला देती है	११७
२५.	ईश्वर का प्रतिबिंब प्रेम है, प्रेम हृदय का आलोक	१२४
२६.	प्रेम अमृत का झरना	१२७
२७.	परमात्मा की प्राप्ति प्रेमी के लिए ही संभव	१३१
२८.	विश्व प्रेम ही ईश्वर प्रेम	१३६
२९.	परमात्मा का प्रेम पूर्ण है, पवित्र है	१४१
३०.	ईश प्रेम से परिपूर्ण और मधुर कुछ नहीं	१४८
३१.	प्रेम द्वारा सर्वांगीण कल्याण की साधना	१५२
३२.	ज्ञान और कर्म के साथ भक्ति भी अपेक्षित है	१५४
३३.	प्रेम-भावना के साथ आदर्शवादिता भी जोड़ें	१६०
३४.	प्रेम से ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति	१६६
३५.	प्रेम-साधना के सूत्र	१७२

◆

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम ही परमेश्वर

पढ़े सो पंडित होय–ढाई अक्षर प्रेम के

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं, एक वह जो शक्तिशाली होते हैं, जिनमें अहंकार की प्रबलता होती है। शक्ति के बल पर वे किसी को भी डरा–धमकाकर वश में कर लेते हैं। कम साहस के लोग अनायास ही उनकी खुशामद करते रहते हैं किंतु भीतर–भीतर उन पर सभी आक्रोश और घृणा ही रखते हैं। थोड़ी–सी गुँजाइश दिखाई देने पर लोग उससे दूर भागते हैं, यहीं नहीं कई बार अहंभावना वाले व्यक्ति पर घातक प्रहार भी होता है और वह अंत में बुरे परिणाम भुगतकर नष्ट हो जाता है। इसलिए शक्ति का अहंकार करने वाला व्यक्ति अंततः बड़ा ही दीन और दुर्बल सिद्ध होता है।

एक दूसरा व्यक्ति भी होता है—भावुक और करुणाशील। दूसरों के कष्ट, दुःख, पीड़ाएँ देखकर उसके नेत्र तुरंत छलक उठते हैं। वह जहाँ भी पीड़ा, स्नेह का अभाव देखता है, वहीं जा पहुँचता है और कहता है लो मैं आ गया—और कोई हो न हो, तुम्हारा मैं जो हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, तुम्हारे पास जो कुछ नहीं है, वह मैं दूँगा। उस प्रेमी अंतःकरण वाले मनुष्य के चरणों में संसार अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है, इसलिए वह कमजोर दिखाई देने पर भी बड़ा शक्तिशाली होता है। प्रेम वह रचनात्मक भाव है, जो आत्मा की अनंत शक्तियों को जाग्रत कर उसे पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचा देता है। इसीलिए विश्व–प्रेम को ही भगवान की सर्वश्रेष्ठ उपासना के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

जीवन के सुंदरतम रूप की यदि कुछ अभिव्यक्ति हो सकती है तो वह प्रेम में ही है, पर उसे पाने और जाग्रत करने का यह अर्थ नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता कि मनुष्य सुख और मधुरता में ही विचरण करता रहे, वरन् उसे कष्ट, सहिष्णुता और उन वीरोचित यत्नों का जागरण करना भी अनिवार्य हो जाता है, जो प्रेम की रक्षा और मर्यादा के पालन के लिए अनिवार्य होते हैं। प्रेम का वास्तविक आनंद तभी मिलता है।

प्रेम संसार की ज्योति है और सब उसी के लिए संघर्ष करते रहते हैं। सच्चा समर्पण भी प्रेम के लिए ही होता है, इसीलिए यह जान पड़ता है कि विश्व की मूल रचनात्मक शक्ति यदि कुछ होगी तो वह प्रेम ही होगी और जो प्रेम करना नहीं सीखता, उसे ईश्वर की अनुभूति कभी नहीं हो सकती। तुलनात्मक अध्ययन करके देखें तो भी यही लगता है कि परमेश्वर की सच्ची अभिव्यक्ति ही प्रेम है और प्रेम भावनाओं का विकास कर मनुष्य परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। प्रेम से बढ़कर जोड़ने वाली (योग) शक्ति संसार में और कुछ भी नहीं है।

पर यह भ्रांति नहीं होनी चाहिए कि हमें जो वस्तु परम प्रिय लगती है, उस पर हमारा अधिकार हो गया और यदि उसे सुविधापूर्वक नहीं प्राप्त कर सकते तो अनधिकार चेष्टाओं द्वारा प्राप्त करें। प्रेम–प्रेम की इच्छा तो करता है, पर उसकी रति आत्मा है, कोई और माध्यम या साधन नहीं। आत्म जगत अपने–आप में इतना परिपूर्ण है कि उसमें रमण करने पर हमें वह सुख अपने–आप मिलने लगता है, जिसकी हम प्रेमास्पद से अपेक्षा रखते हैं। इसलिए पदार्थों के प्रेम को क्षण–भंगुर और ईश्वरीय प्रेम को दिव्य और शाश्वत मान लिया है।

वह निःस्वार्थ होता है और उसके लिए होता है, जो न कहीं दिखाई देता है और न सुनाई। मालूम नहीं पड़ता कि अपनी आवाज और भावनाएँ उस तक पहुँचती भी है अथवा नहीं, पर हमारी हर कातर पुकार के साथ अंतःकरण में एक संतोष और सांत्वना की अंतर्वृष्टि होती है, वह बताती है कि तुम्हारा विश्वास और तुम्हारी प्रार्थना निरर्थक नहीं जा रही। मूल में बैठी हुई आत्म प्रतिभा स्वयं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकसित होकर मार्गदर्शन कर रही है। विकास की यह प्रक्रिया ईश्वर प्रेमी की अनेक प्रसुप्त प्रतिभाओं और बौद्धिक क्षमताओं का जागरण ही करती है। मेलों में उड़ाए जाने वाले गुब्बारों के नीचे एक प्रकार का ऐसा पदार्थ जलाया जाता है, जिससे गैस बनती है और यह गैस ही उस गुब्बारे को उड़ाकर दूर क्षितिज के पार तक पहुँचा देती है।

प्रेम की अंतःकरण में उठने वाली लपटें भी ऐसी हैं, जो शरीर की, मन की, बुद्धि और आत्म चेतना की शक्तियों का उद्दीपन कर उन्हें ऊपर उठाती रहती है और विकास की इस हलचलपूर्ण अवस्था में भी वह सुख और स्वर्गीय सौन्दर्य की रसानुभूति करता रहता है, भले ही माध्यम कुछ न हो। भले ही वह विकास के साथ ही रमण कर रहा हो, उसे अपना प्रेमी परमेश्वर दिखाई भी नहीं देता तो भी प्रकृति के अंतराल से उसकी दिव्य वाणी और उसका दिव्य आश्वासन भरा प्रकाश फूटता ही रहता है।

निष्काम प्रेम में वह शक्ति है, जो प्रवाह बनकर फूटती है और न केवल दो-चार व्यक्तियों में वरन् हजारें-लाखों के जीवन में आनंद का स्रोत बनकर उमड़ पड़ती है, वह हजारों कलुषित अंतःकरणों को धोकर उन्हें निर्मल बना देती है। तुलसीदासजी ने भगवान से प्रेम किया था, प्रत्यक्ष में वह प्रेम किसी व्यक्ति के लिए नहीं था, किंतु उनका प्रेम जब बहुजन हिताय रामायण के रूप में फूटा तो न केवल परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और विश्वास की लहरें फूटीं वरन् सेवा, सहिष्णुता, दांपत्य प्रेम, पारिवारिक मर्यादा, संतोष, दया, करुणा, उदारता, ऊर्ध्वगामी चेतनाओं की लहरें समाज में फूट निकलीं।

तुलसीदास जी नहीं रहे, पर उनकी आत्मा आज भी हजारों लोगों को अपनी आत्मा से मिलाकर ईश्वरीय आत्मा में परिणत करती है। ईश्वर के प्रति प्रेम का अर्थ स्वार्थ या संकीर्णता नहीं, वरन् अपने आप को उस मूल बिंदु के साथ जोड़ देना है, जो अपने आप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को जन-जन के जीवन में विकीर्ण करता रहता है। तात्पर्य यह है कि जब हम ईश्वर से प्रेम करते हैं, तब संसार में व्यक्त चेतना के प्रत्येक कण से प्रेम करते हैं, ईश्वर की यही परिभाषा भी तो है।

इसी छोटी-सी बात को न समझ पाने के कारण या तो लोग ईश्वर-प्रेम के नाम पर कर्तव्य पराणयता से विमुख होते हैं अथवा पदार्थ या शारीरिक प्रेम (वासना) में इतने आसक्त हो जाते हैं कि प्रेम की व्यापकता और अक्षुण्ण सौंदर्य के सुख का उन्हें पता ही नहीं चल पाता। ईश्वर से प्रेम करने का अर्थ विश्व-सौंदर्य के प्रति अपने आप को समर्पित करना होता है, उसमें कहीं न तो आसक्ति का भाव आ सकता है और न विकार। यह दोष तो उसी प्रेम में होंगे, जिसे केवल स्वार्थ और वासना के लिए किया जाता है।

जीवन भर हम जिन व्यक्तियों के संपर्क में आते हैं, ईश्वर प्रेम का प्रकाश उन सबके प्रति प्रेम के रूप में भी प्रस्फुटित होता है। इसलिए ईश्वर प्रेम और समाज सेवा में कोई अंतर नहीं है। दोनों ही स्थितियों में आत्म सुख, आत्म विश्वास और आत्म कल्याण का उद्‌देश्य भगवान की प्रसन्नता होनी चाहिए। भगवान की प्रसन्नता का अर्थ ही है कि उस प्रेम में भय, कायरता, क्षणिक सुख का आभास न होकर शाश्वत प्रफुल्लता और प्रमोद होना चाहिए। ऐसा प्रेम कभी बंधनकारक या रुकने वाला नहीं होता। उसकी धाराएँ निरंतर जीवन को प्राणवान बनाती रहती हैं, वह मनुष्य ऊपर से चाहे कितना ही कठोर क्यों न दिखाई देता हो।

प्रेम योग का साधक उद्‌दाम भी होता है। इंद्रियों के आकर्षण फुसलाने से नहीं कठोरता से दमन किए जाते हैं और इसके लिए साहस की ही आवश्यकता होती है। जो आत्म दमन कर सकता है, यही सच्चा विजेता है। सच्चा विजेता ही सच्चा प्रेमी और ईश्वर का भक्त होता है। यह बात कुछ अटपटी-सी लगती है किंतु कर्मयोग के सच्चे साधक को कठोरता में भी भावनाशीलता का संपूर्ण आनंद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलता है। इसलिए उसे मोह की आवश्यकता नहीं होती, वरन् वह मोह के बीच में भी एक दिव्य प्रकाश की अनुभूति का आनंद लिया करता है।

मर्यादाओं के पालन में जो कठोरता है, उसमें प्रेम का, आत्मीयता का अभाव नहीं होता। अपनत्व तो संसार के कण-कण में विद्यमान है। ऐसा कौन-सा प्राणी है, ऐसा कौन-सा पदार्थ है जहाँ मैं नहीं हूँ? प्राणी-पशु, कीट-पतंग सभी के अंदर तो 'अहंभाव' से परमात्मा बैठा हुआ है, पर तो भी किसी के लिए वह बंधन तो नहीं है? वह बंधन मुक्त आनंद की स्थिति है, इसलिए वह किसी को आनंद से गिरायेगा क्यों? वह दया और करुणा का सागर है, लोगों को उससे वंचित रखेगा क्यों? लेकिन वह यह भी न चाहेगा कि एक जीव दूसरे जीव की आकांक्षाओं और मर्यादाओं पर छा जाए। संसार उसी का है, पर तो भी वह इतना दयालु है कि किसी पर अपनी उपस्थिति भी प्रकट नहीं करता। किंतु मर्यादाओं के मामले में वह कठोर और निपुण है। किसी भी दुष्कर्म को प्राणी उससे छिपाकर नहीं कर सकता। उसका प्रेम निष्काम है, इसलिए जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति और अपने जीव भाव को ब्राह्मीभाव में परिणत करने के लिए मनुष्य को भी उन्हीं नियमों का पालन करना अनिवार्य हो जाता है। अर्थात प्रेम करना तो आवश्यक है, पर उसमें कामनाओं का समावेश न होने देने के लिए उसे उतना ही कठोर भी होना आवश्यक है। उसके बिना प्रेम कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता।

प्रेम पृथ्वी की मिट्टी, सूर्य के कण और विश्व के कण-कण में व्याप्त परमाणुओं में छिपा हुआ स्पंदन है। वह स्वर्गीय है, वह मर्त्यभाव में भी अमृतत्व का संचार किया करता है, जड़ में भी चेतनता की अनुभूति कराया करता है। इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि अपनी साधना के अंतिम दिनों में महर्षि विश्वामित्र ने नदियों से बातचीत की थी। ऋग्वेद में ऐसे सूक्त हैं जिनके देवता नदी है और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टा ने उनसे बातचीत की है। उस वार्तालाप में और कुछ आधार भले ही न हो, पर उसमें समस्त जड़-चेतन जगत के प्रति आत्मारोपण का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

उस विज्ञान को समझने में भले ही किसी को देर लगे, भावनाओं में जड़ पदार्थों को भी चेतन कर देने की शक्ति है और प्रेम इन समस्त भावनाओं का मूल है। इसलिए यह कहना अत्युक्ति नहीं कि प्रेमी के लिए संसार में चेतन ही नहीं, जड़ भी इतने ही सुखदायक होते हैं। जड़ भी प्रेम के अधीन होकर नृत्य करते हैं। प्रेम के लिए सारा संसार तड़पता रहता है। जो उस तड़पन को समझकर लेने की नहीं, देने और निरन्तर देने की ही बात सोचता है सारा संसार उसके चरणों पर निवेदित हो जाता है।

प्रेम-संसार का सर्वोपरि आकर्षण

क्या रागी और क्या विरागी, सभी यह कहते पाए जाते हैं कि—"यह संसार मिथ्या है, भ्रम है, दु:खों का आगार है।" किंतु तब भी सभी जी रहे हैं। ऐसा भी नहीं कि लोग विवशता-पूर्वक जी रहे हैं। इच्छापूर्वक जी रहे हैं और जीने के लिए अधिक-से-अधिक चाहते हैं, सभी मरने से डरते हैं। कोई भी मरना नहीं चाहता।

दु:खों के बीच भी जीने की यह अभीप्सा प्रकट करती है कि संसार में अवश्य ही कोई ऐसा आकर्षण है जिसके लिए सभी लोग दु:ख उठाने में तत्पर हैं। देखा जा सकता है कि लोग सुंदर फल-फूलों को प्राप्त करने के लिए कटीले झाड़-झंखाड़ों में धँस जाते हैं। मधु के लिए मधुमक्खियों के डंक सहते हैं। मानिक-मोतियों के लिए भयंकर जंतुओं से भरे समुद्र में पैठ जाते हैं। वे फूलों, फलों, मधु और माणिक, मोतियों के लिए काँटों, मक्खियों और मगरमत्स्यों की जरा भी परवाह नहीं करते। उनकी चुभन, दंश और आकर्षण को साहसपूर्वक सह लेते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो इस दुःख-कष्टों से भरे संसार-सागर में ऐसा कौन-सा फल, मधु अथवा रत्न है, जिसके लिए मनुष्य दुःखों का भार ढोता हुआ खुशी-खुशी जीता चला जा रहा है और जब तक अवसर मिले जीने की इच्छा रखता है ? निश्चय ही संसार का वह फल, वह मधु और वह रत्न-प्रेम है, जिसके लिए मनुष्य जी रहा है और हर मूल्य पर जीना चाहता है। अब यह बात भिन्न है कि उनका अभीष्ट प्रेम सांसारिक है, वस्तु या पदार्थ के प्रति है, अथवा प्रेमस्वरूप परमात्मा के प्रति है। दिशाएँ दो हो सकती हैं। किंतु आस्था एक है और आकर्षण भी अलग-अलग नहीं है। इसी प्रेमस्वरूप आधार पर संसार ठहरा हुआ है। इसी के बल पर सारी विधि-व्यवस्था चल रही है। एक प्रेम ही संसार का सत्य और सार है।

प्रेम ही आनंद का आधार है और आनंद ही मनुष्य की जिज्ञासा है। इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए ही मनुष्य सारे कष्ट उठाता हुआ सुख मानता है। यदि यह जिज्ञासा पूर्ण हो जाए, उसे प्रेम का सच्चा रूप प्राप्त हो जाए तब इसके आनंद की सीमा कहाँ तक पहुँच जाएगी, इसका अनुमान कठिन है। इसे तो भुक्तभोगी ही जान सकते हैं।

जिनके हृदय में प्रेम का प्रकाश जगमगा उठता है, उनके जीवन में आनंद भर जाता है। इस हाड़ मांस से बने मानव शरीर में देवत्व के समावेश होने का आधार प्रेम ही है। प्रेम की प्रेरणा से साधारण मनुष्य उच्च से उच्चतर बनता चला जाता है। प्रेम मानव जीवन की सर्वोच्च प्रेरणा है। शेष सारी प्रेरणाएँ इस एक ही मूल प्रेरणा की आश्रित शाखा-प्रशाखा है। स्वाधीनता और सद्गति दिखाने वाली भावना एकमात्र प्रेम ही है। संसार की रचना और प्रेरणा का सारा तत्त्व यह प्रेम ही है। इसी से जीवन समृद्ध बनता, दुःख की निवृत्ति होती और परम लक्ष्य की प्राप्ति होती है। प्रेम परमात्मा रूप है, आनंद और उल्लास का आदि तथा अंतिम स्रोत है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम एक दिव्य तत्त्व है। इसके परिणाम भी सदैव तीनों काल में दिव्य ही होते हैं। आत्म-विश्वास, साहस, निष्ठा, लगन और आशा आदि के जीवंत भाव प्रेमामृत की सहज तरंगें हैं। जिस प्रकार पर्वतों पर संचित हिम कुछ काल में परिपाक होने पर जल के रूप में बह-बहकर धरती को सराबोर कर देता है, उसकी जलन, उसका ताप और उसकी नीरसता हर लेता है, उसी प्रकार हृदय में संचित प्रेम भी परिपाक के पश्चात् बहकर मनुष्य और मनुष्यता दोनों को आनंद, उल्लास और प्रसन्नता से ओत-प्रोत कर देता है। प्रेम का अभाव मनुष्य को नीरस, शिथिल, अतृप्त और कर्कश बना देता है, जिससे जीवन का सौंदर्य, सारा आकर्षण और सारा उत्साह समाप्त हो जाता है। जो प्रेम का आदान-प्रदान नहीं जानता वह निश्चय ही जीना नहीं चाहता। वास्तविक जीवन का लक्षण प्रेम ही है।

संसार अंधकार का घर कहा गया है। विषय-वासनाओं के आसुरी तत्त्व यहाँ पर मनुष्य को अंधकार की ओर ही प्रेरित करते रहते हैं। संसार की इन अंधकारपूर्ण प्रेरणाओं के बीच प्रेम ही एक ऐसा तत्त्व है जिसकी प्रेरणा प्रकाश की ओर अग्रसर करती है। प्रेम ही आत्मा का प्रकाश है। इसका अवलंबन लेकर जीवन पथ पर चलने वाले सत्पुरुष काँटों और कटुता से परिपूर्ण इस संसार को सहजानन्द की स्थिति के साथ पार कर जाते हैं। प्रेम का आश्रय परमात्मा का आश्रय है। इस स्थूल संसार को धारण करने वाली सत्ता प्रेम ही है। यही प्रेम ही तो आत्मा के रूप में जड़-चेतन में परिव्याप्त हो रहा है। व्यक्ति और समष्टि में आत्मा का यह प्रेम प्रकाश ही ईश्वर की मंगलमयी उपस्थिति का आभास करता है।

प्रेम का एक स्वरूप आत्मीयता भी है, जो कि मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति होती है। आत्मीयता की प्यास, प्रेम की आवश्यकता मनुष्य जीवन के लिए सहज-स्वाभाविक है। इसकी पूर्ति न होने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य एक ऐसा अभाव अनुभव करता है, जिसका कष्ट संसार के सारे दु:खों से अधिक यातनादायक होता है। बच्चा माँ से प्रेम चाहता है। पत्नी-पति से प्रेम चाहती है और पुरुष-नारी से प्रेम की कामना करता है। पड़ोसी-पड़ोसी से, राष्ट्र-राष्ट्रों से, मनुष्य-मनुष्यों से, यहाँ तक कि पशु और जड़ वस्तुएँ भी प्रेम और आत्मीयता की भूखी रहती हैं। प्रेम पाने पर पशु अपनी भंगिमाओं से और जड़ पदार्थ अपनी उपयोगिता के रूप के प्रेम का प्रतिपादन करते हैं। प्रेम का यह आदान-प्रदान रुक जाए तो संसार असहनीय रूप से नीरस, कटु और तप्त हो उठे। पदार्थ अनुपयोगी हो उठें और मनुष्य घृणा, क्रोध और द्वेष की भावना से आक्रांत हो अपनी विशेषता ही खो दें। चारों ओर ताप ही परिव्याप्त हो जाए। प्रेम जीवन की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति आदान-प्रदान के आधार पर होती ही रहनी चाहिए, तभी हम इस समस्त संसार के साथ विकास करते हुए अपने चरम लक्ष्य उस परमात्मा की ओर बढ़ सकेंगे जो आनंदानंद स्वरूप है, सत् है और चेतन है। प्रेम के आदान-प्रदान के बिना जीवन में सच्चा संतोष कदापि नहीं मिल सकता। मनुष्य आदि से अंत तक कलप-कलपकर जिएगा और तड़प-तड़पकर मर जाएगा।

प्रेम मनुष्यता का सबसे प्रधान लक्षण है और इसकी पहचान है त्याग अथवा उत्सर्ग। यों तो प्राय: सभी मनुष्य प्रेम का दावा करते हैं, पर यथार्थ बात यह है कि उनका अधिकांश प्रेम स्वार्थ से प्रेरित होता है। वे अपने 'स्व' या अपने 'अहं' की पूर्ति के लिए प्रेम का प्रदर्शन करते हैं और 'स्व' की तुष्टि हो जाने पर आँखें फेर लेते हैं। यह वह प्रेम नहीं है जिसे मनुष्यता का लक्षण कहा गया है। यह तो अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति का एक उपाय है, साधन है। इससे वह आध्यात्मिक भाव—वह ईश्वरीय आनंद जाग्रत नहीं हो सकता जो कि सच्चे प्रेम की उपलब्धि है और जिसको पाकर मानव जीवन कृतार्थ हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाँ सच्चा प्रेम है, आध्यात्मिक आत्मीयता है, वहाँ त्याग, उत्सर्ग और बलिदान की भावना होना अनिवार्य है। प्रेम में देना ही देना होता है, लेने की भावना को वहाँ अवसर नहीं रहता। लेन-देन लौकिक जीवन का साधारण नियम है। इसमें प्रेम शब्द का आरोप करना अन्याय है। प्रेम जैसे पवित्र तथा इच्छारहित ईश्वरीय भाव का अपमान करना है। प्रेम विशुद्ध बलिदान है। इसमें प्रेमी अपने प्रिय के लिए सब कुछ उत्सर्ग करके ही तृप्ति का अनुभव करता है। प्रेम में देना ही देना होता है, लेना कुछ नहीं। जहाँ पर परिवार, समाज, राष्ट्र और संसार के लिए निःस्वार्थ त्याग, निर्लेप बलिदान की भावना दिखलाई दे, वहाँ पर ही प्रेम का अनुमान करना चाहिए। जिसमें दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे डालने की भावना तो हो, पर उसके बदले में कुछ भी लेने का भाव न हो तो समझना चाहिए कि उस मनुष्य में सच्ची मनुष्यता का निवास है, वह धरती पर शरीर से देवता और अपनी आत्मा में परमात्मा है।

प्रेम संसार का स्थायी सत्य है। यों तो संसार के रूप में जो कुछ भी दिखलाई देता है, सब सत्य जैसा ही आभासित होता है, पर वह सत्य नहीं, सत्य का भ्रम मात्र है। आज देखते हैं कि हमारा एक परिवार है, स्त्री है, बच्चे हैं, हम स्वयं हैं। जमीन है, जायदाद है, धन-दौलत है, संपत्ति है, संपदा है। सब व्यवहार में आते हैं, सब सत्य जैसे भासित होते हैं। पर क्या यह स्थायी सत्य है? कारण आता है—परिस्थिति उपस्थित होती है तो जीवन की अवधि समाप्त हो जाती है, सब कुछ स्वप्न हो जाता है। परिस्थिति उत्पन्न होती है तो जमीन बिक जाती है, जो कुछ आज हमारा था कल दूसरे का हो जाता है। ऐसी अस्थाई परिवर्तनशील बातों को सत्य कैसे माना जा सकता है? सत्य वह है जो तीनों कालों में एक जैसा ही बना रहे। प्रेम ही केवल ऐसा सत्य है जो अपरिवर्तनशील और तीनों कालों में स्थिर बना रह सकता है। प्रिय के बिछुड़ जाने पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके प्रति रहने वाला प्रेम नहीं मरता। वह यथावत् बना रहता है। जमीन-जायदाद चली जाती है, पर उसके प्रति लगाव समाप्त नहीं होता, धन चला जाता है, पर उसके प्रति अभीप्सा बनी रहती है। प्रेम ही संसार का स्थिर तथा स्थायी सत्य है और सारी वस्तुएँ नश्वर तथा परिवर्तनशील हैं। ऐसे प्रेम की साधना छोड़कर लौकिकता की आराधना करना सत्य को छोड़ कर उसकी छाया पकड़ने की तरह अबुद्धिमत्तापूर्ण है।

प्रेम का ग्रहण परमात्मा की प्राप्ति है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही महात्मा ईसा ने कहा है—"हमें एक-दूसरे को प्रेम करना चाहिए, क्योंकि प्रेम ही परमात्मा है। ईश्वर को वही जानता है जो प्रेम करता है।" प्रेम परमात्मा की उपासना का भावनात्मक रूप है। जो आत्मा को, परिवार को, राष्ट्र और समाज को प्रेम करता है, सारे मनुष्यों, यहाँ तक कि समस्त जड़-चेतन में आत्मीयता का सच्चा भाव रखता है, वह परमात्मा का सच्चा भक्त है। प्रेम हृदय की उस पवित्र भावना का वाचिक रूप है, जो अद्वैत का बोध कराती है। उसे 'मैं' और 'तुम' का, अपने-पराये का बिलगाव नहीं रहता। समष्टिगत विशाल भावना का निःस्वार्थ परिपाक प्रेम है, जिसकी आराधना मानव को महामानव और पुरुष को पुरुषोत्तम बना देती है। अस्तु इसी साध्य और महानता की उपासना श्रेयस्कर है, कल्याण तथा मंगलकारी है।

प्रेम और उसकी शक्ति

प्रेम, आत्मीयता-मनुष्य की सहज स्वाभाविक वृत्तियाँ हैं, जिनके व्यक्त न होने पर मनुष्य जीवन में एक अभाव सा अनुभव करता है। लीबमैन ने लिखा है—"अपने पड़ोसी से मैत्री भाव रखना, उससे प्रेम करना, स्वयं से प्रेम करने की आवश्यक सीढ़ी है।" दूसरों से प्रेम-प्राप्ति की ही नहीं, वरन् अपना प्रेम दूसरों को देने को भी प्रबल वृत्ति मनुष्य में काम करती है। जब तक इसकी पूर्ति नहीं होती,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य को पूर्णतः संतोष, शांति प्राप्त नहीं होती, न उसका आंतरिक विकास होता है।

जीवन में प्रेम एक महत्त्वपूर्ण स्वाभाविक आवश्यकता है। मनुष्य को जब किसी के प्रेम की प्राप्ति नहीं होती, तब तक उसे जीवन में कुछ अभाव और अशांति का अनुभव होता है। प्रेम प्राप्ति की भूख बचपन में अधिक पाई जाती है। जिन बच्चों को अपने माँ-बाप का प्रेम नहीं मिलता, उनका व्यक्तित्व पुष्ट नहीं होता। कई मानसिक रोगों का कारण तो बचपन में माँ-बाप के प्यार का अभाव होना ही होता है। चिंता, घृणा, क्रोध, हीनता की भावना बहुत कुछ इसी कारणवश पैदा हो जाती है। दूसरों के स्नेह-प्रेम से वंचित व्यक्तियों को संसार निर्दयी, क्रूर और क्लेशमय नजर आता है।

प्रेम प्राप्ति की तरह ही मनुष्य में प्रेम देने की भावना भी होती है। प्रेम लेने की भावना बचपन की निशानी है। प्रेम देने की भावना पुष्ट व्यक्तित्व और प्रौढ़ता का आधार है। प्रेम लेने की भावना स्वार्थ, परावलंबन का रूप है, तो प्रेम देना परमार्थ और स्वालंबन है।

प्रेम देने की भावना की अभिव्यक्ति करने के लिए दूसरों की सेवा-सहानुभूति, दूसरों के लिए उत्सर्ग का व्यवहारिक मार्ग अपनाना पड़ता है और इससे एक सुखद शांति, प्रसन्नता, संतोष, की अनुभूति होती है। दूसरों की कठिनाइयाँ दूर करने के प्रयत्न में अपनी कठिनाइयाँ स्वयं, स्वतः दूर हो जाती है। दूसरों से आत्मीयता रखने पर आत्म-प्रेम, आत्म मैत्री सहज ही पैदा हो जाती है। मन की समस्त शक्तियाँ केंद्रीभूत होकर काम करने लगती हैं। इस तरह प्रेम-मैत्री एक सहज और स्वाभाविक आवश्यक वृत्ति है जिनसे मनुष्य को विकास,उन्नति,आत्मसंतोष की प्राप्ति होती है।

छोटा बच्चा सदैव दूसरों का प्यार चाहता है। चाह या स्वार्थ बचपन की स्थिति है, जिसमें दूसरों से सुख, आराम, प्रेम की आकांक्षा रहती है। यह वृत्ति अधिक उम्र वालों में भी हो सकती है। बचपन से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगे की विकसित भावना है—अपने आपके सुखोपभोग-आवश्यक पदार्थों का दूसरों के लिए त्याग करना। यह प्रेम देने की वृत्ति है। जिसमें त्याग है, कष्ट सहिष्णुता है, यही आत्म विकास की सच्ची कसौटी है। त्याग से प्रेम के स्वरूप का निर्णय होता है। इस तरह प्रेम स्वार्थ से परमार्थ की साधना है। जो प्रेम के लिए-परमार्थ के लिए अपने आपको घुला देता है, वही आत्म विकास की उच्च स्थिति प्राप्त करता है।

यज्ञाग्नि के दो स्वरूप माने गये हैं, एक स्वाहा और दूसरा "स्वधा"—स्वाहा का अर्थ है—आत्माहुति, देना, त्याग, उत्सर्ग करना और स्वधा के मानी है आत्म—धारण करना। दोनों संयुक्त स्वरूप में यज्ञाग्नि प्रकट होती है। प्रेम की आकांक्षा, इच्छा, प्रेम प्राप्ति का भाव, आत्म धारण करने के लिए है। प्रेम धारण नहीं किया जाएगा तो फिर दिया कहाँ से जाएगा। प्रेम प्राप्ति की लालसा सहज रूप में प्रेम-यज्ञ का प्रारंभिक कृत्य है। आम का पौधा सिंचाई सुरक्षा, खाद-सेवा आदि के रूप में जब स्वधा शक्ति प्राप्त करता है तभी उस शक्ति को कई गुना असंख्यों रूपों में उत्सर्ग कर सकता है। स्त्री अपने पति का अजस्र प्रेम प्राप्त करके ही उसे बालकों को दे सकने में समर्थ होती है। जिसे किसी का प्रेम नहीं मिला, वह दूसरे को भी शायद ही कुछ दे सके।

स्वधा शक्ति की प्राप्ति के अनंतर मनुष्य के भावों का विकास होता है और वह अपने आप को स्वाहा करने लगता है; त्याग, आत्मोत्सर्ग करता है और स्वार्थ की जगह परमार्थ-त्याग स्थान ले लेता है। जिससे प्रेम किया जाता है उसके लिए त्याग करने की इच्छा बढ़ जाती है। मनुष्य कष्ट उठाने लगता है। तब प्रेम का व्यावहारिक स्वरूप त्याग ही हो जाता है। आत्मोत्सर्ग, बलिदान की स्थिति के अनुसार ही प्रेम का सत्य स्वरूप विकसित होने लगता है। जब मनुष्य अपने आप को पूर्णतः स्वाहा कर देता है, तब एकमात्र प्रेम की सत्ता ही सर्वत्र शेष रह जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाँ प्रतिदान की आकांक्षा है, वहाँ प्रेम नहीं रहता। प्रेम केवल उत्सर्ग करना ही जानता है। जहाँ बदले में लेने की भावना है, वहाँ प्रेम नहीं स्वार्थ है। उससे मनुष्य की आत्मा को परितोष प्राप्त नहीं होता। मनुष्य के आंतरिक-बाह्य जीवन में अशांति, क्लेश, असंतोष ही बना रहेगा। स्त्री-पुरुष, माता-पिता और संतान, मित्र-मित्र, भक्त और भगवान के बीच जब स्वार्थमय प्रेम का आचरण होने लगता है तो सदैव विपरीत परिणाम ही मिलते हैं। गृहस्थ जीवन की अशांति, कलह, राग, द्वेष, मनुष्य-मनुष्य के बीच की धोखेबाजी, चालाकी, माता-पिता के प्रति अनुशासनहीनता, क्रूरता, भगवान के प्रति नास्तिकता, अविश्वास, मनुष्य के बनावटी प्रेम की आड़ में काम कर रहे स्वार्थ लोभ, मोह, आदि के ही परिणाम हैं—प्रेम के माध्यम से पुरस्कार प्राप्ति की लालसा के परिणाम हैं।

प्रेम दिव्य-तत्त्व है। इसके परिणाम सदैव दिव्य ही मिलते हैं। किंतु वह तब जब कि मनुष्य पुरस्कार की कामना से रहित होकर केवल प्रेम के लिए त्याग, बलिदान, आत्मोत्सर्ग करता है। प्रेम का पुरस्कार तो स्वतः प्राप्त होता है और वह है आत्मसंतोष, शांति प्रसन्नता, जीवन में उत्साह आदि। प्रेम तो मनुष्य की चेतना का विकास कर उसे विश्व चेतना में प्रतिष्ठित करता है।

प्रेम प्रेरित त्याग के विचारों में एकाग्रता पैदा होती है। मानसिक स्थिरता से पूर्ण तादात्म्य और इससे आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति होती है। भक्ति योग का तत्त्वज्ञान हृदयंगम किया जाना ईश्वरप्राप्ति के लिए आवश्यक मार्ग है।

जब किसी काम से प्रेम नहीं होता तो उसमें कर्तव्य बुद्धि नहीं रहती। मनुष्य कई भूलें करता है, काम को बिगाड़ता है। वह उसे भार स्वरूप लगता है—दुखद बंधन जैसा। मनुष्य अपने काम से जी चुराने लगता है। प्रेम की शक्ति से ही कर्तव्य पूर्ण होता है। इसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभाव में जबरन कार्य करने पर मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रोग सताने लगते हैं।

प्रेम के भाव में कठिन-से-कठिन काम भी सरल बन जाते हैं। उनमें कठिनाइयाँ होते हुए भी फूल चुनने जैसी सरलता महसूस होती है। प्रेम की अवस्था में कष्ट नाम की कोई स्थिति ही नहीं। प्रेम की धुन में कर्तापन और कर्मफल का ध्यान नहीं रहने से यह योगी की-सी स्थिति बन जाती है। केवल कर्तव्य ही सामने रहता है।

कर्तव्य के अभिमान और फल की आकांक्षा के साथ ही क्षमताओं का विकास रुक जाता है। यही कारण है कि सरकारी नौकर को दफ्तर का चार-छह घंटे का काम ही बोर कर देता है, जबकि देश प्रेमी, समाजसेवी, सेवानिष्ठ लोग अठारह घंटे काम करके भी नहीं थकते। प्रेम एक व्यापक तत्त्व है। उसके साथ ही अनंत शक्ति-सामर्थ रहती है। उससे साधारण व्यक्ति भी महामानव बन जाता है।

प्रेम से प्रसन्नता और सहज आनंद मिलता है, जिसमें शक्तियों का उद्रेक उसी तरह होता है जैसे पर्वतराज हिमालय अपने हृदय के अवयवों को पिघलाकर अनंत नदी-स्रोत बहा देता है। आत्मविश्वास, निष्ठा, लगन, आशा की प्रबल हिलोरें मनुष्य के हृदय में उठने लगती हैं, जो एक छोटे-से पुतले को तरंगित कर ऊँचा उठाती हैं। प्रेम के अभाव में मनुष्य थका-थका सा रहता है। काम में मन नहीं लगता। फिर किसी भी क्षेत्र में सफलता मिलना दूर की बात है।

प्रेम गिरे हुए व्यक्तियों को उठाता है। क्योंकि गिरे हुए व्यक्ति वे होते हैं, जिनके जीवन में प्रेम, स्नेह का अभाव रहा है। घर में परिजनों के प्रेम से वंचित लोग व्यसनी, परस्त्रीगामी, चरित्रहीन और पतित हो जाते हैं। पति अथवा सास-ससुर के अत्याचार से पीड़ित स्त्री घर से बाहर जाकर प्रेम की चाह करती है, जिससे उसे भ्रष्ट अथवा दूषित कहा जाता है। माँ-बाप के प्रेम से वंचित बच्चे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निराशावादी, क्रोधी, ईर्ष्यालु, घृणा करने वाले, अन्यमनस्क, चरित्रहीन बन जाते हैं। लोगों में फैली हुई बहुत बुराइयों का मुख्य कारण उन्हें जीवन में दूसरों के स्नेह-प्रेम से वंचित होना ही होता है। कोई भी प्रेममय व्यक्ति इन लोगों को अपना प्रेम देकर फिर से सुधार सकता है। हमारे ऋषियों में महात्मा बुद्ध, सुकरात, ईसा, मुहम्मद, रामकृष्ण आदि ने अनेकों पतितों का अपना निश्छल सहज प्रेम देकर उद्धार किया।

जब मनुष्य का दृष्टिकोण प्रेममय होता है तो उसे दूसरों के दुर्गुण न दिखाई देकर सद्गुण दिखाई देते हैं। इससे मनुष्य के दोषदर्शन का दुर्गुण दूर हो जाता है। दूसरों के दुर्गुण न देखने से आलोचना में भी मन नहीं लगता। हिंसा, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, डाह की भावनाएँ प्रेम से धुल जाती हैं। प्रेम में हिंसा नहीं, करुणा का निवास होता है। प्रेममय व्यक्ति अपना अहित करने वालों के प्रति भी दया, क्षमा, सहिष्णुता की भावना रखता है। उनके सुधार के लिए शुभकामना करता है।

मनुष्य का जैसा दृष्टिकोण, चिंतन होता है, वैसा ही उसके लिए यह संसार दिखाई देता है। मनुष्य जब दूसरों से प्रेम करता है तो दूसरे भी उसे प्रेम करते हैं। उसके प्रति सहानुभूति रखते हैं। संसार कुएँ की आवाज है। मनुष्य संसार के प्रति जैसा आचरण करेगा, संसार से उसे वैसा ही प्रत्युत्तर मिलेगा। प्रेम से ही प्रेम मिलता है। प्रेम-मैत्री के विचार पहले व्यक्तिगत जीवन में ही आत्म प्रेम, आत्म प्रसाद के रूप में मिल जाते हैं। इतना ही नहीं, प्रेम एकात्मकता पैदा करता है। देखा जाता है कि जिन व्यक्तियों में परस्पर प्रेम होता है उनके रंग, रूप, स्वभाव, विचार, धीरे-धीरे एक से बन जाते हैं।

प्रेम एक तरह की मानसिक स्थिति है। इसका प्रवाह जिस ओर होगा उसी तरह के परिणाम भी प्राप्त होंगे। प्रेम का सहज और सरल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रवाह नैसर्गिक कार्यों में होता है। पानी सदैव ऊपर से नीचे की ओर बहता है, किंतु किसी पेड़ की जड़ों द्वारा सोख लिया जाता है तो वही मधुर फलों, सुंदर फूल और शीतल छाया में परिवर्तित हो जाता है। सांसारिक प्रवाह में प्रेम शक्ति के लगे रहने पर मनुष्य का जीवन पाशविक परिधियों में घिरा रहता है। प्रेम के प्रवाह का संचालन विवेक द्वारा होने पर वह जीवन में सत्यं शिवम् सुंदरम् की प्राप्ति कराता है। जीवन विकास की ओर अग्रसर होता है। बार-बार अपने आदर्श के प्रति बाह्य और आंतरिक क्षेत्र में प्रेम शक्ति का अभ्यास करने पर वैसा ही स्थायी भाव बन जाता है। फिर उसी की प्रेरणा से ज़ीवन का संचालन होने लगता है। इस तरह के स्थायी भाव प्रारंभ में अधिक भी हो सकते हैं, किंतु उन सबमें समन्वय होना आवश्यक है। उच्च श्रेणी के श्रेष्ठ भावों की दिशा भी यदि अलग-अलग-अलग होगी तो वे आपस में टकरायेंगे और प्रेम की शक्ति नष्ट होगी।

प्रेम समस्त सत्-प्रेरणाओं का स्त्रोत

जीवन में जिन व्यक्तियों ने विशेष विकास और विस्तार पाया है, उसका मूल आधार अधिकांशतः प्रेम ही रहा है। बिना प्रेम के किसी क्षेत्र में विकास होना संभव नहीं, फिर वह क्षेत्र लौकिक रहा हो अथवा आध्यात्मिक।

दैवी भाव होने से प्रेम अपने प्रकाश में मोह, लोभ, स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आदि के अँधेरे तथा कलुषित भाव नहीं आने देता है। बाधाओं का निराकरण होना ही विकास की परिस्थिति है। जीवन एक गतिशील प्रवाह है। इसे जिधर जिस दिशा में लगा दिया जाता है, यह उसी दिशा में बहता और बढ़ता चला जाता है। प्रवाह के पथ में अवरोधों का अभाव उसके बढ़ने में सहायक होता है। प्रेम एक ऐसा गुण है, जो मनुष्य के आंतरिक अवरोधों के साथ-साथ बाह्य अवरोधों को भी दूर करता है। असहयोग, असहायता और प्रवंचना जैसी प्रतिकूलताएँ प्रेम से परिपूर्ण व्यक्ति के सामने नहीं आतीं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि संयोगवश आती भी हैं, तो वे प्रेम की वशीकरण शक्ति के प्रभाव से शीघ्र ही अनुकूल हो जाती है, जिससे मनुष्य जीवन का प्रवाह अबाध एवं अविच्छिन्न गति से बहता और बढ़ता हुआ अपने ध्येय को प्राप्त कर लेता है।

प्रेम में एक आलौकिक शक्ति रहा करती है। ऐसी शक्ति जिसकी तुलना, बाहु-बल, धन बल अथवा बुद्धि बल से नहीं की जा सकती। जिस कार्य को कोई बड़ा सम्राट् अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर नहीं कर सकता, उसे एक प्रेम परिप्लावित संत सहज ही में कर सकता है। जो द्वेष, जो विग्रह और जो संघर्ष वर्षों के शस्त्र प्रयत्न द्वारा नहीं मिटाए जा सकते, वे प्रेमाधारित संधि द्वारा शीघ्र ही प्रशमन किए जा सकते हैं। दो व्यक्ति अथवा दो राष्ट्र जब मोह, भ्रम के कारण बहुत समय तक संघर्ष में लगे रहने के बाद युद्ध की विभीषिका और उसकी निरर्थकता का अनुभव कर लेते हैं, तब प्रेमपूर्ण पारस्परिकता का सहारा लेकर समस्याओं का निबटारा किया करते हैं। अभय और प्रेम का प्रादुर्भाव होते ही द्वेष मिट जाता है, दृष्टिकोण बदल जाता है और संधि की संभावनाएँ उन्मुक्त हो जाती हैं। प्रेम पर आधारित संधियों में ही स्थायित्व होता है। नहीं तो छलों, विवशताओं और स्वार्थों पर निर्भर मित्रता शीघ्र ही अस्तित्वहीन होकर संघर्ष की पुनरावृत्ति कर देती है।

हृदय की निष्कलंक निष्ठा का दूसरा नाम प्रेम है। निष्ठा ही वह तत्त्व है, जिसके आधार पर संसार का विकास होता चला आया है। आगे भी जो विकास होना है, उसका आधार भी यह निष्ठा सहित कर्तव्यों में वास्तविक जीवन का संयोग ही होगा। व्यक्ति की उन्नति का भी आधार यह निष्ठा ही होती है। अनिष्ठावान व्यक्ति का हृदय आलस्य, अरुचि और अकर्तृत्व के दूषित भावों से उसी प्रकार भर जाता है जैसे कोई पुराने भग्नावशेष धूल, मिट्टी और घास-फूस से आच्छन्न हो जाते हैं। विकास अथवा सफलता के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए यह प्रतिकूल स्थिति है, जिसमें विकास की आशा नहीं की जा सकती। इसके विपरीत जब आशा, कर्मठता, उत्साह एवं स्फूर्ति की स्थिति प्राप्त होती है तो मनुष्य जाने, अनजाने दोनों तरह से लक्ष्य की ओर स्वतः ही बढ़ता जाता है। यह प्रेरणापूर्ण अवस्था एकमात्र निष्कलंक निष्ठा से ही पाई जा सकती है।

भगवान ने गीता में जिस निष्काम कर्मयोग का निर्देश किया है, उसका मुख्य तात्पर्य निष्कलंक निष्ठा से ही है। कामनाओं के साथ जिन कर्तव्यों का आचरण किया जाता है, उनमें कुशलता की प्राप्ति नहीं होती। अस्पताल का एक नौकर व परमार्थ भाव वाला एक जन सेवक, दोनों ही दूसरों की परिचर्या किया करते हैं, किंतु जो दक्षता और जो प्रभाव जन सेवक की सेवा में रहता है, वह नौकरी मात्र का भाव रखने वाले कर्मचारी की सेवा में नहीं होता। इसका कारण यही है कि नौकर का उस काम में अपना स्वार्थ रहता है, कार्य के प्रति निष्ठा विवशता से बोझिल रहा करती है। वह अपने कर्तव्य का पालन करता तो है किंतु किसी यंत्र की तरह। उसके उस कर्तव्य में प्रेम भाव का अभाव रहता है। कर्त्तव्य के प्रति जब तक निष्काम भाव का विकास नहीं होता, तब तक उसमें अपेक्षित कुशलता का भी समावेश नहीं होने पाता। विशुद्ध कर्तव्य भावना से किए जाने वाले कर्मों के प्रति मनुष्य का वास्तविक प्रेम जुड़ जाने से उसमें निष्ठा का भाव आप से आप आ जाया करता है, जिसके कारण सारे काम कुशलतापूर्वक संपादित होते चले जाते हैं।

मानव जीवन का संचालन जिस प्रेरणा द्वारा होता है, वह प्रेरणा प्रेम ही है। पवित्र होने के कारण प्रेम की प्रेरणा मनुष्य को ऊर्ध्व दिशाओं में परिचालित किया करती है। प्रेम में आडंबर, प्रवंचना अथवा छल-कपट का भाव न रहने से मनुष्य की जीवन गति स्वभावतः परमार्थ की दिशाओं की ओर उन्मुख होती रहती है। जो सौभाग्यवान सत्पुरुष निःस्वार्थ प्रेम की प्रेरणा से परिचालित होते हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे इस जीवन में सुख-संतोष पाकर परलोक अथवा पारलौकिक जीवन में सद्गति के अधिकारी बना करते हैं। उन्हें प्रेम के प्रसाद द्वारा उत्कृष्ट और दैवी गतियाँ प्राप्त होती हैं। आत्मा से उद्भूत प्रेरणा मनुष्य को परमात्मा के प्रति जागरूक बनाती है तथापि मनुष्य की आत्मा भी पुण्य प्रेरणा का स्रोत बन तभी पाती है, जब उसको निःस्वार्थ और निष्कलंक प्रेम द्वारा कोमल, करुण और संवेदनशील बना लिया जाता है।

न केवल प्रेम प्रेरणा ही प्रेम मनुष्य जीवन की स्वाभाविक आवश्यकता है, वरन् इस आवश्यकता की पूर्ति हुए बिना जीवन जड़, अशांत, असंतुष्ट और नीरस बना रहता है। जीवमात्र प्रेम के आदान-प्रदान की सरल प्रक्रिया के आधार पर ही तो, इस संकट और आपदाओं से भरे संसार में सुखपूर्वक जीवन जीते हुए चला जाता है। जीवन में जब तक प्रेम की प्राप्ति नहीं होती, एक अभाव, एक अशांति और एक कुंठा का अरुचिकर अनुभव होता रहता है और मनुष्य शीघ्र ही जीवन से छुटकारा पाने की सोचने लगता है। जिन बच्चों को अभिभावकों का प्रेम नहीं मिलता, वे प्रारंभ से ही क्रोध, द्वेष, कर्कशता और कठोरता के आसुरी भावों से आक्रांत होने लगते हैं। उनका शरीर और मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। जिन पुरुषों को प्रेम नहीं मिल पाता उनके अपराधी बन जाने की आशंका रहती है।

प्रेम के अभाव में अधिकांश लोग समाज के विरोधी और विध्वसंक बन जाते हैं। मनुष्य के प्रच्छन्न आसुरी भावों का शमन प्रेम द्वारा ही होना संभव होता है। समाज में शांति और व्यवस्था बनाए रहने के लिए जहाँ राजदंड की आवश्यकता है, वहाँ पारस्परिक प्रेम भी कुछ कम अपेक्षित नहीं होता। संसार के प्रायः सभी समाजों में राजदंड की व्यवस्था रहती है तथापि उनमें अपराध और अपकर्म करने वाले उसकी शांति को क्षति पहुँचाते ही रहते हैं। इसका कारण प्रेम का अभाव ही होता है। यदि सभी व्यक्तियों को अपने पूरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज से प्रेम हो, समाज का सुख-दुःख, विकास, हानि को वे अपनी ही हानि-लाभ समझें तो समष्टि रूप में सद्भावों की एक बड़ी सीमा तक वृद्धि हो सकती है।

पशु-पक्षी आदि मनुष्येतर प्राणियों में अपने-अपने समूह के प्रति एक नैसर्गिक प्रेम होता है। इसी प्रेम के आधार पर कोई राज्य व्यवस्था अथवा दंड न होने पर भी उनमें कदाचित् ही सामूहिक अशांति और अव्यवस्था आने पाती है। अपराधी और अपकर्म का कारण मनुष्य का आसुरी भाव ही होता है, प्रेम की पावन प्रेरणा से उसका निराकरण किया जा सकना असंभव नहीं है।

जिस प्रकार मनुष्य की आत्मा में प्रेम पाने की प्यास रहती है, उसी प्रकार उसकी आत्मा प्रेम प्रदान करने के लिए भी व्याकुल रहती है। जिसका प्रेम उसके अंतःकरण में बंद पड़ा रहता है और अभिव्यक्ति का अवसर नहीं पाता, उस मनुष्य का व्यक्तित्व भी पूरी तरह से पुष्ट और विकसित नहीं होने पाता, उसके जीवन प्रवाह की गति अवांछित दिशा में मुड़ जाने की आशंका बनी रहती है। जिस प्रकार पानी, अग्नि, वायु का आवेग मार्ग न पाने से विस्फोट को जन्म दे देता है, उसी प्रकार मनुष्य के अंतःकरण में बंदी प्रेम का आवेग भी ध्वंसक बन सकता है। मनुष्य को प्रेम स्वीकार करना ही चाहिए। प्रेम का आदान-प्रदान संसार की एक अनिवार्य आवश्यकता है, मानव कल्याण का संपादन करने के लिए जिसकी पूर्ति की जानी चाहिए।

बहुत बार लोग इस शिकायत के आधार पर विपथगामी बन जाया करते हैं कि उन्हें न तो प्रेम ही मिला और न उनका प्रेम स्वीकार ही किया गया। ऐसे असफल व्यक्ति यदि ईमानदारी से अपने अंतःकरण की खोज करें, तो उन्हें पता चल जाए कि उनकी शिकायत समीचीन नहीं है अथवा उनकी प्रेम भावना में कोई दोष रहा होगा। प्रेम देने की भावना में जब किसी प्रच्छन्न नीति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समावेश रहता है, तब वह अमृत विष की तरह लोगों को अग्राह्य बन जाया करता है और प्रेम पाने की लालसा में निहित लाभ का भाव लोगों को विमुख बना देता है। निःस्वार्थ और निष्कलंक भाव ही प्रेम के आदान-प्रदान का सच्चा और पवित्र आधार है। इसके अभाव में यह स्वर्गीय विनिमय नारकीय विभीषिका के रूप में परिवर्तित हो जाया करता है।

सच्ची अद्वैत भावना ही प्रेम का वास्तविक स्वरूप है। मनुष्य समस्त संसार को अपना स्वरूप मानकर प्रेम प्रदान में विशुद्ध बलिदान का भाव रखे, तो कोई कारण नहीं कि उसका वह पवित्र प्रेम स्वीकार न किया जाए। प्रेम देने वाले को प्रेम मिलना भी स्वाभाविक होता है। लिया हुआ प्रेम प्रतिध्वनि और प्रतिभास की तरह ही वापस आकर अपने मूल-स्रोत मनुष्य के अंतःकरण को सुख-शांति से परिपूर्ण बना दिया करता है।

लोग दूसरों को प्रेम करते हैं किंतु अधिकांशतः स्वार्थवश ही करते हैं और इसी स्वार्थ-भावना के कारण ही प्रेम अपनी दिव्य सिद्धियों के साथ फलीभूत नहीं हो पाता। अपने से, अपने समाज, देश और संसार से प्रेम कीजिए, पर निःस्वार्थ और निष्कलंक भाव से। तभी यह शक्ति, संबल, सुख-शांति, विकास और पुष्टि का हेतु बन सकेगा अन्यथा एक विकार के समान अवांछित प्रेरणा से जीवन का संचालन करता रहेगा।

प्रेम ईश्वर रूप है। उसकी साधना उसी भाव से करनी चाहिए। स्वार्थ के निकृष्ट और निम्न धरातल पर उतर कर प्रेम की अभिव्यक्ति करना एक पाप है। क्योंकि इससे प्रवंचना एवं प्रतारणा को प्रश्रय मिलता रहता है। जिस मनुष्य के हृदय में प्राणिमात्र के प्रति निष्काम प्रेम का विकास हो जाता है, वह मनुष्य की स्थिति से दैवी स्थिति में जा पहुँचता है। इसी उपलब्धि के हेतु ही तो भगवान ने गीता (६.२९) में स्पष्ट निर्देश किया है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वभूतस्थमात्मनं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योग युक्तात्मा सर्वत्र समदर्शिनः ॥

सभी भूत प्राणियों में एक ही आत्मा समाई हुई है, इसलिए सभी को समभाव से देखते हुए सभी के साथ प्रेम करना चाहिए।

प्रेम जगत् का सार और कुछ सार नहीं

जीवन अविभक्त है, देखने में लगता है—जीवों के शरीर उनकी आकृतियाँ भिन्न हैं, पर वे सब एक ही प्रकृति-मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु और आकाश के पुंजीकृत रूप हैं। देखने में लगता है कि उसकी लालसाएँ, आकांक्षाएँ और आवश्यकताएँ अलग-अलग हैं, पर वह सब एक ही इच्छा शक्ति, विचारशक्ति, संकल्पशक्ति के नाना रूप हैं। इस भिन्नता को स्थूल दृष्टि से सत्य मान लेने के कारण ही शाश्वत सौंदर्य नष्ट हो चुका है। हमारी अंतर्वाणी पूछती है—जब संपूर्ण चेतना एक ही शक्ति का अंश है तो परस्पर प्रेम का आदान-प्रदान क्यों नहीं कर सकती है? प्रेम का अभाव ही क्या हमारे दुःख का कारण नहीं?

प्रेम से उन्नत कोई संपत्ति नहीं, प्रेम से उन्नत कोई सद्गुण नहीं। प्रेम ही सत्य रूप में प्रकट हुआ धर्म और परमेश्वर का व्यक्त प्रकाश है। जिसने प्रेम का रसास्वादन न किया उसका सारा जीवन बेकार है।

ईश्वर को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक जिज्ञासु को प्रेम की उपासना करनी पड़ेगी। उसे अपने आपसे—परिवार, पत्नी और बच्चों से—पड़ोसी, देश और विश्व से—सृष्टि के प्राणिमात्र से-उतना ही घनिष्ठ प्रेम करना पड़ेगा जितना वह परमात्मा को प्रेमास्पद मानता है। भगवान प्रेम में जीवित और प्रेम में ही विराजते हैं, प्रेम की साधना किए बिना कोई उन्हें पा नहीं सकता।

प्रेम की शक्ति अनंत और उसकी गहराई अपरिमेय है। वन्य पशु बड़े खूँख्वार होते हैं, शस्त्र से भी वे भयभीत नहीं होते, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम की चाह उन्हें इतना प्रेममय कर देती है कि एक छोटा-सा व्यक्ति भी हिंसक सिंह को साध लेता है। प्रेम की प्यास कब बुझे, सारा संसार इस एक ही आकांक्षा के लिए जीवित है। बार-बार मरता है वह और इस आशा से फिर-फिर जन्म लेता है कि उसे कोई प्यार दे, निश्छल अंतःकरण से प्रेम देकर अपना दास बना ले। शत्रु भी प्रेम करने लगे, तो वह उसके लिए भी हृदय के द्वार खोल देता है। प्रेम जीवन की सबसे बड़ी सिद्धि है। जो सुख और शांति के लिए साधनों में भटकते हैं, वह भी अंत में प्रेम में ही दिव्य-आनंद की अनुभूति करते हैं । एक बार प्रेम का प्याला पी लिया जिसने, उसके लिए भौतिक संपदाओं का क्या मोह? प्रेम जीवन का सार है, सबसे बड़ी शक्ति है। आत्मा उसे ही प्राप्त और विकसित करने के लिए मनुष्य शरीर में जन्मा है। धिक्कार है कि फिर भी मनुष्य वासनाओं और कामनाओं की भूल में प्रेम जैसे दिव्य तत्त्व से संबंध विच्छेद कर अनंत सुख प्राप्ति के पथ से भ्रष्ट हो जाता है।

पदार्थ में जो सुख है वह अपना अंतःकरण उसमें प्रतिरोपित हो जाने, उससे प्रेम हो जाने के कारण है। प्रेम ही सुखद और प्रेम ही लक्ष्य है। फिर वस्तुओं को क्यों ढूँढ़ा जाए ? क्यों न प्रेम का दीपक जलाकर अंतःकरण आलोकित किया जाए?

प्रेम का अमृत और उसकी उपलब्धि साधना

प्रेम-तत्त्व को ज्ञानियों ने अमृत की संज्ञा दी है। निःसंदेह प्रेम तीनों प्रकार से अमृत ही है। यह स्वयं अमर होता है। जिसकी आत्मा में यह आविर्भूत होता है, उसे अमर अनुभूति सहज ही प्रदान करता है। प्रेम अमृत अर्थात अमर होता है। यह तत्त्व न तो कभी मरता है, न नष्ट होता है और न इसमें परिवर्तन का विकार उत्पन्न होता है। एक बार उत्पन्न होकर यह सर्वदा बना रहता है। संसार की हर वस्तु, अवस्था, विचार, परिस्थितियाँ, विश्वास, धारणाएँ, मान्यताएँ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रथाएँ यहाँ तक कि मनुष्य और शरीर बदल जाते हैं, किंतु प्रेम अपने पूर्णरूप में सदैव अपरिवर्तनशील रहता है। यही इसकी अमरता है। प्रेम अमृत है, स्वयं अमर है।

प्रेम न स्वयं ही अमृत है, बल्कि जिसकी आत्मा में इसका आविर्भाव होता है, उसे भी अमर बना देता है। प्रेम की पूर्णता प्राप्त किए बिना जिस प्रेममय को नियति के अधीन शरीर त्याग करना पड़ता है, वह पुनः शरीर धारण कर उसी स्थान से अपनी प्रेम-साधना को आगे बढ़ाता है। अवधि पूरी होने पर नियति उसका एक शरीर तो ले सकती है, किंतु साधना पूरी करने के लिए उसका नया शरीर धारण करना वर्जित नहीं कर सकती। साधना के लिए एक ही जीवात्मा की यह शरीर परंपरा अमरता का ही तो लक्षण है। उपरांत जब उसकी प्रेम-साधना अपनी पूर्णता को प्राप्त होती है, तब तो प्रेमी जीवन-मरण की पुनरावृत्ति से ही मुक्त हो जाता है और मोक्ष नामक उस पद को प्राप्त कर लेता है, जो न केवल अमर ही होता है, बल्कि अक्षय-शाश्वत होता है।

प्रेम तत्त्व में अमृतानंद की अनुभूति होती है। प्रेमतत्त्व से ओत-प्रोत आत्माएँ प्रायः वीतराग हो जाती है। उनके विषय-भोग की वासनाएँ शांत हो जाती है। इसलिए नहीं कि वे इसके योग्य नहीं रहते अथवा अक्षम हो जाते हैं, बल्कि वे प्रेम के अमृतानंद की उपस्थितियाँ, विषय-भोगों की नश्वरता तथा मिथ्यात्व से अवगत हो जाते हैं। जो सत्य और सब कुछ पा सका, मिथ्या तथा तुच्छता की कामना किस प्रकार कर सकता है? भौतिक रूप से प्रेमियों को प्रायः घाटे में रहना पड़ता है। वे त्याग और उत्सर्ग की मूर्ति होते हैं। अपने प्रेमास्पद के लिए सर्वस्व बलिदान कर देते हैं, तब भी प्रेम के प्रसाद से, एक अनिर्वचनीय आनन्द से ओत-प्रोत बने रहते हैं। वे आत्म-तुष्ट, आत्मानंदित तथा आत्म सुखी बने रहते हैं। देश से प्रेम करने वालों, धर्म से प्रेम करने वालों, विचार और आदर्श से प्रेम करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वालों ने गोली, शूली, फाँसी और अंग-भंग की भयानक यातनाएँ पाईं, किंतु प्रेम के प्रसाद से उनके मुख की आनंदमयी मुस्कान कभी मंद नहीं हुई।

यदि प्रेम में अमृत आनंद का गुण न होता तो उसके आधार पर न तो कोई मर्मांतक यातना सहन करता और न त्याग एवं उत्सर्ग के द्वारा प्राप्त निर्धनता और अभाव को अहोभाग्य मानता। प्रेम से परिपूर्ण आत्मा वाला उसके अक्षय आनंद से भरा हुआ, गूँगे के गुड़ खाने जैसे अबोल आनन्द का रस लेता हुआ प्रतिक्षण संतुष्ट बना रहता है। प्रेम का अमृतानंद सारे आनंदों से ऊपर और स्पृहणीय है।

बहुत बार देखा जाता है कि लोग अपने प्रेमास्पद के लिए आँसू बहाते हैं। अपने आराध्य के सम्मुख मंदिरों में विलाप करते हैं। याचना करते हैं कि उन्हें शरीर कारा से मुक्त कर प्रेमास्पद के साथ एकरूप कर दिया जाय। इस प्रकार व्याकुलता से व्याप्त मनुष्य को देखकर उसके भक्त अथवा प्रेमी होने का अनुमान होता है। किंतु वे ही व्यक्ति जब अपने आस-पास के दुःखी और क्लांत मनुष्यों को देखकर उनकी पीड़ा जानकर भी मौन और उदासीन बने रहते हैं, दया, संवेदना अथवा करुणा से द्रवित नहीं होते, तो तुरंत ही उसके प्रति भाव बदल जाता है और मानना पड़ता है कि अमुक व्यक्ति यथार्थ रूप में प्रेमी नहीं है, बल्कि प्रेम प्रदर्शन करने वाला ढोंगी है। प्रेम तत्त्व से ओत-प्रोत व्यक्ति की आत्मा बड़ी करुणा और हृदय बड़ा दयावान होता है। करुणा और दया प्रेम के प्रमुख प्रसाद हैं। अपने को प्रेमी मानकर भी जो अकरुण है, कठोर है, निश्चित रूप से वह आडंबरी है, फिर भावातिरेक में वह अपने प्रेमास्पद अथवा आराध्य के लिए रो-रोकर नदियाँ क्यों न बहाता रहे। सच्चा प्रेमी या योगी अणु-अणु में अपने प्रेमास्पद का ही आभास पाता है, वह सदा-सर्वदा सबके लिए करुणापूर्वक प्रेम का प्रसाद बाँटता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी दीन-दुःखी को देख उसका मार्मिक हृदय उसकी सेवा, सहायता किए बिना रह ही नहीं सकता। महात्मा ईसा सच्चे ईश्वर भक्त और मानवता के प्रेमी थे। महात्मा गांधी अपने आश्रम में कोढ़ियों तक की सेवा-सुश्रूषा किया करते थे और महात्मा ईसा तो मार्ग में मिले दुखियों का जब तक दुःख दूर नहीं कर लेते थे, अपनी आगे की यात्रा तक स्थगित रखते थे। जहाँ वे ईश्वर को पाने और उसमें मिल जाने के लिए व्यग्र थे , उसके लिए आँसू बहाते थे, वहाँ उसकी दुनिया के दुःखी लोगों की सेवा भी करते थे। महात्मा ईसा और महात्मा गांधी यथार्थ रूप में भक्त और प्रेमी थे, मनुष्य को अपने आनंद और आत्म कल्याण के लिए आडंबरपूर्ण प्रेम से बचना और सच्चे प्रेम को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रेम अमूल्य व निःस्वार्थ वस्तु है। प्रेम का कोई मूल्य नहीं। प्रेम के सम्मुख संसार के सारे सुख, सारी संपदाएँ और सारी विभूतियाँ तुच्छ हैं। संसार में एक नहीं सैंकड़ों ऐसे प्रेमीजन हुए हैं, जिन्होंने इस तत्त्व की रक्षा में धन-दौलत, कुटुंब-कबीला, जमीन-जायदाद यहाँ तक कि राजसिंहासनों को तृण के समान त्याग दिया है। प्रेमियों ने प्रेम के स्थान पर उसके मूल्य में हँसते-हँसते अपने शीश दान कर दिए हैं। उन्होंने सब कुछ दे दिया, लेकिन प्रेम त्याग की कल्पना तक नहीं की। प्रेम-धन के समक्ष संसार की सारी संपदाएँ तुच्छ तथा नगण्य हैं।

इतना अनमोल होने पर भी प्रेम निर्मूल्य ही है। न तो उसके लिए कोई मूल्य दिया जाता है और न लिया जाता है। यदि मनुष्य के पास बिना मूल्य बाँटने योग्य कोई वस्तु है तो वह प्रेम ही है। इस अमृत की कोई थाह नहीं। जन्म-जन्म तक झोली भरकर बाँटते रहिए, इसमें कमी नहीं होती। बल्कि ज्यों-ज्यों जितना अधिक प्रेम का प्रसाद बाँटा जाता है, उसका भंडार उतना ही अधिक भरता जाता है। प्रेम का प्रसाद वितरण करने में न तो कोई पैसा लगता है और न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई उपकरण। यही तो एक ऐसी संपत्ति इस भाग्यवान मनुष्य के पास है, जो अनमोल होने पर भी निर्मूल्य है। प्रेम का प्रसाद वाणी से, शरीर सेवा से, भावना से, विचार से, करुणा, दया, सहानुभूति, संवेदना आदि किसी भी रूप में संसार भर में वितरित किया जा सकता है। प्रेम के अमृत में तो धन लगता है और न उसका दान करने में कुछ व्यय ही होता है। प्रेम का अमृत न केवल अमूल्य ही नहीं बल्कि निर्मूल्य भी है।

प्रेम रूपी संपत्ति को न तो कहीं से लाना होता है और न किसी से लेना होता है, मनुष्य की अंतरात्मा में उसका सागर भरा हुआ है। ऐसा अथाह सागर कि जिसको हजारों जन्मों तक संसार के मनुष्यों को क्यों न बाँटा जाय, तब भी उसमें रंच-मात्र कमी नहीं आती। प्रेम का वह सागर ज्यों-का-त्यों लबालब भरा होता है। प्रेम मनुष्य की आत्मा का स्वयं प्रकाश है। प्रकाश वितरण से उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आती। कोई भी प्रकाश कितनी ही वस्तुओं को आलोकित क्यों न कर ले अपना आभास कितने ही विस्तार में क्यों न डाले, किंतु उसकी मूल मात्रा में जरा भी अंतर नहीं आता। वह यथावत् पूरे-का-पूरा बना रहता है। तथापि आत्मा में वर्तमान प्रेम-प्रकाश की उपलब्धियाँ अनायास ही नहीं हो जाती। उसके लिए उपाय तथा साधना करने की आवश्यकता होती है।

जब तक मनुष्य आत्मा को आवृत किए मल विक्षेप, स्वार्थ, संकीर्णता आदि आवरण को नहीं हटाएगा, तब तक आत्मा में विद्यमान प्रेम के प्रकाश का उद्घाटन नहीं हो सकता। इन भौतिक आवरणों को हटाने के उपाय स्वरूप मनुष्य को संसार के दीन-दुखी मनुष्यों के प्रति दया, करुणा तथा सहानुभूति का व्यवहार करना होगा। उनके दु:खों को अपना दु:ख और उनके आँसुओं को अपने आँसू समझना होगा। अपनी शक्ति भर लोगों की सेवा-सहायता करनी होगी और इस सहानुभूति को जाग्रत तथा विकसित करने का उपाय यह है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार के चरम सत्य को स्वीकार कर लिया जाय कि मेरे सहित इस निखिल ब्रह्मांड के सारे प्राणी एक उस परम पिता परमात्मा की ही संतानें हैं। स्थल, नभ तथा जलचारी जितने भी मनुष्य, पशु-पक्षी अथवा कीट-पतंग दृष्टिगोचर होते हैं वे सब हमारे भाई ही हैं। मनुष्य का यह व्यापक भ्रातृ-भाव सहज ही सबके लिए हृदय में प्रेम का प्रवाह आंदोलित कर देगा, जिससे आत्मा के उस पावन प्रकाश को आवृत रखने वाले सारे आवरण छिन्न-भिन्न होकर नष्ट हो जायेंगे। आत्मा में वर्तमान प्रेम का अखंड प्रकाश निरावरण होकर फैलने लगेगा, जिसकी कृपा से तुच्छ मानव-जीवन एक अद्‌भुत उपलब्धि बन जाएगी। प्रेम आत्मा का सहज प्रकाश है, उसको किसी से पाने अथवा कहीं से लाने की आवश्यकता नहीं होती।

प्रेम मनुष्य की सर्वोपरि आवश्यकता है। मानव-आत्मा संसार से प्रेम रूपी अमृत का ज्यों-ज्यों ह्रास होता जाता है, मनुष्य दानव और संसार नरक बनता जाता है। इसका कारण प्रेम-तत्त्व की कमी ही तो है कि मनुष्य क्रूर, कपटी, स्वार्थी और शोषक बनकर अपने ही भाइयों को उत्पीड़ित करता है। उन्हें हानि पहुँचाता है और उसके फलस्वरूप अपनी आत्मा में ही नरक निर्माण नहीं करता, बल्कि देहांतर के लोकों को भी अंधकारपूर्ण बना लेता है। प्रेम के अभाव में ही धन-दौलत, मान प्रतिष्ठा, परिवार आदि सब कुछ होने पर भी मनुष्य सुख-शांति की एक श्वास के लिए भी तरसता रहता है। प्रेम की कमी के कारण ही तो यह संसार, परमात्मा की यह सुंदर रचना, जीव की यह कर्मभूमि जो उसके लिए स्वर्ग, मोक्ष-मुक्ति अथवा अमृत पद की साधिका है, उलटे शोक-संताप तथा मोह-बंधनों और जन्म-मरण के दु:खदायी चक्र का कारण बनती है। संसार में चारों ओर पनपने वाली त्राहि-त्राहि और शांति की याचना के मूल में प्रेम मानव जीवन और संसार की सर्वोपरि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यकता है। अस्तु, कल्याणकारी मार्ग यही है कि आत्मा तथा संसार, अंतर तथा बाह्य में स्नेह-सौजन्य तथा दया, करुणा व सहानुभूति की परिस्थितियाँ बढ़ाई तथा दृढ़ बनाई जाती रहें। मनुष्य अपने से, अपने परिवार से, पास-पड़ोस से, पुरजन तथा संसारी जनों से यहाँ तक कि जीवमात्र से सच्चा तथा निःस्वार्थ प्रेम करे। प्रेम का विकास होते ही यह संसार जो आज अपनी परिस्थितियों में भयावह विदित होता है, शीघ्र ही स्वर्गीय संपदाओं से भर जाएगा, जिनके बीच मनुष्य न केवल इहलीला ही आनन्द पूर्वक चला सकेगा, बल्कि मुक्ति तथा मोक्ष का जीवन लक्ष्य पाने में भी सुविधा का अनुभव करेगा।

मानव-जीवन का अमृत—प्रेम

सच्चा प्रेम केवल देना जानता है, उसमें बदले के लिए कोई आकांक्षा नहीं होती। वह प्रेमी का हित चाहता है और इसके पास जो कुछ छोटी-मोटी सामर्थ्य है, उसको लेकर वह उसका भला करता है। वह कभी सोचता भी नहीं कि इसका प्रतिफल मुझे मिलेगा। जिसके बारे में सोचा तक नहीं गया वह यदि न मिले तो किसी को भला उससे कोई दुःख क्यों होगा? कोई उसके लिए शिकायत क्यों करेगा ?

ईसा ने कहा—"परमेश्वर की इच्छा पर मैं अपना सर्वस्व सौंपने को तैयार हूँ। इस दुनिया की कोई चीज मैं नहीं चाहता। मैं उसे इसलिए प्यार करता हूँ क्योंकि वह प्यार के ही योग्य है। परमेश्वर में क्या-क्या शक्ति और विशेषता है, इसे जानने की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं है, क्योंकि उससे मैं सिद्धि या अधिकार नहीं चाहता। मेरे लिए इतना ही जानना पर्याप्त है कि वह प्रेममय है। प्रेम उसे प्रिय है।"

यदि हम किसी से प्रेम करते हों तो उसकी बुराइयाँ भी अप्रिय नहीं लगतीं, किंतु यदि किसी से द्वेष है तो अच्छाइयाँ भी दोष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरीखी लगती हैं। कोई धनवान व्यक्ति यदि हमें किसी कारण खटकता है तो उसकी कमाई बेईमानी की दिखाई पड़ती है, उसका कारोबार ठगी, जालसाजी और चोरी से भरा प्रतीत होता है। पर यदि अपना कोई मित्र धनी हो तो उसके परिश्रम की, भाग्य की, बुद्धि कौशल की भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है। कहते हैं कि—"अपना काना लड़का भी सुंदर लगता है।" और पराया सुंदर बालक भी भोंदू जैसा दीखता है। प्रेम में ऐसी ही विशेषता है। केवल प्रेमपात्र ही नहीं उसकी वस्तुएँ भी सुंदर, निर्दोष एवं उत्तम लगने लगती हैं, किंतु इस प्रेम भावना के हटते ही सब कुछ कुरूप, त्रुटिपूर्ण, हानिकारक, अवांछनीय एवं भयंकर लगने लगता है।

ईश्वर का सच्चा प्रेमी अपने प्रेमी पात्र परमेश्वर से कहता है, "हे प्रभू! इस दुनिया में जो दुःख मौजूद है, मैं उनसे डरता नहीं। इस दुनिया में पाप मौजूद हैं, मैं उनके दंड भुगतने में तेरी रिआयत नहीं चाहता। धन, स्वास्थ्य, सौंदर्य, बुद्धि आदि संपदाएँ प्राप्त करने के लिए भिखारी बनकर तेरे दरवाजे पर नहीं आया और न मुक्ति की, स्वर्ग की कामना के लालच में फिर रहा हूँ। मुझे जन्मने और मरने दे। अपने बोये हुए कष्टों को काटते हुए मुझे तुझ से कुछ शिकायत नहीं। मैं एक ही आकांक्षा करता हूँ—तू मुझे अपने से प्यार करने दे। प्यारे के लिए प्यार। सिर्फ प्यार के लिए प्यार। "

कई व्यक्ति प्रेम की असफलता का रोना रोते हैं। वे कहते हैं कि हमने मन से प्यार किया, पर साथी ने उसका बदला बेवफाई में चुकाया। ऐसी शिकायत करने वाले प्रेम की वास्तविकता से बहुत दूर हैं। प्रेम में केवल देना-ही-देना है, उसमें लेने का, प्रतिफल का, बदले का प्रश्न ही नहीं उठता। जहाँ बदला पाने के लिए प्रेम किया जाता है, वह तो विशुद्ध व्यापार है। व्यापार में कभी लाभ होता है तो कभी घाटा भी उठाना पड़ता है। पासा खेलने में कभी चित्त पड़ता है कभी पट्ट। बदले के लिए किया हुआ प्रेम भी एक बाजी खेलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के समान है, उसमें हार-जीत दोनों ही हो सकती है। जैसा दाँव फँस जाय वैसी ही सफलता-असफलता सामने आ जाती है। व्यापारिक प्रेम-बाजारू मुहब्बत करने वालों की कौड़ी सदा चित्त ही नहीं, कभी-कभी निराशा भी हाथ लगती है। सामने वाला यदि अधिक उस्ताद हुआ तो अपना दाव चलाकर अलग हो जाता है। इस प्रकार के प्रेम में दोनों पक्षों में से किसी एक को अवश्य ही शिकायत करनी पड़ती है। एक पहलवान तो गिरेगा ही। खरीद-बेच करने वालों में एक को लाभ होता है तो दूसरे को घाटा। इसमें पश्चात्ताप या दोषारोपण करना व्यर्थ है।

भोगेच्छा को प्रेम कहना एक बहुत बड़ी प्रवंचना है। प्रेम तो आत्मा में ही हो सकता है और भोग शरीर का किया जाता है। इसलिए जिनके प्रेम के पीछे भोग की लालसा छिपी है, उनकी दृष्टि शरीर तक ही है। आत्मा का भोग नहीं हो सकता। वह स्वतंत्र है, वह किसी के बंधन में नहीं आती। बंधन में केवल शरीर बँधता है। सच्चा प्रेम आत्मा से ही किया जाता है; उसमें चुभन, पीड़ा, बेचैनी, बेबसी, निराशा कुछ नहीं है, न उसमें विरह है, न वेदना, इन दोनों ही विषों से वह मुक्त है। जिससे प्रेम करना हो उसके शरीर पर घात न लगाई जाय, जिसका शरीर भोगना हो उसके साथ प्रेम का नाटक न किया जाय, यही उचित है।

प्रेम करने का उद्देश्य अपने आत्मा को प्रेम रस से सराबोर करना है। उसका और कोई प्रतिफल नहीं। भौतिक दृष्टि से प्रेमी घाटे में रह सकता है, उसे ठगा जा सकता है, धोखा हो सकता है और वह ऐसा त्याग करता है जिससे उसे स्वयं बड़ी कठिनाई उठानी पड़े। किंतु प्रेम भावनाओं के उत्पन्न होने के कारण आत्मा में जो स्वर्गीय आनंद आविर्भूत होता है, उसका मूल्य बहुत है, इतना अधिक है कि उसकी तुलना में सब कुछ गँवाना पड़े तो भी प्रेमी नफे में ही रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम का अमृत मधुरतम है

प्रेम की पवित्र भावना मनुष्य की आत्मा में अक्षय शांति भर देती है। जिस प्रकार निर्झर की धारा स्वयं भी शीतल रहती है और जो उसके पास आता है, उससे संपर्क स्थापित करता है उसको भी शीतलता प्रदान करती है, उसी प्रकार प्रेमी हृदय व्यक्ति अपनी आत्मा में तो शीतलता का अनुभव करता है, साथ ही उसके संपर्क में जो भी आता है, वह भी आनंदित हो उठता है।

संत और महात्मा लोग प्रेम के अक्षय भंडार होते हैं। उनके जीवन में स्थायी शांति का निवास रहता है। कोई भी अभाव, कोई भी आपत्ति उनकी मनःशांति को प्रभावित नहीं कर पाती। बहुत बार ऐसा संयोग भी आता है कि दुष्ट लोग उन्हें अकारण ही सताया करते हैं। पर हृदय में प्रेम का निवास रहने से वे उनकी दुष्टता को वैसे ही सहन कर लेते हैं, जिस प्रकार पिता अपने बच्चे का उपद्रव सहन कर लेता है। इतना ही क्यों, वे उलटे उसे आशीर्वाद देते हैं, उसकी सद्‌बुद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करने लगते हैं।

महात्मा ईसा प्रेम के भंडार थे। वे सारे मनुष्यों को अपने अंतरात्मा की गहराई से प्रेम करते थे। महात्मा ईसा पर कदाचित् संसार में सबसे अधिक अत्याचार किया गया तथापि उनके मन में प्रतिकार की भावना नहीं आई। महात्मा ईसा ने जिस मनुष्य जाति का हित चाहा, जिसकी भलाई के लिए अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया, उन्हीं मनुष्यों ने उन्हें क्रूस पर ठोक दिया। उनको विविध प्रकार से शारीरिक यंत्रणाएँ दी। उन्हें कोड़ों से मारा, पत्थरों की वर्षा की। पर प्रेम के देवता महात्मा ईसा ने किसी पर क्रोध तक नहीं किया। प्रेम के प्रसाद से उनके हृदय को प्राप्त हुई शीतलता जरा भी नष्ट न हुई। लोग उन्हें क्रूस पर टाँग कर कीलें ठोंक रहे थे और वे रो-रोकर परमात्मा से प्रार्थना कर रहे थे कि हे परमपिता! तू इन अबोधों पर क्रोध न करना, इनको क्षमा कर देना, क्योंकि वे यह नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महात्मा महावीर को लोगों ने पागल कहा। उन्हें पत्थरों से मारा। उनके कपड़े फाड़ डाले, गाँव में ठहरने नहीं दिया। उनके पीछे कुत्ते दौड़ाए। और जो भी यातना बन पड़ी, दी। पर महात्मा महावीर उस सारे अत्याचार को समान भाव से सहन करते रहे, उन्होंने न तो किसी पर क्रोध किया और न किसी से प्रतिकार लिया। बल्कि वे भी सच्चे हृदय से मनुष्य जाति का हित चाहते और करते रहे। इस प्रकार की सहनशीलता और क्षमा का भाव उस प्रेम का ही प्रसाद था, जो उनके हृदय में निवास कर रहा था।

संसार से त्रस्त और दुःखों से आक्रांत मनुष्य जब कहीं भी शांति नहीं पाता तो किसी महात्मा अथवा संत की शरण में जाता है। उनके पास जाते ही उसका सारा शोक-संताप नष्ट हो जाता है, उसका जलता हुआ हृदय शीतल हो उठता है। ऐसा इसलिए होता है कि महात्माओं के हृदय में प्रेम का निवास होता है। जिसके आधार पर वे समस्त प्राणी की सच्ची सहानुभूति और सच्ची संवेदना दे पाते हैं। सहानुभूति तथा संवेदना को ऐसी संजीवनी माना गया है, जो किसी भी प्रकार से दुखी मनुष्य को आश्वस्त कर देती है। प्रेम एक दिव्य अमृत है, जिसका आदान-प्रदान मनुष्य को देवताओं के समान बना देता है।

प्रेम से शून्य मनुष्य नीरस मरुस्थल के सिवाय और कुछ नहीं होता। प्रेम-विहीन व्यक्ति के पास जाकर एक साधारण मनुष्य भी अपनी स्वाभाविक प्रसन्नता खो देता है, तब किसी का दुःख दूर हो सकना संभव ही है। हरे-भरे पत्तों से रहित वृक्ष के पास जाकर किस को छाया मिल सकती है और सूखा जलाशय किसकी प्यास बुझा सकता है।

प्रेम के प्रसाद से मनुष्य अजातशत्रु की स्थिति में पहुँच जाता है। वह तो किसी से शत्रुता नहीं रखता, साथ ही दूसरे लोग भी उससे बैर नहीं मानते। माना कि प्रेमी हृदय संत लोग जब किसी के प्रति बैर-भाव नहीं रखते तो दूसरा उनसे क्यों बैर मानेगा? किंतु यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिक्रिया हिंस्र-जीवों में तो नहीं होती। वे तो नैसर्गिक रूप से जीवों के शत्रु होते हैं। कोई जीव उनसे बैर माने या न माने, पर वे पाते ही उनको मार तक डालते हैं। ऐसे स्वाभाविक हिंस्र जंतु भी वनवासियों, ऋषि-मुनियों के समीप जाकर उनके सच्चे प्रेम से प्रभावित होकर हिरनों और गायों के साथ मित्र भाव से विहार करने लगते थे। प्रेम ऐसा चमत्कार है, ऐसा जादू है, जो अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहता।

चोर-डाकू अपने से बैर न मानने वालों की भी संपत्ति हरण कर लिया करते हैं। किंतु उनकी भी दुष्ट वृत्ति प्रेम के अमृत से शीतल हृदय वाले महात्माओं के पास पहुँचकर बदल जाती है और वे उनके प्रभाव से सज्जन बन जाते हैं। महात्मा नारद के संपर्क में आकर डाकू रत्नाकर, वाल्मीकि बन गए, महात्मा बुद्ध के संपर्क में आकर अँगुलिमाल धर्मप्रचारक बन गया और तुलसी की कुटिया में चोरी करने वाले चोर लौटकर उनके पैरों गिरे और सदा के लिए अच्छे आदमी बन गए।

प्रेम में मनुष्य की जीवन धारा बदल देने की शक्ति होती है आम्रपाली एक प्रसिद्ध वेश्या थी। वह अपना शरीर बेचत थी। शान-शौकत से रहती थी और दिन-रात पाप ही कमाया करती थी। किंतु जिस दिन वह भगवान तथागत के विश्व-प्रेम से प्रभावित हुई सारा वैभव और सारा भोग-विलास छोड़कर महान भिक्षुणी बनकर कृतार्थ हो गई। सूर और तुलसी अपने जीवन में बड़े ही कामुक तथा स्त्री लंपट रहे, पर ज्यों ही उन्हें भगवत्-प्रेम की अनुभूति हुई, वे परम वैष्णव भगवान श्रीकृष्ण और राम के भक्त बन गए। सम्राट अशोक की जीवन गाथा का प्रारंभिक भाग अत्याचारी के रूप में अंकित है, पर जब वे उसे कलिंग के युद्ध में विनाश की विभीषिका की प्रतिक्रिया से मानवता के प्रति प्रेम की अनुभूति हुई, वह अशोक महान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने अनंतर जीवन में उसने मनुष्य की भलाई के लिए बड़े-बड़े काम किए लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अजस्र प्रयत्न किया। धर्म प्रचार के लिए अपने पुत्र और पुत्री को भिक्षुणी बनाकर देशांतर में भेज दिया। प्रेम परमात्मा का सबसे श्रेष्ठ और सबसे पवित्र प्रसाद है। अपने अंतर में इसका विश्वास करना अपनी आत्मा के लिए कल्याण का पथ प्रशस्त करना है।

आत्मा में प्रेम का विकास मनुष्य को साधारण से असाधारण बना देता है। प्रेम से धैर्य, सहिष्णुता, क्षमा, दया, करुणा, त्याग और दृढ़ता की उपलब्धि होती है। प्रेम के आधार पर निर्भीक बना मनुष्य कहीं भी विहार कर सकता है। उसके लिए कहीं भी कोई भय नहीं रहता। वह अधिकांशतः निरापद ही रहता है। फिर भी यदि संयोग अथवा पूर्व परिपाक के कारण उस पर कोई विपत्ति आ भी जाती है, तो वह उनको प्रेम के सहजन्य गुणों के आधार पर सहन कर लेता है, उसके पार उतर जाता है।

किंतु यह गुण यह विशेषताएँ उसी प्रेम में होती हैं, जो सत्य, सार्वकालिक और सार्वभौमिक होने के साथ-साथ स्थिर, निःस्वार्थ तथा असंदिग्ध होता है। सामयिक, एकदेशीय अथवा संदिग्ध प्रेम में ये विशेषताएँ नहीं होती हैं। यदि एक मनुष्य अपनी पत्नी को प्यार करता है और वह उसके आधार पर अन्य से वैर-शमन की आशा करता है, तो उसे निराश ही होना पड़ेगा। इससे आगे बढ़ कर भी यदि वह सारे संसार को क्यों न प्रेम करता हो, किंतु अपने विरोधी से द्वेष मानता हो तब भी वह इतने व्यापक प्रेम के कारण ही निरापद अथवा अजातशत्रु नहीं हो सकता है।

परिपूर्ण पात्र की विशेषता को एक छोटा-सा छिद्र भी व्यर्थ बना देता है। प्रेम यदि परिपूर्ण है तो पूर्ण शक्तिशाली है। उसमें रंच न्यूनता भी उसकी किसी विशेषता को प्रभावशाली न बनने देगी। जिस प्रकार परमात्मा की प्राप्ति होती है, तो पूर्णरूप से होती है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अथवा होती ही नहीं, उसी प्रकार से प्रेम की सिद्धि होती है तो पूर्ण रूप से होती है या होती ही नहीं।

तथापि जिस प्रकार परमात्मा की प्राप्ति के लिए यत्किंचित् प्रयत्न भी श्लाध्य है, उसी प्रकार प्रेम की सिद्धि के लिए जितना अणु कण बन सके, प्रेम की साधना करते ही रहना चाहिए। जिस प्रकार बूँद-बूँद का संचय एक दिन घट भर देता है, जन्म-जन्म का प्रयत्न किसी जन्म में परमात्मा की प्राप्ति करा देता है, उसी प्रकार की थोड़ी-थोड़ी साधना भी एक दिन आत्मा को प्रेम स्वरूप बना देती है।

प्रेम की परिधि सीमित नहीं है और न उसका कोई प्रकार ही होता है। प्रेम का जन्म एक ही हृदय से एक जैसी ही अनुभूति के साथ होता है। प्रेम, प्रेम है फिर यह नारी के प्रति हो, पुत्र के प्रति हो, समाज, देश अथवा संपूर्ण संसार के प्रति हो। उसका परिपाक आध्यात्मिक प्रेम में होता है और उसके फल भी एक ही है, आत्म-कल्याण। शर्त केवल यह है कि प्रेम जिसे किया जाए संपूर्ण मन- प्राणों से किया जाए। उसमें न तो कोई स्वार्थ और नाहीं कोई छिद्र शेष रखा जाये। सच्चा और पूर्ण स्थिति का प्रेम अंत में परमात्मा की भक्ति का रूप बन जाया करता है। शीरी-फरहाद, सोनी-महीवाल, सूर-तुलसी आदि का प्रेम नारी के प्रति लौकिक रूप से प्रारंभ होकर अंत में अनंत एवं आध्यात्मिक प्रेम में बदल गया, जिसके बल पर उन्होंने शरीरांतर में कल्याण का वरण किया।

उनका लौकिक प्रेम पारलौकिक प्रेम बन गया। दशरथ का पुत्र-प्रेम उनके कल्याण का साधक सिद्ध हुआ। लक्ष्मण और भरत भ्रातृ प्रेम के आधार पर उन्नत स्थिति के अधिकारी बने। संयमराय, भामाशाह और बाजी प्रभु देशपांडे अपने स्वामी के प्रति प्रेम के कारण महानता के अधिकारी बने। इसी प्रकार भगतसिंह, रामप्रसाद,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तिलक और गोखले जैसे देशभक्तों ने देश के प्रति प्रेम के आधार पर भव-बंधन से छुटकारा पाया। ईसा, बुद्ध, महावीर और महात्मा गांधी जैसी आत्माएँ मानवता के प्रति असंधि प्रेम के आधार परमुक्त हुई हैं।

सच्चे प्रेमियों पर उसकी आस्था की परीक्षा लेने के लिए एक नहीं, हजारों संकट आते हैं। जो उन संकटों को हँसता हुआ सहसा और अपने प्रेम मार्ग पर अविचलित रूप से चलता रहता है, वही वस्तुतः सच्चा प्रेमी होता है और वह ही उसके आधार पर निर्वाण का अधिकारी बन पाता है। मीरा से कृष्ण से प्रेम किया, उसके लिए पति तथा परिवार का कोप सहा, लोकपवाद की यातना सहन की, अपने चरित्र पर लगाए गए लाँछन की आग सही, किंतु अपना प्रेम न छोड़ा। उसे राजरानी के पद से च्युत कर दिया गया, जाति से बहिष्कृत कर दिया, पर वह अपने प्रेम के पवित्र मार्ग पर ही रही।

मीरा को जमुना में फेंका गया। पिटारी में उसके पास साँप भेजा गया और हलाहल का प्याला पीने को दिया गया, पर उसका असंग्दिध प्रेम घटने अथवा विचलित होने के स्थान पर निरंतर बढ़ता ही चला गया। यहाँ तक कि यमुना की साँवली धारा उसे कन्हैया की गोद लगी। काला सर्प पिटारी में शालिग्राम के स्वरूप में दिखाई दिया और हलाहल के श्याम रंग में उस कृष्ण-प्रेम की मदमाती को साक्षात श्याम सलौने के ही दर्शन हो गए। यही तो असंधि तथा संपूर्ण प्रेम का लक्षण है कि मीरा के लिए संसार का अणु कण ही उसके प्रियतम का प्रतिबिंब ही नहीं बन गया, बल्कि वह स्वयं भी श्याम रूप होकर एक दिन भगवान श्यामसुंदर में मिल गई।

प्रेम, प्रेम है, वह लौकिक हो अथवा आध्यात्मिक किंतु हो पूर्ण, असंधि, असंदिग्ध तथा निःस्वार्थ, तो निश्चय ही चमत्कारिक, शक्तिशाली और भव-बंधन से मुक्ति का साधन होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंद का मूल-स्त्रोत प्रेम ही तो है

यदि गहराई के साथ तथ्य तक पहुँचने का प्रयत्न किया जाए तो पता चलेगा कि आनंद का मूल-स्त्रोत प्रेम ही है। जहाँ प्रेम नहीं वहाँ आनंद का होना संभव नहीं और जहाँ आनंद होगा उसके मूल में प्रेम का होना अनिवार्य है।

संसार की कोई भी वस्तु या कोई व्यक्ति ले लिया जाए, यदि उसमें किसी के सुख की अनुभूति होती है, तो निश्चय ही उस वस्तु या व्यक्ति में उस मनुष्य का प्रेम होगा। माता-पिता अपने बच्चे को देखकर आनंद पाते हैं। यह आनंद न तो बच्चे में निवास करता है और न माता-पिता की आँखों में। इसका निवास उस प्रेम में होता है, जो बच्चे को देखकर उद्दीप्त हो उठता है।

धन देखकर लोभी को बड़ा आनंद मिलता है इससे यह समझ लेना भूल होगी कि आनंद का निवास धन में हैं। यदि ऐसा होता तो धन सबके लिए ही आनंद का कारण होना चाहिए था। जब कि ऐसा होता कभी नहीं। एक निस्पृह व्यक्ति को न तो धन का भाव आनंद देता है और न अभाव दुःख। धन को देखकर लोभी को आनंद होने का कारण यही होता है कि उससे उसे प्रेम होता है। यह ध्यान के प्रति प्रेम का ही कारण है कि धन पाकर लोभी को उतना ही आनंद होता है, जितना दुःख उसके चले जाने पर होता है। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति अथवा वस्तु क्यों न हो, यदि उसके भावाभाव में सुख होता है तो यही मानना पड़ेगा कि मनुष्य को उसके प्रति प्रेम है।

दो मित्रों को ले लीजिए। उन्हें एक-दूसरे को देखकर, मिलकर और परस्पर संपर्क में आकर बड़ा आनंद आता है। इसका एकमात्र कारण वह प्रेम ही है, जो एक-दूसरे के लिए उनके हृदयों में रहा करता है। इसी प्रकार जब किन्हीं स्वार्थों अथवा भ्रमों के कारण एक व्यक्ति दूसरे के प्रति वह प्रेम भाव नष्ट हो जाता है, तब यद्यपि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति वही दोनों बने रहते हैं किंतु आनंद की वह अनुभूति नहीं रहती, जो एक-दूसरे को देखकर होती थी। आनंद का निवास वस्तु या व्यक्ति में नहीं होता है। उसका निवास उस प्रेम में होता है, जो व्यक्ति या वस्तु के प्रति रहा है।

उदाहरण के लिए एक कवि, कलाकार अथवा भावुक व्यक्ति को ले लिया जाय और साथ ही एक सामान्य व्यक्ति को। दोनों तरह के व्यक्तियों के प्रथम वर्ग का कोई भी व्यक्ति जब प्रकृति के संपर्क में आता है, तो आनंद-विभोर हो उठता है। उसे फूलों का सौंदर्य, पक्षियों का कलरव, नदियों का कल-कल, बादलों का उमड़ना, तारों का चमकना और चाँदका निकलना आदि आत्म-विस्मृत कर देते हैं, जबकि दूसरे सामान्य व्यक्ति को उनसे कोई भी आनंद और सुख नहीं मिलता। इसका एक ही कारण है और वह यह कि कवि, कलाकार और भावुक व्यक्ति को प्रेम होता है और दूसरे सामान्य व्यक्ति को नहीं।

इसी प्रकार एक व्यक्ति ईश्वर का गुण-गान सुनकर भाव-विभोर हो जाता है, तन, मन की सुध भूल जाता है। उसका हृदय गद्‌गद् हो उठता है, शरीर पुलक उठता है और आँखों से आनंद के आँसू बहने लगते हैं। पर दूसरा व्यक्ति कितनी ही कथाएँ सुने, कितना ही भजन-कीर्तन में भाग ले, कितना ही ईश्वर का गुण गाये अथवा सुने किंतु उसकी स्थिति यथावत् बनी रहती है। उसे कोई विशेष आनंद की उपलब्धि नहीं होती। इसका कारण यही होता है कि एक को ईश्वर से प्रेम होता है और दूसरे को नहीं। आनंद का निवास न तो कथा-कहानी में है और न भजन-कीर्तन में, उसका निवास तो उस प्रेम में होता है, जो किसी को ईश्वर के प्रति होता है।

जिस प्रकार अंधकार का अपना अस्तित्व कुछ नहीं होता, उसी प्रकार दुःख का भी अपना अस्तित्व कुछ नहीं होता। प्रकाश का अभाव ही अंधकार होता है और प्रेम का अभाव ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुःख है। दुःखों का जन्म मनोविकारों और वासनाओं से होता है। लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि के निकृष्ट मनोभाव अथवा मनोविकार ही दुःख का हेतु बनते हैं। और वासनायें आत्मा का सौंदर्य शोषण कर उसे दुखों से भर देती है। मानव हृदय में इन मनोविकारों का अस्तित्व तभी तक रहता है, जब तक कि उसमें सच्चे प्रेम का प्रकाश नहीं फैलता।

हृदय में प्रेम का प्रकाश फैलते ही मनोविकार वैसे ही दूर हो जाते हैं जैसे दीपक के जल उठने से कक्ष का तिमिर नष्ट हो जाता है। प्रेम का स्वाद, रस और अनुभव मिलते ही मनुष्य का हृदय अलौकिक सौंदर्य से भर उठता है, उसकी आत्मा तृप्त हो जाती है। तब उसे न कोई वासनाएँ रहती हैं और न कामनाएँ। ऐसे निर्मुक्त हृदय में विकारों के रहने की संभावना नहीं रहती। मनुष्य निर्विकार एवं निष्कपट होकर आनंद से भर उठता है।

प्रेम में मनुष्य का जीवन बदल देने की शक्ति होती है। प्रेम के प्रसाद से मनुष्य की निर्बलता और दरिद्रता, शक्तिमत्ता और संपन्नता में बदल जाती है। अशांति और असंतोष तो प्रेमी हृदय के पास फटकने तक नहीं पाते। प्रेम मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ वरदान माना गया है। जिसने प्रेम पा लिया अर्थात जिसके हृदय में प्रेम का जागरण हो गया, उसे समझो संसार की सारी संपदाएँ प्राप्त हो गईं। प्रेम पा जाने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता। प्रेम की प्राप्ति ईश्वर की प्राप्ति मानी गई है, क्योंकि मनीषियों और महात्माओं ने प्रेम को परमेश्वर और परमेश्वर को प्रेम रूप ही माना है। हृदय में प्रेम भावना की स्थापना होते ही उसका प्रभाव शरीर-आत्मा पर भी पड़ता है। प्रेम की अनुभूति अमृत रूप जो होती है। इसका संचार होते ही मन प्रसन्न, शरीर स्वस्थ और आत्मा उज्ज्वल हो उठती है।

मानवीय शक्तियों में प्रेम को सबसे बड़ी शक्ति माना गया है। हिंस्र जंतुओं और अपराधी व्यक्तियों से भरे वनों में ऋषि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुनियों के पास रक्षा के साधनों में न तो अस्त्र-शस्त्र होते थे और न सेना की शक्ति। उनके पास तो एक प्रेम की ही वह शक्ति रहती थी, जो सारी शक्तियों की सिरमौर मानी गई है। इसी शक्ति और बल के आधार पर वे शेर, चीते, भालू, भेड़िये और सर्प जैसे घातक जीवों को नम्र बना लेते थे और चोर, लुटेरों को श्रद्धा के लिए विवश कर देते थे।

प्रेम में महानतम वशीकरण बल होता है। इससे शत्रु-मित्र, घालक-पालक बन जाते हैं। प्रेम द्वारा मनुष्य सारा संसार वश में कर सकता है। भक्त के वश में भगवान के रहने की जो बात कही जाती है, उसका आधार प्रेम ही तो है। प्रेम के बल पर ही उपासक पत्थर में भगवान के दर्शन कर लेता है। पीड़ित जनता प्रेम पुकार द्वारा ही तो उसे धरती पर उतार लाती है। प्रेम की शक्ति अपार है, उसकी महिमा अकथनीय है।

प्रेम भाव की प्राप्ति न पुस्तकों से होती है और न उपदेशों से। उसकी प्राप्ति धन अथवा संपत्ति से नहीं होती और न मान और पद-प्रतिष्ठा ही उसको संभव बना सकती हैं। शक्ति और सत्ता द्वारा भी प्रेम भाव की सिद्धि नहीं हो सकतीं। जबकि लोग प्रायः इन्हीं साधनों द्वारा ही प्रेम-भाव पाने का प्रयत्न किया करते हैं। पुस्तकें पढ़कर लेखक के प्रति, उपदेश सुनकर वक्ता के प्रति, कुछ पाने की आशा में धनी के प्रति, शक्ति और वैभव देखकर सत्ताधारी के प्रति जो आकर्षण अनुभव होता है, उसका कारण होता है, प्रभाव, लोभ और भय। वास्तविक प्रेम भाव वहीं संभव है, जहाँ न कोई प्रभाव होगा, न स्वार्थ अथवा आशंका।

ऐसा वास्तविक और निर्विकार प्रेम भाव केवल सेवा द्वारा ही पाया जा सकता है। सेवा और प्रेम वस्तुतः दो भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं। यह एक भाव के ही दो पक्ष हैं। जहाँ प्रेम होगा, वहाँ सेवा भाव होगा और जहाँ सेवा भाव होगा, वहाँ प्रेम भाव का होना अनिवार्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसके प्रति मनुष्य के हृदय में प्रेम भाव नहीं होगा, उसके प्रति सेवा भाव का भी जागरण नहीं हो सकता। और जो सेवा भाव सेव्य के प्रति प्रेम भाव नहीं जगा सका, वह सेवा नहीं स्वार्थपरक चाकरी का ही एक रूप होगा। जिसकी सेवा करने में सुख, शांति और गौरव का अनुभव न हो समझ लेना चाहिए कि उस सेव्य के प्रति हृदय में भाव अवश्य नहीं है।

सच्चा सेवा भाव माता की सेवा में ही प्रतिबिंबित होता है। जितनी अधिक और निःस्वार्थ सेवा एक माता बच्चे की करती है, उतनी सेवा एक प्रेमी अपने प्रीति भाजन और एक भक्त अपने भगवान की कर सकता है। जिस सेवा में भक्त और माता जैसा निःस्वार्थ भाव नहीं होता, वह आध्यात्मिक सेवा नहीं होती, जिसके द्वारा आनंद के मूल स्रोत सच्चे प्रेम की प्राप्ति की आशा की जाती है। ऐसी निःस्वार्थ सेवा दुःखियों के सिवाय किसी की भी नहीं की जा सकती। ऐसे पात्रों से कुछ पाने की आशा तो की ही नहीं जा सकती, अस्तु इनकी सेवा निःस्वार्थ सेवा ही हो सकती है। निःस्वार्थ ही सच्ची सेवा है, बाकी सारी सेवाएँ धन, सत्ता और स्वार्थ की दासता मात्र ही होती हैं। ऐसी सेवा में न तो प्रेम होता है, न आनंद और न गौरव। सेवा द्वारा यदि आनंददायक प्रेम की अपेक्षा है तो मातृ-भाव से संसार के दीन-दुखी और गरीब आदमियों की सेवा करना उचित है। वैसे जिसने अपनी मनोभूमि को इतना उन्नत बना लिया है कि उसमें किसी प्रकार का स्वार्थ घर न करने पावे तो संसार में किसी की भी सेवा से मनोवांछित प्रेम की प्राप्ति की जा सकती है।

आनंद का मूल-स्रोत प्रेम है और सच्चा-प्रेम निःस्वार्थ भाव से ऐसों की सेवा करने से ही प्राप्त हो सकता है, जिनसे किसी प्रतिदान की आशा न की जा सके। यदि जीवन में सुख-संतोष और शांति की आवश्यकता हो तो जनसेवा के मार्ग से प्रेम प्राप्त कर उसकी पूर्ति सफलतापूर्वक की जा सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गर न हुई दिल में मए इश्क की मस्ती

पत्नी का मन नहीं मान रहा था, वह कहने लगी, मुझे धन, रुपया, पैसा कुछ नहीं चाहिए। तुम बने रहो, तो मुझे सब कुछ है। चलो भावुकता ही सही पर मेरा मन आज न जाने क्यों विचलित हो रहा है, किसी अज्ञात अनिष्ट के-से भाव उठ रहे हैं, आज तुम काम पर मत जाओ। पति ने-प्रेयसी पत्नी के कोमल बालों को हाथ का मधुर स्पर्श देकर कहा—लिली ! प्रेम जीवन की अमूल्य संपत्ति, अंतिम आनंद तो है, पर उसे स्थायी सौंदर्य प्रदान करने के लिए सक्रियता चाहिए। तुम मेरे लिए दिन भर कितना परिश्रम करती हो, तुम्हारे श्रम के साथ जुड़े प्यार-भाव को क्या मैं भुलाता हूँ ? पर मुझे भी तो अपना कर्तव्य-पालन करना चाहिए, मुझे भी तो अपने अंत:करण के प्रेमभाव को विकसित करने का अधिकार मिलना चाहिए। तुम किसी बात की आशंका न करो, हम दमिश्क होकर पंद्रह दिन में ही लौट आएँगे। कप्तान हर्बर्ट ने इतना कहकर दाहिना हाथ ऊपर उठाया, अलबिदा की और वहाँ से चल पड़ा। लिली दरवाजे पर खड़ी हर्बर्ट को जाते हुए तब तक देखती रही जब तक वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया।

नाविक हर्बर्ट के जीवन की यह प्रेम गाथा काल्पनिक नहीं, उसके जीवन की महान साधना थी, जिसे इन पति-पत्नी ने सत्तर वर्ष की आयु तक संपूर्ण अंत:करण से निभाया। हर्बर्ट लिखते हैं—हम दोनों ने जीवन में काम-भावना या यौन आकर्षण को कभी भी महत्त्व नहीं दिया। जिस तरह दो प्रेमी रहते हैं, विवाह के बाद से हम दोनों ठीक वैसे ही रहे और इस संसार में आने का भरपूर आनंद लेते रहे। मेरी दृष्टि में प्रेम से बड़ी निधि व संपत्ति इस संसार में दूसरी नहीं। हम दोनों की एक इच्छा थी कि हम एक ही दिन मरें (ऐसा ही हुआ भी), और जब भी कभी संसार में आएँ कभी एक-दूसरे से अलग न हों।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरीय विधान भी प्रेम के आगे नतमस्तक है। हर्बर्ट, वहाँ से सीधे ऑफिस पहुँचा। आवश्यक कागज-पत्र लेकर जहाज पर चढ़ा। जहाज दमिश्क के लिए चल पड़ा। अभी यात्रा एक दिन की भी पूरी नहीं हो सकी थी, रात का समय, नीरव स्तब्धता, घोर अंधकार—सब मिलकर यह बता रहे थे कुछ अनहोनी होने वाली है। सचमुच आधा घंटा बीते समुद्री तूफान आ गया, एक घंटे के इस तूफान ने जहाज को चरमराकर रख दिया। हर्बर्ट को आज्ञा मिली-जहाज के ऊपर जाकर उसके पाल को तूफान को दिशा में मोड़ने की, ताकि उसे तूफान के विपरीत आघात से बचाया जा सके। किंतु ऊपर जाने का अर्थ—मृत्यु के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था—हर्बर्ट सतह पर चढ़ना ही चाहता था कि कोई आकृति सामने आकर रास्ता रोककर खड़ी हो गई, हर्बर्ट आगे नहीं बढ़ सका। एक काली छाया निकली और ऊपर चढ़ गई। पाल की दिशा बदल गई जहाज विपरीत दिशा में चल पड़ा, वह आकृति फिर हर्बर्ट के पास आकर बोली, मैं तुम्हारी लिली हूँ, हर्बर्ट, तुम मुझसे झूठ ही कह रहे थे क्या कि मैं सकुशल लौट आऊँगा? हर्बर्ट विमोहित सा लिली के स्पर्श के लिए आगे बढ़ा तब, तक वह आकृति अदृश्य हो गई। जहाज का ऑफीसर हैरान था यह देखकर कि पाल की दिशा बदल गई और हर्बर्ट भीगा भी नहीं। उसे कौन समझाता कि प्रेमरूप आत्मा और सिद्धि एक ही वस्तु के दो नाम हैं। लिली उस समय निद्रा में थी, पर अंतःकरण अपने प्रिय पति के पास था और यह अदृश्य अस्पर्श होकर भी इतना शक्तिशाली था कि उतने भयंकर तूफान से भी हँसकर टक्कर ले सकता था। हर्बर्ट लौटा तो बोला—लिली तुम मुझे फिर लौटा लाई।

अपंग भिखारी दिनभर का भूखा-प्यासा गाँव की ओर बढ़ रहा था तो वर्षा आरंभ हो गई। बात गोरखपुर जिले के सिसवाँ बाजार के समीप एक गाँव की है। पास में ही एक मंदिर था, वर्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के कारण दूर तक पहुँचना संभव न था, अपंग भिखारी का घर तो वहाँ से दूर चंपारन जिले के नरईपुर गाँव में है। किसी तरह घिसटता हुआ मंदिर तक पहुँचा। रात वहीं बिताने के अतिरिक्त कोई उपाय न था।

मनुष्य अकेला हो तो भावनाओं से बात करता है। सामने खड़ी देव-प्रतिमा की ओर देखा आँखों ने। तर्क मन ने किया-भगवान् कैसी है तुम्हारी सृष्टि? किसी के पास अच्छे स्वस्थ पाँव भी होते हैं। घोड़ागाड़ी, मोटर, हाथी आदि वाहन तो दूर किसी को पाँव भी नहीं देते, तुम्हारी माया बड़ी विलक्षण है।

अंत:करण की श्रद्धा बोली—इसमें भगवान का क्या दोष-बावले यह तो सब कर्मफल हैं, जिसने तप, संपन्नता की साधना की, पुरुषार्थ-वैभव तो उसे मिलना ही था। पर जो पड़ा रहा पापपंक में, दूसरों को कष्ट में देखकर अहंकार की आत्म-प्रवंचना में, वह दीन-दरिद्र रह गया तो इसमें भगवान का क्या दोष?

दुखी मन में विचार उठा-आखिर हम भी तो आपकी ही संतान हैं, अज्ञानवश आपको छोड़ दें तो क्या आपको भी छोड़ देना चाहिए? आप तो संसार का पालन करने वाले सबके रक्षक आप सर्व समर्थ हैं प्रभु! पाप के बोझ से बचाकर सन्मार्ग की दिशा आप ही तो देते हैं?

ऐसे ऐसे सोचते हुए अपंग अंत:करण में भगवान के प्रति अनन्य भक्ति, अपूर्व प्रेम की स्फुरणा आलोकित हो उठी, हृदय विह्वल हो उठा, आँखें झर-झर झरने लगीं, बाह्य चेतना शून्य-सी हो चली। लगता था चिरकाल से दिक्‌भ्रमित आत्मा को अपना परमधाम मिल गया है। अपंग को नींद आ गई, उसे लगा जैसे वह अगाध ज्योति-सागर में खो गया है, अब वहाँ प्रकाश के अतिरिक्त कुछ शेष ही नहीं रहा। भोर की उषा ने अपंग को आकर जगाया तो वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विस्मय विस्फारित नेत्रों से देखता रह गया कि उसकी अपंगता एक स्वस्थ, सुदृढ़ शरीर में परिवर्तित हो गई है।

दो घटनाएँ एक लौकिक प्रेम की, एक आध्यात्मिक प्रेम की; प्रेम एक ही है, रूप भिन्न है। भिन्नता में भी एक जैसी तृप्ति, एक जैसी सिद्धि देखकर ही किसी शायर ने लिखा है—

गर न हुई दिल में मए, इश्क की मस्ती।
फिर क्या दुनियादारी, क्या खुदा परस्ती॥

अगर हृदय में प्रेम की मस्ती न हो तो चाहे सांसारिक जीवन हो अथवा ईश्वर प्राप्ति का आध्यात्मिक मार्ग—कोई आनंद नहीं आता। "आनंद का मूल स्रोत प्रेम है।" प्रेम के बिना सारा संसार ही निरर्थक हो जाता है, निष्क्रिय हो जाता है। प्रकृति की रचना प्रेम का आनंद लेने के लिए ही हुई है। यदि संसार में एक ही तत्त्व बना रहता तो तालाब में भरे जल, और चंद्रमा की मिट्टी की तरह संसार में न तो कोई सक्रियता होती और न चेष्टाएँ। विविध सृष्टि रचकर परमात्मा ने प्रेम को ही प्रवाहित किया है। अपनी प्रेम भावनाओं का विकास करके अत्यंत उल्लास, उत्साह, उमंग, क्रियाशीलता, आह्लाद, मैत्री, सेवा, सहयोग का जीवन जीता है। ईश्वर की–आत्मा की प्राप्ति कोई नई बात नहीं है, वह अहर्निश प्रेम भावनाओं में डूबी अंतर्दशा का ही दूसरा नाम है।

प्रेम साधना द्वारा आंतरिक उल्लास का विकास

महात्मा ईसा ने एक स्थान पर कहा है—"परमेश्वर की इच्छा पर मैं अपना सर्वस्व सौंपने को तैयार हूँ। इस दुनिया की कोई वस्तु मैं उससे नहीं चाहता। मैं उसे इसलिए प्यार करता हूँ कि वह प्यार के ही योग्य है। परमेश्वर में क्या–क्या शक्ति और विशेषताएँ हैं, इसे जानने की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं है, क्योंकि मैं उससे कोई सिद्धि या वरदान नहीं चाहता। मेरे लिए इतना ही जानना पर्याप्त है कि वह प्रेममय है। प्रेम उसे प्रिय है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महात्मा ईसा के उपर्युक्त कथन में प्रेम की महिमा स्पष्ट होती है। उस प्रेम की महिमा, जिसने असंख्य विरोधों और अपवादों के होते हुए भी ईसा को एक महान पुरुष तथा संसार का पूजा-पात्र बना दिया। ईसा ने अपने हृदय का वह प्रेम परमात्मा को समर्पित कर दिया। परमात्मा के प्रति मन, वचन और आत्मा से संपूर्ण प्रेम समर्पित कर देने से ईसा की आत्मा का अनिवर्चनीय विकास तथा विस्तार हो गया। उनका ईश्वरपरक प्रेम फैलकर जन-जन पर छा गया, जिससे वे स्वयं सबके प्यारे बन गये। निश्छल तथा निर्विकार प्रेम करने वाला निश्चय ही बदले में प्रेम का प्रतिदान पाता है।

यह सब सत्य है कि प्रेम का प्रतिदान प्रेम से मिलता है। किंतु फिर भी प्रतिदान के लोभ से किया हुआ प्रेम निश्छल तथा निर्विकार नहीं माना जा सकता। उसमें कोई भौतिक स्वार्थ न होने पर भी एक प्रच्छन्न आत्मिक स्वार्थ तो रहता ही है। इतना मात्र स्वार्थ भी प्रेम की निश्चछलता, निर्विकारिता और गरिमा के साथ उसके प्रभाव को भी नष्ट कर देता है, जिसमें दान-ही-दान की भावना होती है, प्रतिदान का कोई भाव नहीं होता। सच्चा प्रेमी अपने प्रेमास्पद से किसी प्रकार की आशा, आकांक्षा नहीं रखता। वह तो केवल देना ही चाहता है, लेना नहीं। सच्चा प्रेमी दान में ही प्रतिदान का आनंद और संतोष प्राप्त कर लेता है। वह स्वयं आत्म तुष्ट और परिपूर्ण होता है। उसको अपने प्रेमास्पद का हित ही अपना हित, उसका हर्ष अपना हर्ष और उसका सुख अपना सुख अनुभव होता है। जिसे दान में सुख प्राप्त होगा, वह प्रतिदान के लिए लालायित ही क्यों होगा?

जब कोई व्यक्ति यह कहता है कि वह अमुक व्यक्ति को प्रेम करता है तो सुनकर बड़ी प्रसन्नता होती है। विचार आता है कि यह व्यक्ति प्रेम की अनुभूति से ओत-प्रोत कितना भाग्यवान है। यह प्रेमी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है जो किसी को प्रेम करता है। इस प्रकार इसने अपने जीवन में दुर्लभ आत्मशांति तथा आत्म संतोष की व्यवस्था कर ली है। किंतु वही व्यक्ति जब यह कहता सुना जाता है कि उसे उसके प्रेम का प्रतिदान नहीं मिला, इसका उसे दु:ख है तो सहसा ही उस पर तरस आने लगता है और ऐसा भान होता है कि यह तो बड़ा अभागा है। प्रेम का व्यवसाय करना चाहता है। प्रेम का प्रतिदान चाहने वाले प्रेम के व्यवसायी ही तो होते हैं। जहाँ जिस स्थान पर, जिस विषय में लेने और देने की भावना होती है, वहाँ उस विषय को व्यवसाय ही माना जाएगा।

व्यवसाय भावना रखने वालों का प्रेम व्यापार में असफल होना अनिवार्य है। उसकी असफलता को स्वयं परमात्मा भी नहीं रोक सकता। जुए की बाजी की तरह प्रेम का दाँव लगाने वाले उस अमृत से उसी प्रकार वंचित रहते हैं, जैसे जुआरी संपन्नता से। यह आवश्यक नहीं कि जुआरी जो दाँव लगाए, वह उसके पक्ष में ही सामने आए। और यदि कभी वह पक्ष में आ भी जाता है तो फिर किसी दाँव पर विपक्ष चलता है। और इस प्रकार उसकी स्थिति असफल तथा अभावपूर्ण ही बनी रहती है।

जो प्रतिदान की लालसा और व्यावसायिक भावना से प्रेम करता है, वह वास्तव में किसी पर मायाजाल फेंकता है। यह आवश्यक नहीं कि कोई उसके माया-जाल में फँस ही जाए। और यदि कोई फँस भी जाता है तो शीघ्र ही वास्तविकता खुल जाती है और तब जीवन में कसक और काँटों के सिवाय कुछ शेष नहीं रह जाता। प्रतिदिन की भावना से दूषित व्यावसायिक प्रेम जीवन के लिए विष से भी अधिक भयानक होता है।

प्रेम के अमृत से संतुष्ट प्रेमी संसार के सारे दु:ख-द्वंद्वों से मुक्त हो जाता है। उसका मन संपूर्ण रूप से अपने प्रेमास्पद में तल्लीन रहने से उसे संसार के दु:ख-द्वंद्व अनुभव ही नहीं होते और अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेमास्पद के लिए तो वह विपत्ति के पहाड़ भी अपने ऊपर ले सकता है। परमात्मा के सच्चे भक्त उसके प्रेम के सम्मुख मोक्ष-सुख को भी तुच्छ समझते हैं। वह प्रार्थना करता है, "हे प्रभु! इस संसार में जो भी दुःख-दर्द मौजूद हैं, जो भी कष्ट और विपत्तियाँ वर्तमान हैं, मैं उनसे जरा भी नहीं डरता। इस दुनिया के सारे पाप, अभिशाप, जो मेरे भाग्य में लिखे हैं, मैं उनका प्रसन्नता से भोग करने को तैयार हूँ। उनका पूरा दंड पाने को प्रस्तुत हूँ और तुझसे उनमें जरा भी रिआयत नहीं चाहता। मैं तुझसे किसी प्रकार की सिद्धि, समृद्धि भी नहीं चाहता और न तुझसे धन, स्वास्थ्य, सौंदर्य, बुद्धि आदि संपदाएँ ही माँगता हूँ। न मैं मुक्ति अथवा स्वर्ग के लिए तेरे प्रति याचना करता हूँ। मैं क्षमा का भी आकांक्षी नहीं हूँ। मैंने जो कर्म बोये हैं, उनका फल काटने में जरा भी संकोच नहीं है, मैं जो कुछ अच्छा-बुरा हूँ, मुझे रहने दें। मैं तुझसे कुछ नहीं चाहता। हाँ यदि मुझको आकांक्षा है तो यह कि तू मुझको अपने से प्रेम करने दे। प्रेम के लिए प्रेम और केवल निष्काम प्रेम। इसमें ही मेरे जीवन की सार्थकता है और सफलता भी। हे प्रभु ! तू मुझे अपने से ही जी भर प्रेम करने दे। बस।"

जो सच्चे प्रेम का अमृत पाकर संतुष्ट हो जाता है, उसे संसार के मिथ्या भोगों की कामना भी नहीं रहती। जो लोग वासना से प्रेरित आकर्षण को प्रेम कहते हैं, वे प्रेम का वास्तविक अर्थ ही नहीं समझते। वासनाजन्य आसक्ति को प्रेम मानना एक प्रकार से आत्म-प्रवंचना ही है। प्रेम का स्तर आत्मा है और वासना का संबंध शरीर से है। शरीर नश्वर है, इसलिए उनसे संबंधित सारे विषय भी नश्वर हैं। शरीर नष्ट हो जाने पर भी प्रेम भावना का विनाश नहीं होता। आगामी जन्म में प्रेमी अपने प्रेमास्पद को पुनः पा लेता है और उसी चिरंतन आनंद में निमग्न रहने लगता है। किन्हीं भी लोगों में इस जन्म से प्रेम अथवा भक्ति की तीव्रता देखी जाती है, वह उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी जन्म की उपलब्धि हो यह आवश्यक नहीं। प्रेम की परंपरा जन्म-जन्मांतर तक चलती रहती है। उनकी पूर्णता की प्राप्ति तभी होती है, जब प्रेम और प्रेमास्पद की आत्माएँ परस्पर मिलकर एक हो जाती हैं।

प्रेम आत्मा का विषय है, शरीर का नहीं। इसलिए भोग-वासना के आकर्षण को प्रेम मान बैठना उचित नहीं। भोग-वासना के दोष से भी प्रेम को मुक्त ही मानना चाहिए। आत्मा का विषय होने से प्रेम आत्मा की तरह ही अभोग्य है। भोग शरीर का विषय है, जिस आकर्षण में भोग-वांछा का अनुभव हो वहाँ समझ लेना चाहिए कि वास्तविक प्रेम नहीं है। सच्चे और आत्मिक प्रेम में वासना भोग, आसक्ति, मोह, संयोग-वियोग, पीड़ा कसक अथवा दुःख, शोक आदि विकार नहीं होते। वह तो सर्वथा आत्मा की ही तरह विकार रहित और परिवर्तन से परे होता है। आत्मिक प्रेम का धनी व्यक्ति अपने प्रेमास्पद को निरंतर अपनी आत्मा में ही पाता रहता है।

शारीरिक संयोग-वियोग उसके लिए कोई महत्त्व नहीं रखते। सच्चा प्रेमी अपने प्रेमास्पद को संयोग की अवस्था में भी अपने भीतर ही देखता और सुखी होता है और वियोग की अवस्था में भी अपने अंदर देखता और सुख पाता है। शरीर से दूर हो जाने पर भी सच्चे प्रेमी को प्रेमास्पद का वियोग अनुभव नहीं होता। जो भी अपने प्रेमास्पद के शारीरिक संयोग-वियोग में सुखी अथवा दुखी होता है, उसे समझ लेना चाहिए कि उसका प्रेम आत्मिक नहीं है। वह अपने प्रेमी से शारीरिक स्तर पर ही संबंधित है।

किसी के प्रति सच्चे होने का लक्षण यह भी है कि प्रेमी को अपने प्रेमास्पद के दोष भी दोष रूप में नहीं दीखते। त्रुटियाँ भी अप्रिय नहीं लगती। ऐसा इसलिए नहीं होता कि अमुक-से-अमुक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का गहरा संबंध होता है अथवा किसी को प्रेमास्पद हीन होना सह्य नहीं होता। यह इसलिए होता है कि प्रेम-प्राण मनुष्य योगी के समान होता है। वह बहुधा गुण-दोषों से मुक्त होता है। प्रेम जब अपनी चरमावधि पर पहुँच जाता है, तब केवल प्रेमास्पद ही किसी की समदृष्टि अथवा गुण-दृष्टि का विषय बन नहीं जाता बल्कि सच्चा प्रेम संसार के जीव मात्र ही उसकी गुण दृष्टि के विषय बन जाते हैं। सच्चा प्रेम संसार में जीव मात्र के लिए एक समान दृष्टि का विकास कर देता है। इसके दो कारण हैं—एक तो यह कि प्रेम स्वभावतः ही मनुष्य की आत्मा का विकास सार्वभौम आत्मीयता में कर देता है। दूसरे प्रेमी को संसार के अणु-अणु में अपने प्रेमास्पद के ही दर्शन होते रहते हैं। इसलिए उसका किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु में दोष-दुर्गुण नहीं दीखते।

प्रेम एक महान योग है। इसे धर्मशास्त्रों तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रेमयोग के नाम से भी कहा गया है। जिसने सत्य-प्रेम का अमृत प्राप्त कर लिया अथवा जिसने उपाय, अभ्यास अथवा साधना द्वारा अपनी आत्मा में प्रेम का स्फुरण कर लिया है, वह योगी है। उसका प्रेम योग न केवल संसार के दुःख दर्दों से ही अपने साधक को मुक्त रखेगा बल्कि उसे उस गति का भी अधिकारी बना देगा जो योगियों की निश्चित एवं नैसर्गिक उपलब्धि है।

जो संसार में किसी एक को सच्चे रूप में प्रेम करेगा, स्वभावतः उसे संसार के सारे व्यक्तियों से प्रेम की अनुभूति होने लगेगी। बहुत बार लोग समझते हैं, कि उन्हें अपनी पत्नी तथा बच्चों से बड़ा गहरा प्रेम है। लोगों का ऐसा समझना गलत भी नहीं होता। उन्हें अपनी पत्नी तथा बच्चों से प्रेम होता भी है। वे उनकी बुराइयों की ओर से निरपेक्ष हो जाते हैं। उनके लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करते हैं और बड़े से बड़ा बलिदान देने में भी संकोच नहीं करते। उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं। अपने आप कष्ट उठाकर उनको आराम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहुँचाते हैं—यह सब लक्षण देखकर आभास हो सकता है कि अमुक व्यक्ति को अपनी पत्नी तथा पुत्रों से बड़ा प्रेम है। किंतु वास्तव में ऐसा होता नहीं।

पत्नी तथा बच्चों के प्रति लोग जिस अनुभूति का अनुभव करते हैं, वह प्रेम न होकर मोह होता है। मोह में भी आत्मीयता का अंश कम नहीं होता। किंतु उनकी वह आत्मीयता, स्वार्थ अथवा अपनेपन की संकीर्णता से आध्यात्मिक स्तर की न होकर सांसारिक स्तर की होती है। अपने बच्चों के प्रति प्रेम में उन पर जान देने वाले, उनके दोषों को दृष्टिगोचर न करने वाले बहुधा दूसरों के बच्चों को जरा भी नहीं चाहते। उनका एक साधारण-सा दोष भी वे क्षमा नहीं कर पाते। यदि उनको अपने बच्चों से सच्चा और आत्मिक प्रेम होता तो निश्चय ही उन्हें अन्य बच्चे भी अपने बच्चों के समान ही प्रिय होते। वे उनके लिए भी त्याग और बलिदान कर सकते और उसमें वही संतोष पाते, जो अपने बच्चों के प्रति करने में पाते हैं। प्रेम आत्मा का विषय है।

आत्मिक क्षेत्र में अपना-पराया, अच्छा-बुरा अथवा मेरा-तेरा आदि की संकीर्णता नहीं होती। मनुष्य की आत्मा, संकीर्णता, स्वार्थ तथा निष्कृष्टता से सर्वथा परे हैं। वह आत्मा का अंश है, उसका स्वरूप है। अत: उसी की तरह सारे संसार को अपना आत्मीय ही समझता है। सच्चे प्रेमी में परमात्मा की तरह ही व्यापकता, विस्तार तथा नि:स्वार्थता आ जाती है और वह संपूर्ण जड़-चेतन में एकात्म-भाव का अनुभव करने लगता है। निस्संदेह जिसने प्रेम के उस पावन तत्त्व को प्राप्त कर लिया है, वह बहुत बड़ा भाग्यवान और जीवन-मुक्त योगी के समान है।

प्रेम का अमृत और उसका प्रतिदान

किसी मनुष्य के पास दूसरे को देने योग्य कोई सबसे अधिक उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण वस्तु हो सकती है तो वह है प्रेम। यों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्थिक या बौद्धिक सहायता देकर भी किसी का कुछ उपकार किया जा सकता है, पर उसका लाभ स्वल्पकालीन रहता है, इसलिए उसकी प्रसन्नता भी क्षणभर ही टिकेगी। प्रेम और सद्भाव पाकर आत्मा जितनी प्रसन्नता अनुभव करती है, उतनी और किसी वस्तु से नहीं करती। उपकार करने में जो त्याग करना पड़ता है, उससे कई गुना प्रतिफल तब वसूल हो जाता है जब जिसके साथ उपकार किया गया था वह सच्चे हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता है। प्रेम भावना उपकारी को ही प्राप्त हो सकती है। वैसे संसार में पाप और दुष्टता की तरह प्रेम और सौजन्य भी परिपूर्ण मात्रा में भरा पड़ा है, पर उसे वे लोग प्राप्त नहीं कर सकते, जिनका मन कुटिलता और व्यवहार अनीति से भरा पड़ा है। सज्जनता, सरलता, सचाई और सहृदयता में ही वह गुण है कि सामने वाले पत्थर को भी अपने लिए मक्खन जैसा कोमल बना कर रख दे। सच्चा प्रेम प्राप्त करने के लिए सज्जनता की आवश्यकता है। सज्जन व्यक्ति को कई बार चालाक लोग ठग लेते हैं, पर तो भी उसकी उदारता और भलमानसाहत के प्रति उन्हें नत-मस्तक ही होना पड़ता है। ठगाए जाने पर भी जिसने अपनी सज्जनता को नहीं छोड़ा है, वह किसी भी बलिदानी वीर से कम प्रशंसनीय नहीं है।

जिसके मन में दूसरों के प्रति कोमल भावनाएँ रहेंगी, वे ही दूसरों का स्नेह और सम्मान प्राप्त कर सकेंगे। मतलब के लिए गधे को बाप बनाने की नीति हर कोई जानता है। खुशामद, चापलूसी और भुलावा देने वाली मीठी बोली बोलने की कला को अब बहुत लोग जान गए हैं और दूसरों को उल्लू बनाकर अपना मतलब निकालने के लिए कितने ही लोग इस हथियार का भरपूर प्रयोग भी करते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि हर व्यक्ति की आत्मा स्नेह, सम्मान और सद्भाव की प्यासी है। यदि वे नकली रूप में भी कहीं दिखाई पड़ते हैं तो भी उन्हें लुभाने के लिए उतना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत है। बहेलिये जिस प्रकार दाने डाल कर अपना जाल कबूतरों से भर लेते हैं, मछुए जिस प्रकार आटे की गोली दिखाकर मछलियाँ समेटते रहते हैं, उसी प्रकार नकली प्रेम का प्रलोभन देकर कितने ही ठग दूसरों का सर्वस्व हरण कर लेते हैं। इन हथकंडों के बीच एक ही सत्य छिपा हुआ है, वह यह कि हर व्यक्ति प्रेम का प्यासा है, हर किसी को सद्‍व्यवहार और सज्जनता की प्यास है। यह इतना प्रकट तथ्य है कि नकली प्रेम की विडंबना बना कर वेश्याओं से लेकर प्रपंची ठगों तक सभी ने नकली मधुरता को अपने लिए एक सफलता का व्यवसायिक अस्त्र बनाया हुआ है।

यह तो हुई नकलीपन की बात। असली रूप का आनंद तो इतना उत्कृष्ट है कि एक बूँद के बदले में मनुष्य अपना सर्वस्व निछावर कर सकता है। प्रेम की असफलता में अनेकों आत्महत्या करते हैं। पति-पत्नी के प्रेम संबंध में तो यह बात स्पष्ट ही है। स्त्री-स्त्री और पुरुष-पुरुष में भी प्रेम भाव की गहनता होने पर एक-दूसरे के लिए मर मिटने के अवसर सहज ही आ सकते हैं। निस्संदेह मनुष्य को अपना धन और प्राण प्रिय हैं, पर प्रेम की महानता इतनी ऊँची है कि उसके लिए इन दोनों को भी सहज ही तिलांजलि दी जा सकती है।

यदि सच्चे स्नेह और सच्चे सद्‍भाव की कुछ बूँद मनुष्य को मिलती रहें तो वह रूखी रोटी खाकर और फटे-चिथड़े कपड़े पहनकर अमीरों और रईसों से अधिक आनंद एवं गर्व अनुभव करता हुआ जीवन व्यतीत कर सकता है। परिवार के छोटे दायरे में जिसे धर्म-पत्नी की अनन्यता, बच्चों की श्रद्धा, भाई का विश्वास, बहन की ममता, माता का वात्सल्य, पिता का प्रेम, नौकर की वफादारी प्राप्त है, उसे अगणित समस्याएँ सामने रहते हुए भी अपना जीवन स्वर्गीय शांति से परिपूर्ण दिखाई देगा। फिर जिसके मित्र, स्वजन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिजन, परिचित, संबंधी, व्यवहारी भी ऐसा ही व्यवहार रखने लगें, तब तो कहना ही क्या है। उस जीवन में हर दिशा से आनंद की निर्झरिणी बहती रहेगी।

ऐसी प्रेममयीं—आत्मभाव से परिपूर्ण परिस्थितियाँ प्राप्त कर सकना हर किसी के लिए नितांत सरल और संभव है। दुनिया में हर चीज की कीमत है, यहाँ बिना कीमत चुकाए कुछ भी नहीं मिलता। दूसरों का सम्मान, स्नेह, सद्भाव और सहयोग प्राप्त करने के लिए हमें वही तत्त्व अपने भीतर पैदा करने पड़ेंगे और उनका उपयोग दूसरों के लिए करना पड़ेगा। चुंबक अपने सजातीय लोहे को अपनी तरफ खींचती है। यदि चुंबक में आकर्षण शक्ति न हो तो पास में पड़े हुए लौह कण भी उपेक्षा का भाव दिखाते रहेंगे, उधर अभिमुख होने की कोई चेष्टा न करेंगे।

प्रेम, प्रेम की कीमत पर खरीदा जा सकता है। वह एकांकी भी हो सकता है। एक का सच्चा प्रेम दूसरे को कभी अपने अनुगत बना ही लेता है। बुरे लोगों को भी यदि हम प्यार करने लगें तो उनका सुधार ही होगा। आज नहीं तो कल, हमारे जितना न सही उससे कम, कुछ तो प्रेमभाव उनके मन में उपजेगा और बढ़ेगा ही। सच्चे मन से किया हुआ प्रेम कभी निरर्थक नहीं जाता। उसके द्वारा पत्थर की मूर्तियाँ और कागज के चित्र देवता बन कर हमें आनंद से ओतप्रोत कर सकते हैं तो फिर हाड़-मांस वाला सजीव प्राणी प्रत्युत्तर में सर्वथा प्रेमविहीन कैसे बना रहेगा?

यदि प्रेम के बदले प्रेम का प्रत्युत्तर न भी मिले, अपने को ठगे जाने और घाटे में रहने का अवसर आए तो भी उसकी हानि ही रहेगी। प्रेम की दिव्य अनुभूतियाँ अपने अंतःकरण में जब उठती रहती हैं, तो वहाँ पुष्प-वाटिका की तरह सौंदर्य और सुगंध का साम्राज्य छाया रहता है। उसका आनंद तो अपने को मिलता ही है। आत्मा की सबसे प्रिय अनुभूति प्रेम है, उसका रसास्वादन होते रहने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से आत्म तृप्ति, आत्मसंतोष और आत्मोल्लास का जो हर घड़ी लाभ होता है, उसकी तुलना में यदि कुछ भौतिक हानि उठानी भी पड़े तो वह तुच्छ एवं नगण्य ही मानी जायेगी।

प्रेम की एक-एक बूँद के लिए दुनिया तरस रही है। अनावृष्टि काल में पानी का जैसा अकाल रेगिस्तानों में पड़ता है वैसा ही प्रेम-दुर्भिक्ष आज सर्वत्र छाया हुआ है। प्रेम के नाम पर ठगी, चापलूसी, वासना और शोषण की प्रवंचना तो खूब बढ़ी है, पर सच्चा प्रेम-जिसमें आत्मदान और निःस्वार्थ सेवा का ही समावेश होता है, अब देखने को नहीं मिलता। इस आध्यात्मिक विभूति के अभाव में जीवन नीरस ही बने रहते हैं। सब ओर कुछ खोया-खोया-सा, सब ओर अभाव-अभाव सा ही दिखाई पड़ता है। यदि सच्चे प्रेम के कुछ कण भी किसी को प्राप्त हो जाते हैं तो, सचमुच ही उसके सब अभाव पूर्ण हो जाते हैं।

हमें अपने भीतर सच्चे प्रेम की भावनाएँ जागृत करनी चाहिए, दूसरों को अपना मानना चाहिए, उन्हें आत्मीयता की दृष्टि से देखना चाहिए, फलस्वरूप हम भी सच्चे प्रेम के रसास्वादन से वंचित न रहेंगे। संसार के खेत में अपना प्रेम बीज बखेरते फिरें, तो कोई-कोई पौधा उसका जरूर उगेगा और उसकी सुगंधि से भी हमें आनंद तथा तृप्ति पाने लायक बहुत कुछ मिल जाएगा।

प्रेम और सेवा ही तो धर्म है

शरीर और प्राण मिलकर जिस तरह पूर्ण पुरुष बनता है, धर्म भी उसी तरह बाह्य और आंतरिक दो स्वरूपों में विभक्त है। बाह्य रूप है पूजा-अर्चा, दीप-आरती आदि कर्मकांड, किंतु उसका आंतरिक स्वरूप भावनात्मक है, जिसका निर्माण प्रेम और सेवा से होता है। कर्मकांड के बाह्य साधन निर्जीव-अल्पकालीन और स्थूल होते हैं। शरीर कालांतर में नष्ट हो जाता और मनुष्य 'प्राण' में परिवर्तित हो जाता है। कर्मकांड भी उसी तरह कुछ दिन ही चलता है, आगे तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इससे ऊँची भावनात्मक कक्षा में प्रवेश लेना होता है, जहाँ मनुष्य को प्रेम और सेवा का पाठ पढ़ाया जाता है। धर्म–प्रशिक्षण की परिपूर्णता जीवन को प्रेममय तथा सेवामय बनाने में ही आती है। इनके बिना धर्म मृत है तथा निर्जीव है सेवा और प्रेम से वह अपने सही स्वरूप में स्थिर हो पाता है।

महात्मा गांधी का कथन है, "धर्म का मतलब सत्य अर्थात ईश्वर की प्राप्ति है। धर्म प्रेम का पंथ है, फिर घृणा कैसी, द्वेष कैसा, मिथ्याभिमान कैसा ? मनुष्य एक ओर तो ईश्वर की पूजा करे, दूसरी ओर मनुष्य का तिरस्कार करे, यह बात बनने लायक नहीं।"

मनुष्य दूसरों को नैतिक उपदेश ही देता रहे तो उससे किसी का काम नहीं बनता। समय पर सहायता मिलना, मुश्किलें और कठिनाइयाँ दूर करना उपदेश देने की अपेक्षा अधिक उपयोगी है, इसी से किसी को कुछ ठोस लाभ प्राप्त हो सकता है। यही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

किसी तालाब में एक बालक डूब रहा था। दैवयोग से उसके अध्यापक उधर से गुजरे। बालक को डूबता देखकर सीढ़ियों पर खड़े होकर डाँटने लगे—"क्यों रे ! मैंने तो मना किया था गहरे पानी में नहीं उतरना चाहिए, फिर तू क्यों पानी में कूदा? भले आदमी पहले तैरना सीख लेता, तब गहरे पानी में जाता।" अध्यापक जी न जाने कब तक उपदेश जारी रखते, तभी एक किसान पानी में कूदा और बालक को बाहर निकाल लाया। किसान बोला—"पंडितजी ! उपदेश स्कूल में दिए जाते हैं, यहाँ तो बच्चे को डूबने से बचाने की आवश्यकता थी।"

बेचारे अध्यापक की तरह उपदेशदाताओं की आज भी कमी नहीं है। ऐसे धर्म भी बहुत हैं जिनमें उपदेश और शिक्षाओं से किताबें ही किताबें भरी पड़ी हैं। जगह–जगह धार्मिक सभाएँ भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खूब होती रहती हैं। नाटक, रामलीला आदि के द्वारा भी तरह-तरह की शिक्षाएँ दी जाती रहती हैं, पर सामान्यजनों के लिए उपदेशों का कोई प्रभाव नहीं होता, और तो और पोथीधारी पंडित भी व्यवहारिक तथ्यों का अनुशीलन नहीं कर पाते। इस दृष्टि से तो कबीरदासजी की ही वाणी सत्य और बुद्धिसंगत प्रतीत होती है। उन्होंने लिखा है—

पोथी पढ़ि, पढ़ि जग मुआ पंडित हुआ न कोय।
ढाई आखर प्रेम के पढ़े सौ पंडित होय॥

पुस्तकें पढ़ लेने से ही कोई धर्मनिष्ठ नहीं बन जाता है। सच्चा धर्म तो प्रेम है, जिससे मानव मात्र के दुःखों की अनुभूति होती है। किसी के दुःख में दुःखी न हुआ वह भी कोई इनसान है? उसे तो पाषाण-हृदय ही कहना अधिक उपयुक्त होगा, फिर उसने चाहे जितने ग्रंथों का अवलोकन क्यों न किया हो।

हमारी आँखों के आगे से प्रतिदिन अनेकों प्राणी ऐसे गुजरते रहते हैं, जिन्हें हमारी सहानुभूति की अपेक्षा होती है। भूखे, प्यासे, वस्त्र-विहीन, अशिक्षित, साधन-विहीन हमसे सहयोग की आशा रखते हैं, किंतु कितना कठोर होगा वह मनुष्य, जो इन्हें तनिक भी सेवा नहीं दे सकता। जो 'सेवा' धर्म का सार है उसे ही लोग छोटेपन का चिह्न समझते हैं। परोपकार से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं, दूसरों की सेवा से बढ़कर परमात्मा की सच्ची पूजा और कुछ नहीं सकती।

परमात्मा संपूर्ण विश्व में निवास करता है, उसके लिए एक मंदिर बनवा दिया तो कौन-सा भारी काम कर दिया है? जो असंख्यों जीवधारियों को भोजन देता रहता है, उसके लिए भोग की थोड़ी-सी मिठाई न भी मिले तो भी कुछ हर्ज नहीं। परमात्मा सबको जीवन-दान देता है, उसे क्या भेंट-पूजा चढ़ाकर भी कोई प्रसन्न कर सकता है। उसकी सच्ची पूजा तो सद्व्यवहार है। दीन-दुखियों के रूप में वह अपने भक्तों की सेवा पाने के लिए दर-दर भटकता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे दरिद्र नारायण के रूप में देख सकें, तो सर्वत्र ही आपकी पूजा पाने की वह प्रतीक्षा करता हुआ मिलेगा। पीड़ित और पिछड़े हुए मनुष्य के लिए प्रेम और सद्‌भावनापूर्वक कुछ सहयोग दे दिया जाय तो उससे अपने को जो आंतरिक आह्लाद मिलता है, वह परमात्मा का बधाई संदेश नहीं तो और क्या है ? दुखी मनुष्य का आंतरिक आशीर्वाद पाने से जो हृदय में विशालता व प्रसन्नता आती है वही तो परमात्मा की सच्ची अनुभूति होती है। मूल में हैं वे लोग जो परमात्मा की इस सच्ची उपासना से वंचित रहकर केवल कर्मकांड के पीछे पड़े हुए अपने बड़प्पन की डींग हाँकते रहते हैं। सचमुच, जो असहायों के हृदय स्पर्श न कर सका, संसार को सद्‌व्यवहार न दे सका, उसकी उपासना अधूरी है। उसे कभी भगवान मिलेंगे—यह सोचना भी गलत है।

परमात्मा से सच्चे हृदय से जो प्रीति रखते हैं उन्हें सृष्टि के प्रत्येक प्राणी में उन्हीं की छाया दिखाई देती है। क्या ऊँचा क्या नीच! सारा संसार उन्हीं से ओत-प्रोत हो रहा है। छोटे-बड़े ऊँचे-नीचे का भेदभाव परमात्मा के प्रति अन्याय है। सर्वव्यापी प्रभु को समदर्शी पुरुष ही जान पाते हैं। जो प्राणिमात्र को प्रेम की दृष्टि से देखता है वही ईश्वर का प्यारा है। अपने पत्नी-बच्चों, रिश्तेदारों तक ही प्रेम को प्रतिबंधित रखना स्वार्थ है। प्रेम का क्षेत्र असीम है, अनंत है। उसे प्राणीमात्र के हृदय में देखना ही ईश्वर ही ईश्वर-निष्ठा का सबूत है। वह कभी किसी को अप्रिय नहीं कह सकता, किसी को दुखी देखकर उसका कलेजा आँखों में उतर आता है। उसने तो सबमें ही अपने राम को रमा हुआ देख लिया।

सेवा और भक्ति वस्तुतः दो वस्तुएँ नहीं हैं। वे एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे पर आश्रित हैं। प्रेम जब मन और वाणी से उतरकर आता है तो उसे सेवा रूप में देखा जाता है। सच्चा प्रेमी वह है जो केवल शब्दों से ही मधुरता न टपकाता रहे, वरन् अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेमी के दुःख-दरद में कुछ हाथ भी बटाए। कर्तव्य पालन में कष्ट स्वाभाविक है। कष्ट को उपेक्षित करके भी जो कर्तव्य पालन कर सकता हो सच्ची सेवा का पुण्य फल उसे ही प्राप्त होता है। माता अपने बेटे के लिए कितना कष्ट सहती है, पर बदले में कभी कुछ चाहती नहीं, यही सेवा का सच्चा स्वरूप है। इसमें देना हीं देना है, पाना कुछ नहीं है। जो अपना सब कुछ न्योछावर कर सकते हों उन्हीं को तो परमात्मा का सान्निध्य सुख प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता है।

परिवार की देख-रेख, स्वजनों के पालन-पोषण की व्यवस्था, बालकों को शिक्षित-विकसित बनाना यह सब सेवा कार्य ही हैं। किंतु यह कार्य करते हुए अहं भावना नहीं आनी चाहिए। निष्काम कर्म को ही सेवा कहेंगे। जिससे अपना स्वार्थ सधता हो वह कभी सेवा नहीं हो सकती।

व्यक्तिगत और पारिवारिक क्षेत्र से ही मनुष्य आगे की उत्कृष्ट सेवा का आधार बनाता है। यह क्षेत्र बढ़कर प्राणिमात्र के हित और त्याग भावना के रूप में फैल जाता है। प्रारंभ काल से जो अहंकार शेष रह गया था, विश्व की सेवा-भावना में वह सब धुल जाता है और मनुष्य प्रेम की पूर्णता का रसास्वादन करने लगता है।

पारमार्थिक सेवा का स्वरूप काम भाव तथा अहंकार के विग्रह से मुक्त होता है। वहाँ केवल अपनी योग्यता का लाभ दूसरों को देना रह जाता है। मैं कुछ नहीं हूँ, जो कुछ है वह है। मैं कुछ नहीं करता, यह सब परमात्मा ही करता है। "मैं" तो एक यंत्र मात्र हूँ, जो उसके इशारे मात्र से काम करता रहता हूँ। मैं व्यक्ति या समाज पर कोई एहसान नहीं करता हूँ, इससे मुझे आंतरिक आनंद प्राप्त होता है। यही मेरी सेवा का मूल्य है, जो परमात्मा मुझे निरंतर देता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म का यही रूप सही है। इस पूर्णता को प्राप्त करने के लिए शेष कर्मकांड अभ्यास मात्र हैं हमें धर्म को कर्मकांडों तक ही बाँधकर नहीं रखना चाहिए। हमारे हृदय में प्रेम और सेवा-भावना का उदय हो तो समझना चाहिए कि हमने धर्म के प्राण को समझ लिया है। तभी हम सच्चे अर्थों में धर्मनिष्ठ कहलाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

आत्म जाग्रति की अमर साधना-प्रेम

वासना का ग्रहण न लगे तो जीवन की संपूर्ण असफलताओं और निराशाओं को प्रेम के पुण्य प्रकाशों में ऐसे ही नष्ट किया जा सकता है जैसे महावट की वर्षा के तुषार से अन्ननाशी पात को। प्रेम से बढ़कर अन्य कोई प्रतिष्ठा इस संसार में नहीं है और इसलिए मनुष्य प्रेम के लिए जीता रहता है।

कीट्स अंग्रेजी का महान कवि थोड़ा-सा जीवन जिया-अभाव और कष्टों में जिया। कहते हैं कीट्स कई-कई दिन की सूखी रोटियाँ रख लिया करता था, वही जीवन-निर्वाह की साधना होती थी। ऐसी परिस्थितियों में कोई व्यक्ति यदि जी सकता है, तो उसे किसी का परम प्रेमास्पद ही होना चाहिए। कीट्स के संबंध में ऐसा ही था। एक संपन्न परिवार की नवयुवती ने उसे प्रेम दिया था। वासना-रहित उस प्रेम ने ही कीट्स की भावनाओं को इतना कोमल और संवेदनशील बनाया था। २१ वर्ष की स्वल्पायु में लिखी उसकी रचनाएँ प्रौढ़ कवियों को भी मात करती चली जाती हैं और जब यही प्रेम उससे छिना, कीट्स की प्रेमिका का विवाह किसी धन-संपन्न परिवार में कर दिया गया तो उसका यही प्रेम परमात्मा के पैरों में समर्पित हो गया। 'द लैमेंट' नामक गीत में उसकी यह संपूर्ण भाव-विभोरता छलक उठी है और उसने 'कीट्स' को अमर बना दिया है।

महाकवि कालिदास जब तक एक भावना-विहीन व्यक्ति थे, तब उन्हें यह भी सुधि न थी कि वे जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काट रहे हैं। किंतु जब विद्योत्तमा के पावन प्रेम ने उसे झकझोरा तो कालिदास का संपूर्ण अंत:करण अँगड़ाई लेकर जाग उठा। महाकवि के गीतों में भगवती सरस्वती को उतरना पड़ा।

कहते हैं एक बार विवाद उठ खड़ा हुआ कि कवि दंडी श्रेष्ठ हैं अथवा कालिदास। जब इसका निर्णय मानवीय-पंचायत न कर सकी, तब दोनों सरस्वती के पास गए और पूछने लगे— 'अंबे!' अब तुम्हीं निर्णय कर दो न, हम दोनों में श्रेष्ठ कौन, बड़ा कौन है? भगवती ने मुस्कराते हुए कहा—"कविर्दंडी ! कविर्दंडी !! कवि तो दंडी ही है।"

महाकवि कालिदास ने भगवती के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण किया हुआ था। उन्हें यह निर्णय पक्षपातपूर्ण लगा। पूछ बैठे—"अंबे! यदि दंडी ही कवि हैं तो फिर मैं क्या हुआ?"

भगवती ने उसी स्नेह से कहा —"तात् ! **त्वं साक्षात् सरस्वती!** "तुम तो साक्षात् सरस्वती ही हो। हम और तुम दोनों अभिन्न हैं।" इस व्याख्यान से महाकवि का मन पश्चात्ताप से भर गया, उन्होंने तब जाना नि:स्वार्थ प्रेम की गौरव गरिमा कितनी महान है!

महाकवि तुलसी के अंत:करण को प्रेम ने ही जाग्रत कर ईश्वर परायण बनाया था। सूरदास तब विल्वमंगल कहे जाते थे, चिंतामणि वेश्या के प्रति निश्छल प्रेम ने ही उनकी आत्मा को झंकृत किया था। प्रेम अध्यात्म की पहली और आखिरी सीढ़ी है, उस पर चढ़कर ही व्यक्ति निराकार सत्ता पर विश्वास की अनुभूति करता है। उसी में मिलकर ही वह अमरत्व का आनंद लूटता है। प्रेम का अभ्यास जीवन में न किया हो, ऐसा एक भी अध्यात्मवादी व्यक्ति नहीं मिलेगा, क्योंकि प्रेम नहीं होगा तो वह कैसे मानेगा कि संसार का अंतिम सत्य पदार्थों में, शरीर और संपत्ति में नहीं, भावनाओं में है, उसकी ही प्यास मनुष्य को चारों ओर दौड़ाती है।

यही प्रेम का भाव जब विस्तृत होने लगता है तो व्यक्तित्व भी उसी क्रम से परिष्कृत होने लगता है। इसके अनेक रूप समाज के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ हमारे संबंधों को प्रगाढ़ और मधुर बनाते हैं। छोटों से प्रेम, स्नेह, समवयस्कों से मैत्री और भ्रातृत्व, पत्नी का प्रेम राग और बड़ों से प्रेम श्रद्धा कहलाता है। यह सब प्रेम रूपी वृक्ष के शाखा, पत्तों और फूल की तरह हैं। ईश्वर के प्रति प्रेम कहलाता है, यह निष्काम और विश्वास की शक्ति से संपन्न होने के कारण महान हो जाता है और जिस अंतःकरण में प्रस्फुटित होता है, उसे भी मजनू, कीट्स, कालिदास, सूर और तुलसी की तरह क्षुद्र से महान बना देता है।

अपने प्रति प्रेम–स्वार्थ से विश्व–परमार्थ की ओर प्रगति करता हुआ, प्रेम–साधक ही विराट् जगत में फैली आत्मा की एकता को हृदयंगम कर सकता है। उसी की ओर संकेत करते हुए गीताकार ने लिखा है—

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनिः।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शिनः॥(६.२९)

अर्थात—यह योगी भूत-प्राणियों में अपनी ही आत्मा समाई हुई देखता है, इसलिए सभी को समभाव से देखता हुआ, यह सभी के साथ प्रेम करता है।

जीवन की सर्वोच्च प्रेरणा प्रेम है। आत्मा का प्रकाश ही है। यह प्रेम की प्रेरणा से काम करना ही ईश्वर की इच्छा का पालन करना है। उसने प्रेम से ही संसार की रचना की है। एक–एक को वह प्रेम से ही जोड़कर रखता है और अंत में स्वयं भी उसी से जुड़ गया है। अन्य सब साधनाएँ जो ईश्वर को प्राप्त करा सकती हैं, देश, काल, स्वस्थिति के अनुसार अदल–बदल सकती हैं, लाभदायक भी हो सकती हैं और हानिकारक भी। किंतु शुद्ध प्रेम की साधना में कहीं भी, किसी भी समय कोई भी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं।

प्रेम आत्मा को झकझोर कर जगा देता है और व्यक्ति को परमार्थवादी बनने को विवश कर देता है। प्रेम का शुद्ध अर्थ है विश्वास। जो निराकार सत्ता में विश्वास करना सीख गया, ईश्वर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उससे दूर नहीं रह सकता। आत्मा को झकझोर कर परमात्मा से मिला देने वाली इसीलिए सबसे सरल, अमर साधना प्रेम है। अध्यात्मवादी प्रेमी हुए बिना ईश्वर की ओर गमन नहीं कर सकता।

प्रेम की परख-प्रेम की परिणति

गंगा का जल शुभ्र, धवल और यमुना का नील वर्ण दोनों जल किसी रजत पात्र में लाकर अलग-अलग रखे जाएँ तो भेद किया जा सकता है— श्याम वर्ण जल यमुना का, श्वेत जल गंगा का-किंतु जब गंगा और यमुना दोनों मिलकर एक हो जाते हैं, तो आगे पहिचान करना कठिन हो जाता है कि गंगा का जल है या यमुना का। प्रेम की परिणति भी ऐसी ही है कि उसमें दो तत्त्वों का तदाकार इस स्थिति तक हो जाता है कि एक सामान्य रस-धारा के अतिरिक्त दोनों में द्वैत का कहीं कोई भाव ही नहीं रहता। यह नहीं पहचाना जा सकता कि इसमें प्रधान इच्छा किसकी है।

दूध और पानी के समान-दो प्रेमियों के हृदय से अलग-अलग प्रस्फुटित दो धाराओं का संगम हो जाता है तो दोनों में कोई अंतर नहीं किया जा सकता है। स्त्री-पुरुष, भाई-भाई, मित्र-मित्र, पिता-पुत्र आदि लौकिक संबंधों में भी प्रेम का प्रवाह ऐसा ही है। जब सर्वथा दो भिन्न धाराओं का एकाकार होता है तो यद्यपि दूसरों की दृष्टि में जोड़े में कितने ही दोष-दुर्गुण होते हैं तो भी उनमें से परस्पर वह दोष तिरोहित हो जाते हैं और केवल गुणों की ही सत्ता शेष रह जाती है। पानी अपनी लघुता को दूध में घुलाकर स्वयं भी दूध हो जाता है। अवगुण प्रेम की दिव्यधारा में घुलकर गुण बन जाते हैं। इसलिए सांसारिक संबंधों की मधुरता के लिए भी प्रेम से बढ़कर कोई अन्य उपादान नहीं।

प्रेम अंत:करण की एक ऐसी उपज है जो शुष्क से शुष्क, कठोर से कठोर और कितने ही दिशा-भ्रांत जीवन को सरल, सहज और प्रकाशवान बना देती है। प्रेम से मधुर संसार में और कुछ नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब ऐसे दो प्राणी मिलते हैं तो आनंद की त्रिवेणी प्रवाहित होने लगती है, किंतु वियोग से क्या वह आकर्षण समाप्त हो जाता है? चुंबक के दोनों ध्रुव दो विपरीत दिशाओं में अनंतकाल से जुड़े हैं, पर उन दोनों का एक ही प्रयत्न है। पुनः मिलन के प्रयत्न में अनादि काल से दोनों ध्रुवों की धाराएँ एक दूसरे को आकर्षित करने में लगी हैं। जमीन की प्रत्येक सूक्ष्म सत्ताएँ अलग-अलग होकर भी अपने प्रेमी के प्रति अद्यतन समर्पित होकर इस सिद्धांत की पुष्टि करती हैं कि विरह में भी प्रेम निखरता है, कम नहीं होता।

अविश्वास को विश्वास में, निंदा को प्रशंसा, तर्क-वितर्क को निष्ठा और औद्धत्य को सेवा में बदल देने की शक्ति केवल प्रेम में ही है। प्रेमी कभी आलस्य में घिरा बैठा रहे, ऐसा हो ही नहीं सकता। अपने प्रेमास्पद की कितनी इच्छाएँ कहीं चुपचाप बैठे पूरी होती हैं? नहीं, तो फिर दोनों ही सक्रिय होते हैं कुछ-न-कुछ जुटाते हैं और एक-दूसरे को देते हैं। परस्पर आदान-प्रदान की यह धारा ही तो समस्त चेतना का आधार है। जिस दिन वह न रहेगी उस दिन संसार का विराम एक शून्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होगा। प्रेम ही सृष्टि में प्राण और जीवन का आविर्भाव करता है।

कमजोर हो कोई, और उसे अपनी दीनता धोनी हो, तो वह सच्चे हृदय से प्रेम करके परीक्षा कर ले कि उसके हृदय में साहस और हिम्मत का कितना अंबार छिपा पड़ा है। जो कठिन परिस्थितियों में धैर्य नहीं रख सकते, वह सच्चे प्रेमी बनकर जीवन में स्थिरता दृढ़ता और गंभीरता ले आते हैं, प्रेमी ही संसार का सबसे अधिक कष्ट सहिष्णु हो सकता है। वह जानता है कि प्रेम के लिए अपने प्राणों का भी कोई मूल्य नहीं, ऐसा व्यक्ति ही सच्चा साहसी, धीर, कर्मनिष्ठ और संपत्ति वाला हो सकता है। इसीलिए प्रेम को पारस और कल्पवृक्ष कहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम जीवन की इन संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में भी शुष्कता उत्पन्न नहीं करता। यह संघर्ष करते हुए भी वह रसपान करता है, जहाँ भी, जैसी भी स्थिति में रहता हो स्वर्ग अनुभव करता है। ऐसा केवल जीवित वस्तुओं के प्रति प्रेम से होता हो, सो भी नहीं, निर्जीव सत्ता के और आदर्श के प्रति प्रेम में भी वही रस, वही स्वर्गीय अनुभूति और आनंद की हिलोरें लहर मारती हैं।

सरदार भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु ने किसी व्यक्ति से प्रेम नहीं किया था। उनका प्रेम अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने आदर्श से था। २४ मार्च १९३१ को उनको फाँसी होनी थी। किंतु उन्हीं दिनों महात्मा गांधी और वायसराय लार्ड इरविन के मध्य वार्ता होने को थी, उसमें उनकी फांसी को रोकने के लिए भी जोर डाला जा रहा था। कुछ ब्रिटिश अधिकारियों ने द्वेषवश २४ मार्च के बजाय २३ को ही फांसी दिला दी। उस समय का दृश्य स्मरण करें तो पता चले कि आदर्शों के प्रति प्रेम की चमक भी राई-रत्ती कम नहीं होती।

उस दिन एकाएक समय से पहले ही इन कैदियों को कोठरियों बंद कर दिया। लाहौर सेंट्रल जेल के दरोगा श्री शेख मुहम्मद अकबर के आँसुओं ने इन्हें सूचना दे दी थी कि फाँसी आज ही होगी। तीनों कैदी पास की कोठरियों में थे, एक की आवाज दूसरे तक पहुँच सकती थी। राजगुरु ने भगतसिंह को पुकारकर कहा 'मुबारक हो! आज ही विदा होंगे।' इस पर भगतसिंह बोले—प्यारे मित्र! सुना है आज मकतल में हमारा इम्तहाँ होगा। इन शब्दों में जो मस्ती थी वह जेल के अधिकारियों को भी रुला देती थी और उनमें देश-प्रेम पैदा कर देती थी। उस दिन इन्होंने रसगुल्ले मँगाकर खाए। जेलर यह भी चाहता था कि उन्हें कोई बाहर निकाल ले जाए, वह किसी प्रकार संघर्ष न करता, इन तीनों वीरों को उसकी सूचना भी दे दी गई, पर उन्होंने बाहर निकलने से इनकार कर दिया। उनने माँग की तो कुल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतनी कि जब फाँसी लगने का समय हो तो उससे १० मिनट पूर्व बता दिया जाय कि वे अपनी भारत माता की जय बोल सकें। ऐसे ही देश-प्रेम के दीवाने ऐसी ही मस्ती भरी आवाज में जय-जयकार करते हुए फाँसी के तख्ते पर झूल गए।

प्रेम, वाणी-रहस्य को पवित्र करने वाली सर्वव्यापी सत्ता है। उसमें सचाई होती है, आदर्श होते हैं, आग्रह होता है और होती है हृदय की विशालता, जो न केवल अपने प्रेमी के लिए श्रद्धावनत करती है, वरन् संपूर्ण चेतना में ही उसे दिव्य रस की अनुभूति कराने लगती है। उसे सब कुछ **सीय राममय** दिखाई देने लगता है। भावनाओं की तन्मयता जो हृदय को धोकर साफ कर दे, वही तो प्रेम है। ऐसे प्रेम के साधक के लिए न जप आवश्यक है और न तप। व्रत, नियम तो उसके लिए है, जिसके हृदय में राग-द्वेष विद्यमान हों। प्रेम जीवन की संपूर्ण कलुषताओं को धो देता है, दुर्वासनाओं पर नियंत्रण करके चित्त को निर्मल बना देता है। इसलिए प्रेम सर्वोत्तम योग है, वह साधारण मनुष्य को महान बना देता है।

जहाँ प्रेम की चर्चा हो पर यह गुण न हो, वहाँ प्रेम नहीं वासना, योग नहीं भ्रम समझना चाहिए। ऐसे प्रेम के भुलावे में न आए । जो प्रेम अपने अंतःकरण के द्वेष-दुर्गुणों को उसी प्रकार गुणों में बदल दे जिस प्रकार गंगा के जल में विलीन हुआ जमुना जल; वही प्रेम सच्चा सार्थक और अभ्यास के योग्य है—वह ऐसा अमृत है जिसे पीकर मनुष्य अमर हो जाता है।

तुलसी प्रेम पयोधि की ताते माप न जोख

मंदिर पहाड़ की चोटी पर था। फिर भी दर्शनार्थी ऊपर जा रहे थे। "दर्शन करना अवश्य है—" इसलिए लोग बराबर चढ़ाई चढ़े जा रहे थे। एक महात्माजी भी थे, वह भी भगवान की मूर्ति के दर्शनों के लिए ऊँची-नीची घाटी चढ़ते जा रहे थे, पर थकावट के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका बुरा हाल था, इतनी चढ़ाई कैसे पार होगी, यह वे समझ नहीं पा रहे थे। बार-बार थककर बैठ जाते थे। भगवान के मिलन में आनंद है, तो उसकी साधना में आनंद क्यों नहीं? उनके मन में एक तर्क उठा—इस तर्क ने उनका मन ढीला कर दिया।

पीछे मुड़कर देखा तो एक आठ-नौ वर्षीया बालिका भी पहाड़ की चढ़ाई चढ़ रही थी। उसकी पीठ पर दो वर्ष का एक बालक था, तो भी उनके मुख मंडल पर थकावट का कोई चिह्न नहीं था। हँसमुख बालिका कभी बच्चे को थपथपाती, चूमती, चाटती और कभी नाराज सी होकर उससे बातचीत करती। बच्चा उसे शिकायत वाली मुद्रा में देखता तो बालिका कहती 'बुद्धू' और हँसती हुई फिर दुगने उत्साह से चढ़ाई चढ़ने लगती।

मन तो विचारों का भांडारागार है, अभी थोड़ी देर पहले तर्क उठा था, अब वह कुतूहल में बदल गया। मेरे पास कोई बोझा नहीं, शरीर भी पुष्ट है, फिर भी थकावट और इस नन्हीं-सी बालिका की पीठ पर सवारी है, तो भी उसके मुख पर थकावट का कोई चिन्ह नहीं। उन्होंने पूछा—बालिके! तुम इतना बोझ लिए चल रही हो, थकावट नहीं लगी क्या?

"बोझ नहीं है बाबा!" लड़की ने महात्मा को चिढ़ाने वाली बात बनाकर कहा—यह मेरा भाई है, देखते नहीं, इसके साथ अठखेली करने में कितना आनंद आता है—यह कहकर, बालिका ने शिशु के कोमल कपोल चूमे और एक नव स्फूर्ति अनुभव करती हुई फिर चढ़ाई चढ़ने लगी।

महात्मा जी ने अनुभव किया यदि भगवान को प्राप्त करने की साधना कठोर और कष्टपूर्ण लगती है तो यह दोष भगवान का नहीं, जीवन नीति का है। वस्तुतः प्रेम यदि लौकिक हो तो भी निश्चल वासना रहित और पवित्र जीवन बना रहता है कठिन कर्तव्य और कठिनाइयों से भरे जीवन में भी मस्ती का आनंद लिया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही नहीं व्यक्तित्व के निर्माण और पूर्णता का लाभ भी इसी तरह हँसते-थिरकते प्राप्त किया जा सकता है। तभी तो अपने जीवन में इस सत्य की गहन अनुभूति के बाद प्रसिद्ध वैज्ञानिक जूलियस हक्सले ने लिखा है—व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए सौंदर्य पर प्रेम, सुंदर व आश्चर्यजनक वस्तुओं के प्रति प्रेम आवश्यक है, क्योंकि उससे भावी जीवन में आगे बढ़ने की भावना जाग्रत होती है।

भारतीय संस्कृति में मोह और आसक्ति, वासना और फलाशा की निंदा की गई है, पर ऐसा कहीं नहीं बताया गया कि मनुष्य लौकिक कर्तव्यों का परित्याग करें। ईश्वर दर्शन, आत्मसाक्षात्कार, स्वार्थ और सद्‌गति, पुण्य और परमार्थ मानव-जीवन के अंतिम लक्ष्य हैं, अपूर्णता से पूर्णता की की ओर तो उसे बढ़ना ही चाहिए। उसे लौकिक हितों से बढ़कर माना जाय तो भी कोई बुरा नहीं, पर यह मानकर कि सांसारिक जीवन में कठिनाइयाँ -ही-कठिनाइयाँ, अवरोध-ही-अवरोध, भार-ही-भार हैं, उसे छोड़ना या उसे झींकते हुए जीना भी बुरा है, बुराई ही नहीं, एक पाप और अज्ञान भी है, क्योंकि ऐसा करके वह अपने रचयिता के 'अमंगल' होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। संसार में भी जो पाप विकार और ध्वंसात्मक वृत्तियाँ पनपीं—वह इसी 'नासमझ' का परिणाम है, जो वहाँ से प्रारंभ होती हैं, जहाँ से मनुष्य 'प्रेम' पदच्युत होता है। प्रेम एक शक्ति है जो उच्च आकांक्षाओं की पूर्ति करता है और यदि उसे कुपित न होने देकर जीवन में विचारों और भावनाओं के समावेश द्वारा पवित्र बनाए रखा जा सके तो पता चले कि प्रेम सृष्टि का सबसे अनोखा निर्माण है। मनुष्य तुच्छ-से-तुच्छ वस्तुओं तक में अपना सच्चा प्रेम आरोपित करके सुख और सद्‌गति प्राप्त कर सकता है।

लौकिक सुख का सच्चा आधार प्रेम है। नम्रता के साथ गर्व, धैर्य के साथ शांति, स्वार्थ के साथ आत्म त्याग और हिंसा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावनाओं को भी कोमलता में बदल देने की शक्ति प्रेम में है। यह इंद्रिय वासनाओं को प्रसन्नता एवं पूर्ण जीवन में बदल सकता है, किंतु आवश्यक है कि प्रेमी का सर्वोच्च लक्ष्य प्रेममय होना ही रहे।

प्रेमास्पद के प्राणों में अपने प्राण, अपनी इच्छा और आकांक्षाएँ घुलाकर व्यक्ति उस 'अहंता' से बाहर निकल आता है जो पाप और पतन की ओर प्रेरित कर ऐसे दिव्य मनुष्य को नष्ट करता रहता है। प्रेमी कभी यह नहीं चाहता कि मुझे कुछ मिले, वरन् वह चाहता है कि अपने प्रेमी के प्रति अपनी निष्ठा कैसे प्रतिपादित हो, इसलिए वह अपनी बातें भूलकर केवल प्रेमी की इच्छाओं में मिलकर रहता है। जब हम अपने आप को दूसरों के अधिकार में डाल देंगे, तो पाप और वासना जैसी स्थिति आवेगी ही क्यों और तब मनुष्य अपने जीवन-लक्ष्य से पतित ही क्यों होगा? सच्चा प्रेम तो प्रेमी की उपेक्षा से भी रीझता है। प्रेम की तो व्याकुलता भी मानव अंतःकरण को निर्मल शांति प्रदान करती है।

मन जो इधर-उधर के विषयों और तुच्छ कामनाओं में भटकता है, प्रेम उसके लिए बाँध देने की रस्सी की तरह है। प्रेम की सुधा पिए हुए मन कभी भटक नहीं सकता, वह तो अपना सब कुछ त्याग करने को तैयार रहता है। जो समर्पित कर सकता है, पाने का सच्चा सुख तो उसे ही मिलता है। प्रेमी को भोग तो क्या स्वर्ग भी आसक्त नहीं कर सकते और परमात्मा को पाने के लिए भी तो यह संतुलन आवश्यक है। प्रेम-साधना द्वारा मनुष्य लौकिक जीवन का पूर्ण रसास्वादन करता हुआ पारमार्थिक लक्ष्य पूर्ण करता है। इसलिए प्रेम से बड़ी मनुष्य जीवन में और कोई उपलब्धि नहीं—

चढ़त न चातक चित कबहुँ, प्रिय पयोद के दोष।
"तुलसी" प्रेम पयोधि की, ताते माप न जोख॥

स्वाति नक्षत्र के बादल चातक के मुख पर क्या चुपचाप जल बरसा जाते हैं ? नहीं, वे गरजकर कठोर ध्वनि करते और डराते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पत्थर ही नहीं कई बार तो रोष में भरकर बिजली भी गिराते हैं, वर्षा और आंधी के थपेड़े क्या कम कष्ट देते हैं ? किंतु चातक के मन में अपने अपने प्रियतम के प्रति क्या कभी नाराजी आती है ? तुलसीदास ने बताया कि यह प्रेम की ही महिमा है कि चातक पयोद के इन दोषों में भी उसके गुण ही देखता है।

अमंगल-सी दीखने वाली भगवान की सृष्टि में न कठिनाइयों के झंझावत कम हैं न अभाव और कष्ट-पीड़ाएँ, एक-एक पग भारी है और लक्ष्य प्राप्ति का बाधक है, पर यह केवल उनके लिए है जिन्होंने प्रेम तत्त्व को जाना नहीं। प्रेम तो समुद्र की तरह अगाध है, उसमें जितने गहरे पैठा जाए उतने ही बहुमूल्य उपहार मिलते हैं और मानव जीवन को धन्य बनाते चले जाते हैं।

सृष्टि का विकास प्रेम से ही संभव

भले-बुरे, सत्य-असत्य, कल्याण-अकल्याण की तर्क बुद्धि इस संसार में प्राय: हर मनुष्य में समान रूप से पाई जाती है, किंतु कोई ऐसी स्थिर वस्तु दिखाई नहीं देती, जिसे हम प्रत्येक परिस्थिति में सत्य मानते रहें। आज देखते हैं कि अपना एक परिवार है, माँ है, स्त्री है, बच्चे हैं, घर, जमीन, जायदाद सभी कुछ है। इन पर आज अपना पूर्ण स्वामित्व है। क्या मजाल कि इन्हें कोई हमारी मरजी के बिना अपने अधिकार में ले ले। क्योंकि यह हमारी संपत्ति और विभूतियाँ हैं। इसमें कहीं असत्य नहीं, कोई संदेह नहीं। किंतु कल परिस्थितिवश जमीन बेचनी पड़ी, घर गिरवी रख दिया, कौन जाने कब किस प्रियजन की मृत्यु हो जाए। ऐसी दशा में में कोई सत्य वस्तु समझ में नहीं आती है । यह घर किसी का न रहा, अंत में अपना भी न रहेगा। यह संसार परिवर्तनशील है। इसकी प्रत्येक वस्तु प्रतिक्षण अपना स्वरूप बदलती रहती है।

किंतु एक अंतिम सत्य भी है इस संसार में। वह है प्रेम। प्रेम अपने परिजनों पर, विचारों और सिद्धांतों पर, स्वत्व और सम्मान के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रति, देश, राष्ट्र-धर्म और संस्कृति के प्रति व्यक्ति को अगाध प्रेम होता है। इसी के बल पर संसार के सभी क्रिया व्यवसाय चलते हैं। यह सारा संसार व्यवस्थित ढंग से चल रहा है। सभी जानते हैं कि यह संसार मिथ्या है, भ्रम है, किंतु सभी जी रहे हैं, मरने से सभी डरते हैं। सभी जी रहे हैं तो केवल प्रेम के लिए। यह अलग बात है कि उनका प्रेम सांसारिक है, वस्तु या पदार्थ के प्रति है अथवा प्रेमस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए। दिशाएँ दो हो सकती हैं, किंतु आस्था एक है। इसी पर संसार टिका है। इसी से विधि-व्यवस्था भली भाँति चल रही है।

प्रेम मानव जीवन की महान कसौटी है। उससे मनुष्य के दृष्टिकोण, हृदय की विशालता एवं बुद्धि की सूक्ष्मता का पता चलता है। जिसके हृदय में प्रेम का प्रकाश जगमगाता है, वह मनुष्य उत्कृष्ट होता है। मनुष्य शरीर में देवत्व प्राप्त करने का सौभाग्य उन्हें मिलता है जो प्रेम करना जानते हैं। प्रेम मानव जीवन की सर्वोच्च प्रेरणा है। शेष सभी भाव आश्रित भाव हैं। स्वाधीन और सद्गति दिलाने वाली आंतरिक प्रेरणा प्रेम हैं, जिससे संसार की रचना होती है, जीवन समृद्ध बनता हैं और मानव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होती हैं।

प्रेम हृदय की उस पवित्र भावना का शब्द रूप है जो अद्वैत का बोध कराती है। मैं और तुम का विलगाव का भाव वहाँ नहीं होता। इसलिए समष्टिगत विशाल भावना का नाम प्रेम माना गया है। यह विशुद्ध बलिदान है। त्याग और आत्मोत्सर्ग की भावना है, जिसमें मनुष्य अपने हितों का अपने प्रेमी के लिए हवन करते हुए असीम तृप्ति का अनुभव करता है। बदले की भावना से नहीं, वरन् जो केवल प्रेम के लिए प्रेम करता है वही सच्चा प्रेम है।

साधारण तौर पर अपनी प्रेरणा का आधार अपना स्वार्थ होता है। अपने 'स्वं' या 'अहम्' की पूर्ति के लिए सब कुछ करते हैं, भूख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिटाने, शृंगार सजावट करने, महल उठाने, जायदाद जमा करने की संपूर्ण चेष्टाओं के पीछे अपने स्वार्थ काम किया करते हैं। इससे अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति तो होती है किंतु अंतःकरण का वह आध्यात्मिक भाव जाग्रत नहीं होता, जिसमें प्रेम का स्वाद चखा जा सके। यह लेन-देन जीवन का साधारण नियम है। जब हम इससे आगे बढ़ते हैं और लेने के संकीर्ण भाव को समाप्त कर देते हैं तो प्रेम का उदय होता है। इसमें सब देना-ही-देना है। प्रेम का पुरस्कार केवल प्रेम है। और किसी दूसरी वस्तु से इसे खरीदा या बेचा नहीं जा सकता।

मनुष्य का जीवन लक्ष्य निर्धारित करते समय यह ध्यान दिया जाता है कि उसकी स्वाभाविक वृत्तियों की ऐसी व्यवस्था हो, जो उसे उत्थान, अभ्युदय और विकास की ओर अग्रसर करें। इसी को चरित्र-निर्माण कह सकते हैं। यह भाव मनुष्य में तभी आ सकता है जब वह अपने सच्चे स्वरूप को पहचाने और आत्म ज्ञान प्राप्त करें। जब ऐसी प्रक्रिया जीवन में चल पड़ती है तो दीनता और हीनता के बुरे भाव समाप्त होकर आत्मा का प्रकाश दिखाई देने लगता है। उस ज्योति से एक साधारण तत्त्व प्रेम उमड़ने लगता है। इस सुख का एक कण भी जिसे मिलता है उसे चरित्र-निर्माण करते देर नहीं लगती। इसलिए यह कहा जाता है मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्रेम स्वरूप की प्राप्ति है।

यह भाव जितना विस्तृत होता जाता है मनुष्य का व्यक्तित्व भी उसी क्रम से परिष्कृत होने लगता है। आरंभ में यह भाव अपने ऊपर तक रहता है, जो कुछ खाएँ वह हम खाएँ, जो अच्छा हो वह हम पहनें आदि का स्वार्थपूर्ण भावनाओं से मनुष्य अपने को ही जब तक प्राथमिकता देता रहता है, तब तक वह प्रेम की अनुभूति नहीं कर पाता। इसलिए तब तक बड़ी अस्थिरता, चंचलता और अशांति बनी रहती है। धीरे-धीरे इसका परिष्कार होने लगता है। धर्मपत्नी आ जाती है, तो अपने स्वार्थों में कटौती करते हैं। अब प्रेम का प्रादुर्भाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता है। अपनी. व्यष्टि जितनी ही समाप्त होती जाती है उतनी ही प्रेमपूर्ण भावनाएँ बढ़ने लगती हैं। पुत्रों के प्रति, गाँव और समाज, देश और जाति के प्रति, धर्म और संस्कृति के प्रति अपने स्वार्थों का त्याग करते-करते पूर्ण आंतरिक परिष्कार हो जाता है और हम इस योग्य हो जाते हैं कि विश्वात्मा का सान्निध्य सुख प्राप्त कर सकें।

जब यह उत्सर्ग की भावना प्राणि मात्र के प्रति जागृत होने लगती है, तो सच्चे प्रेम की अनुभूति होने लगती है। प्रेम संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। जिसे बड़ी-बड़ी मशीनें, अस्त्र-शस्त्र और बलवान मनुष्य नहीं जीत पाए उन्हें प्रेम की कोमल भावनाएँ जीतने में समर्थ हुई हैं।

महापुरुष ईसा ने लिखा है—"हमें एक-दूसरे प्रेम करना चाहिए, क्योंकि प्रेम ही परमेश्वर है। ईश्वर को वही मानता है जो प्रेम करता है। परमात्मा की उपासना का मूल आधार प्रेम है। जो अपने सजातियों से प्रेम करता है, वही सच्चा ईश्वर भक्त है।"

भगवान कृष्ण ने जिस कर्मयोग की आवश्यकता पर गीता में अधिक बल दिया है उसका आधार भी प्रेम ही है। यह निश्चित बात है कि जब तक स्वार्थपूर्ण भावनाओं का उन्मूलन नहीं होता तब तक विशुद्ध कर्तव्य भावना का उदय नहीं होता। इसलिए जैसे ही हम फल की भावना से रहित होकर केवल कर्तव्य की दृष्टि से काम करने लगते हैं वैसे ही अपने अंतःकरणों में प्रेम की प्रादुर्भाव होने लगता है। प्रेम के बिना कर्म-कौशल संभव नहीं, जो प्रेम की प्रेरणा से हो वही योग है। ऐसा भगवान कृष्ण ने गीता में प्रतिपादित किया है। इन शब्दों से प्रेम के स्वयं योग होने की बात पुष्ट होती है, अर्थात परमात्मा को प्राप्त करने का सबसे सीधा रास्ता और सरल उपाय विशुद्ध प्रेम ही है।

किंतु आत्म-बलिदान का मार्ग कठिन भी उतना ही है। संसार में पुरुष-प्रेम, नारी-प्रेम, देश, जाति या संस्कृति का प्रेम, कोई भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्यों न हो, उसके लिए एक परीक्षा निश्चित है। जो इस परीक्षा में अंत तक धैर्य पूर्वक टिके रहते हैं उन्हें ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है। महापुरुषों ने सदैव ही यह परीक्षा दी है, उन्होंने मार्ग पर बिछे हुए काँटों को भी फूलवत् हँस-हँसकर चुना है। कठिनाइयों, मुसीबतों और आपदाओं को अपनी छाती से लगाया है। तब कहीं जाकर उन्हें महान कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। कृष्ण-प्रेम में मतवाली मीरा को यमुना में फेंका गया, विष दे दिया गया, घर से निष्कासित कर दिया गया किंतु उसकी निष्ठा में राई-रत्ती भर भी कमी नहीं आई। तब कहीं मीरा महान बनी। देश-प्रेम के दीवाने राणा प्रताप जंगलों-जंगल भटके, मिट्टी के बर्तनों में घास की रोटियाँ खाईं, किंतु अकबर की दासता उन्होंने स्वीकार नहीं की। राणा प्रताप इस तितिक्षा पर कसकर धन्य हुए।

इस संसार में आये-दिन लोग जन्म लेते हैं और सैकड़ों की तादाद में रोज मरते रहते हैं, किंतु जिन्होंने सिद्धांतों पर दृढ़तापूर्वक विश्वास किया, जो अपनी आस्थाओं के प्रति सदैव ईमानदार बने रहे, जिन्होंने प्रेम किया और जीवन की आखिरी साँस तब अपने व्रत का निर्वाह किया, उनके हाड़-मांस का तन भले ही नष्ट हो गया हो, पर उनका यश-शरीर युग-युगांतर तक लोगों को प्रेरणा व प्रकाश देता रहता है।

चरित्र का उत्कृष्ट रूप प्रेम है। यह मानवता की सर्वश्रेष्ठ साधना है जिससे आत्मबल प्राप्त होता है। निर्भीकता, दृढ़ता, पवित्रता, त्याग, सत्यनिष्ठा और कर्तव्य-भावना का आधार शुद्ध और पवित्र प्रेम है। इसे अपने जीवन में धारण करने वाला पुरुष मानव न रहकर महामानव और देवता बन जाता है। जाति का जीवन खिल उठता है। ऐसे कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों के बाहुल्य से ही राष्ट्रों के हित फलते-फूलते रहते हैं। प्रेम मानव-जीवन की सार्थकता है। प्रेम-विहीन जीवन तो पशुओं का भी नहीं होता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम एक निर्मल झरना है। उसके प्रवाह में जो भी आ जाता है, वह निर्मल हो जाता है। पात्र और कुपात्र की घृणा जैसे झरने के स्वच्छ प्रवाह में नहीं होती है वैसे ही प्रेमी के अंतःकरण में किसी प्रकार की ईर्ष्या-विद्वेष या घृणा की भावनाएँ नहीं होती। महात्मा गांधी अपने आश्रम में अपने हाथों से एक कोढ़ी की सेवा-सुश्रूषा किया करते थे। इससे उन्हें कभी भी घृणा पैदा नहीं होती थी। प्रेम की विशालता में ऊपर से जान पड़ने वाली मलिनतायें भी वैसे ही समा जाती हैं जैसे हजारों नदियों का कूड़ा-कबाड़ समुद्र के गर्भ में विलीन हो जाता है। प्रेम आत्मा के प्रकाश से किया जाता है। आत्मा यदि मलिनताओं से पतित है तो भी उसकी नैसर्गिक निर्मलता में अंतर नहीं आता। यही समझकर उदारमना व्यक्ति अपनी सहानुभूति से किसी को भी वंचित नहीं करते।

प्रेम साधन या वस्तुएँ नहीं माँगता। धर्मपत्नी को चाहे जिस स्थिति में रखें, वह अपने पति के प्रेम में कम या अधिक की दुर्बल वृत्ति से दूर बनी रहती है। पति की जितनी आय-साधन और परिस्थितियाँ होती हैं, उन्हीं में सच्चा सुख मानती है। जिन दंपतियों में ऐसी भावनाएँ होती हैं, वे अनेकों अभाव रहते हुए भी असीम सुख का अनुभव करते रहते हैं। प्रेम की सच्ची परख भी यही है कि अभाव और अयोग्यता के कारण भी सहृदयता और कर्तव्य भावना में किसी प्रकार का विक्षेप उत्पन्न न हो।

सच कहें तो मानव जीवन का आज तक जो भी विकास हुआ है, वह सब प्रेम का संबल पाकर हुआ है। घृणा और ईर्ष्या-द्वेष के कारण लोगों के दिल-दिमाग बेचैन-उदास और खिन्नमना बने रहते हैं। निर्माण-कर्ता प्रेम है, जिससे विशुद्ध कर्तव्य-भावना का उदय होता है। हम यदि इस भाव को अपने जीवन में धारण कर पाएँ तो अमीरी हो या गरीबी, शहर में रहते हों या गाँव में, मकान पक्का हो अथवा कच्चा, एक ऐसा जीवन जी सकते हैं, जिसे सुखी जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कह सकें। कहते हैं परमात्मा की उपासना से बड़े सुख मिलते हैं। यह सुख प्रेम का ही प्रसाद है। प्रेम की पूजा ही परमात्मा की पूजा है। फिर हम भी प्रेमी ही क्यों न बनें?

प्रेम की आस, प्रेम की प्यास पशु-पक्षियों के भी पास

अल्बर्ट श्वाइत्जर जहाँ रहते थे, उनके समीप ही बंदरों का एक दल रहता था। दल के एक बंदर और बंदरिया में गहरी मित्रता हो गई। दोनों जहाँ जाते साथ-साथ जाते, एक कुछ खाने को पाता तो यही प्रयत्न करता कि उसका अधिकांश उसका साथी खाए। कोई भी वस्तु उनमें से एक ने कभी अकेले न खाई। उनकी इस प्रेम भावना ने अल्बर्ट श्वाइत्जर को बहुत प्रभावित किया। वे प्रातः प्रतिदिन इन मित्रों की प्रणय-लीला देखने जाते और एकांत स्थान में बैठकर घंटों उनके दृश्य देखा करते। कैसे भी संकट में उनमें से एक ने भी स्वार्थ का परिचय न दिया। अपने मित्र के लिए वे प्राणोत्सर्ग तक के लिए तैयार रहते, ऐसी थी उनको अविचल प्रेम-निष्ठा।

विधि की बिडंबना-बंदरिया कुछ दिन पीछे बीमार पड़ी, बंदर ने उसकी दिन-दिन-भर भूखे प्यासे रहकर सेवा-सुश्रूषा की, पर बंदरिया बच न सकी, मर गई। बंदर के जीवन में मानो वज्रपात हो गया। वह गुमसुम जीवन बिताने लगा।

इतर प्राणियों में विधुर विवाह पर प्रायः किसी में भी प्रतिबंध नहीं है। एक साथी के न रहने पर नर हो या मादा अपने दूसरे साथी का चुनाव खुशी-खुशी कर लेते हैं। इस बंदर दल में एक अच्छी बंदरियाँ थी, बंदर हृष्ट-पुष्ट था, किसी नई बंदरिया को मित्र चुन सकता था, पर उसके अंतःकरण का प्रेम तथाकथित मानवीय प्रेम की तरह स्वार्थ और कपटपूर्ण नहीं था, पता नहीं, उसे आत्मा के अमरत्व, परलोक और पुनर्जन्म पर विश्वास था शायद इसलिए उसने फिर किसी बंदर बंदरिया से विवाह नहीं किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर आत्मा जिस धातु का बना है वह प्रेम के प्रकाश से ही जीवित रहता है, प्रेम-विहीन जीवन तो नरक समान लगता है। बंदर ने अपनी निष्ठा पर आँच न आने देने का संकल्प कर लिया होगा, तभी तो उसने दूसरा विवाह नहीं किया, पर प्रेम की प्यास कैसे बुझे? यह प्रश्न उसके अंत:करण में उठा अवश्य होगा, तभी उसने कुछ दिन पीछे ही अपने जीवन की दिशा दूसरी ओर मोड़ दी, प्रेम को सेवा का रूप दे दिया उसने। अभी तक उसने अपनी प्रेयसी बंदरिया को आत्म-समर्पण किया था। अब उसने हर दीन-दुखी में आत्मा के दर्शन करने और सबको प्यार करने का सिद्धांत बना लिया,उससे ही उसे शांति मिली।

बंदर एक स्थान पर बैठा रहता। अपने कबीले या दूसरे कबीले का कोई अनाथ बंदर मिल जाता तो वह उसे प्यार करता, खाना खिलाता, भटक गए बच्चे को ठीक उसकी माँ तक पहुँचाकर आता, लड़ने वाले बंदरों को अलग-अलग कर देता। इसमें तो वह कई बार अति उग्र पक्ष को मार देता था, पर तब तक चैन न लेता जब तक उनमें मेल-जोल नहीं करा देता। उसने कितने ही वृद्ध, अपाहिज बंदरों को पाला, कितनों ही का बोझ उठाया। बंदर की इस निष्ठा ने ही अल्बर्ट श्वाइत्जर को एकांतवादी जीवन से हटाकर सेवा भावी जीवन बिताने के लिए अफ्रीका जाने की प्रेरणा दी। श्वाइत्जर बंदर की इस आत्म निष्ठा को जीवन भर नहीं भूले।

सेंटियागो की धनाढ्य महिला श्रीमती एनन ने पारिवारिक कलह से ऊबकर जी बहलाने के लिए एक भारतीय मैना पाल ली। मैना जब से आई तभी से उदास रहती थी। एनन की बुद्धि ने प्रेरणा दी, संभव है उसे भी अकेलापन कष्ट दे रहा हो, सो दूसरे दिन एक ओर तोता मोल ले लिया। तोता और मैना भिन्न जाति के दो पक्षी पास आ जाने पर परस्पर ऐसे घुल-मिल गए कि एक के बिना दूसरे को चैन ही न पड़ता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रातःकाल बिना चूक मैना तोता को "नमस्ते" कहती। तोता बड़ी ही मीठी वाणी में उसके अभिवादन का कुछ कहकर उत्तर देता। पिंजड़े पास-पास कर दिए जाते दोनों में वार्ताएँ छिड़तीं, न जाने क्या मैना कहती, न जाने क्या तोता कहता, पर उनको देखकर लगता ये दोनों बहुत खुश हैं। दोनों का प्रेम प्रतिदिन प्रगाढ़ होता चला गया, ये चोंच से दबाकर अपनी चीजें बाँट कर खाते।

कुछ ऐसा हुआ कि श्रीमती एनन की एक रिश्तेदार का तोता मर गया, ये जिद करके उसे माँग ले गईं। ठीक उसी दिन मैना बीमार पड़ गई और चौथे दिन सायंकाल ५ बजे नश्वर देह त्याग दी। तोता कृतघ्न नहीं था। वह बंदी था, चला तो गया, पर आत्मा को बंदी बनाना किसके लिए संभव है। वह भी मैना की याद में बीमार पड़ गया और ठीक चौथे दिन सायंकाल ५ बजे उसने अपने प्राण त्याग दिए। पता नहीं दोनों की आत्माएँ परलोक में कहीं मिलीं या नहीं, पर इस घटना ने श्रीमती एनन का स्वभाव ही बदल दिया। अब उनके स्वभाव में सेवा और मधुरता का ऐसा प्रवाह फूटा कि वर्षों से पारिवारिक कलह में जलता हुआ दाम्पत्य सुख फिर खिल उठा। पति-पत्नि में कुछ ऐसी घनिष्ठता हुई कि मानो उनके अंतःकरण में तोता और मैना की आत्मा ही साक्षात उतर आई हों। उनकी मृत्यु भी वियोगजन्य परिस्थितियों में एक दिन ही, एक ही समय हुई।

तोता, मैना, बंदर छोटे-छोटे सौम्य स्वभाव जीवों की कौन कहे। प्रेम की प्यास तो भयंकर खूँख्वार जानवरों के हृदय में भी होती है। एफ० कुवियर के एक मित्र को भेड़िया पालने की सूझी। कहीं से एक बच्चा भेड़िया मिल गया। उसे वह अपने साथ रखने लगे। भेड़िया कुछ ही दिनों में उनसे ऐसा घुल-मिल गया मानो उनकी मैत्री इस जन्म की नहीं कई जन्मों की हो।

कुछ ऐसा हुआ कि एक बार उन सज्जन को किसी काम से बाहर जाना पड़ गया। वह भेड़िया एक चिड़ियाघर को दे गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेड़िया चिड़ियाघर आ गया, पर अपने मित्र की याद में दुखी रहने लगा। मनुष्य का जन्म जात बैरी मनुष्य के प्रेम के लिए पीड़ित हो यह देखकर चिड़ियाघर के कर्मचारी बड़े विस्मित हुए। कोई भारतीय दार्शनिक उनके पास होता और आत्मा की सार्वभौमिक एकता का तत्त्वदर्शन उन्हें समझाता तो संभव था किए वे भी जीवन को एक नई आध्यात्मिक दिशा में देखने में समर्थ होते। उनका विस्मय चर्चा का विषय भर बनकर रह गया।

भेड़िये ने अपनी प्रेम की पीड़ा शांत रहने के लिए दूसरे जीवों को ओर दृष्टि डाली। कुत्ता-भेड़िया का नंबर एक का शत्रु होता है, पर आत्मा किसका मित्र, किसका शत्रु, क्या तो वह कुत्ता क्या भेड़िया-कर्मवश भ्रमित अग-जग आत्मा से एक है। यदि यह तथ्य संसार जान जाए तो फिर क्यों लोगों में झगड़े हों, क्यों मन-मुटाव, दंगे-फसाद, भेदभाव, उत्पीड़न और दूसरों से घृणा हो। विपरीत परिस्थितियों में भी प्रेम जैसी स्वर्गीय सुख अनुभूति आत्मदर्शी के लिए ही संभव है, इस घटना का सार-संक्षेप भी यही है। भेड़िया अब कुत्ते का प्रेमी बन गया। उसके बीमार जीवन में भी एक नई चेतना आ गई। प्रेम की शक्ति कितनी वरदायक है कि वह निर्बल और अशक्तों में भी प्राण की गंगोत्री पैदा कर देती है।

दो वर्ष पीछे मालिक लौटा। घर आकर वह चिड़ियाघर गया अभी वह वहाँ के अधिकारी से बातचीत कर ही रहा था कि उसका स्वर सुनकर भेड़िया भगा चला आया और उसके शरीर से शरीर जोड़ कर खूब प्यार जताता रहा। कुछ दिन फिर ऐसे ही मैत्रीपूर्ण जीवन बीता।

कुछ दिन बाद उसे फिर जाना पड़ा। भेड़िये के जीवन में लगता है भटकाव ही लिखा था, फिर उस कुत्ते के पास जाकर उसने अपनी पीड़ा शांत की। इस बार मालिक थोड़ा जल्दी आ गया। भेड़िया इस बार उससे दूने उत्साह से मिला, पर उसका स्वर शिकायत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भरा था, बेचारे को क्या पता था कि मनुष्य ने अपनी जिंदगी ऐसी व्यस्त–जटिल सांसारिकता से जकड़ दी है कि उसे आत्मीय भावनाओं की ओर दृष्टिपात और हृदयंगम करने की सूझती ही नहीं। मनुष्य की यह कमजोरी दूर हो गई होती तो आज संसार कितना सुखी और स्वर्गीय परिस्थितियों से आच्छादित दिखाई देता।

कुछ दिन दोनों बहुत प्रेमपूर्वक साथ–साथ रहे। एक–दूसरे को चाटते, थपथपाते, हिलते–मिलते, खाते–पीते रहे और इसी बीच एक दिन उसके मालिक को फिर बाहर जाना पड़ा। इस बार भेड़िये ने किसी से न दोस्ती की और न कुछ खाया–पीया। उसी दिन से बीमार पड़ गया और प्रेम के लिए तड़प–तड़प कर अपनी इहलीला समाप्त कर दी। उसके समीपवर्ती लोगों के लिए भेड़िया उदाहरण बन गया। वे जब कभी अमानवीय कार्य करते तो भेड़िये की याद आती और उनके सिर लाज से झुक जाते।

बर्लिन की एक सरकस कंपनी में एक बाघ था। नीरो उसका नाम था। इस बाघ को लीपिजग के एक चिड़ियाघर से खरीदा गया था। जिन दिनों बाघ चिड़ियाघर में था उसकी मैत्री चिड़ियाघर के एक नौकर से हो गई। बाघ उस मैत्री के कारण अपने हिंसक स्वभाव तक को भूल गया।

पीछे वह क्लारा हलिपट नामक एक हिंसक जीवों की प्रशिक्षिका को सौंप दिया गया। एक दिन बाघ प्रदर्शन से लौट रहा था, तभी एक व्यक्ति निहत्था आगे बढ़ा। बाघ ने उसे देखा और घेरा तोड़ कर बाहर निकला। भयभीत दर्शक और सरकस वाले इधर–उधर भागने लगे। स्वयं क्लारा हलपिट तक यह देखकर दंग रह गई कि बाघ अपने पुराने मित्र के पास पहुँचकर उसे चाट रहा और प्रेम जता रहा है। मानव–मित्र ने उसकी पीठ खूब थपथपाई, प्यार किया और कहा—अब जाओ समय हो गया। बाघ चाहता तो उसे खा जाता, भाग निकलता, पर प्रेम के बंधनों में जकड़ा हुआ बेचारा बाघ अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मित्र की बात मानने को बाध्य हो गया। लोग कहने लगे सचमुच प्रेम की ही शक्ति ऐसी है जो हिंसक को भी मृदु, शत्रु को भी मित्र और संताप से जलते हुए संसार-सागर को हिमखंड की तरह शीतल और पवित्र कर सकती है।

सृष्टि का हर प्राणी, हर जीव-जंतु स्वभाव में एक-दूसरे से भिन्न है। कुछ अच्छे, कुछ बुरे गुण सब में पाए जाते हैं, पर प्रेम के प्रति सद्भावना और प्रेम की प्यास से वंचित कोई एक भी जीव सृष्टि में दिखाई नहीं देता। मनुष्य जीवन का तो संपूर्ण सुख और स्वर्ग ही प्रेम है। प्रेम जैसी सत्ता को पाकर भी मनुष्य अपने को दीन-हीन अनुभव करे तो यही मानना पड़ता है कि मनुष्य ने जीवन के यथार्थ अर्थ को जाना ही नहीं।

अमेरिका के मध्य भाग में पाई जाने वाली एक छिपकली के सिर पर अनेक सींग होते हैं। यह मांसाहारी जंतु क्रोध की स्थिति में होता है तो उसकी आँखों में रक्त उतर आता है, फिर वह शत्रु पर कैसा भी भयंकर आक्रमण करने से नहीं चूकती। इसका सारा जीवन ही चींटियों, गिराड़ों को मारने-खाने में बीतता है। पर अपनी प्रेयसी के प्रति उसकी करुणा भी देखते ही बनती है, उसके लिए तो वह गिलहरी और खरगोश की तरह दीन बन जाती है।

बिच्छू बड़ा क्षुद्र जंतु है, किंतु प्रेम की प्यास से मुक्त वह भी नहीं। वह अपने बच्चों से इतना प्यार करती है कि उन्हें, जब तक वे पूर्ण समर्थ नहीं हो जाते, अपनी पीठ पर चढ़ाए घूमती है। भालू खूँख्वार जानवर है, वह भूखा नहीं रह सकता, पर जब कभी मादा भालू भी बच्चे देगी तो जब तक बच्चों की आँखें नहीं खुल जाएँगी वह उनके पास ही बैठी भूख-प्यास भूलकर उन्हें चूमती चाटती रहेगी।

चींटियों के जीवन में, सामान्यत: मजदूर चींटियों में कोई विलक्षणता नहीं होती, उनमें अपनी बुद्धि, अपनी निजी कोई इच्छा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी नहीं होती है। एक नियम व्यवस्था के अंतर्गत जीती रहती हैं तथापि प्रेम की आकांक्षा उनमें भी होती है और वे अपने उस कोमल भाव को दबा नहीं सकतीं। इस अंतरंग भाव की पूर्ति वे किसी और तरह से करती हैं। वह तितली के बच्चे से ही प्रेम करके अपनी आंतरिक प्यास बुझाती है। यद्यपि यह सब एक प्राकृतिक प्रेरणा जैसा लगता है, पर मूलभूत भावना का उभार स्पष्ट समझ में आता है। तितलियाँ फूलों का मधु चूसती रहती हैं, उससे उनके जो बच्चे होते हैं, उनकी देह भी मीठी होती है। माता-पिता के स्थूल शारीरिक गुण बच्चे पर आते हैं, यह एक प्राकृतिक नियम है। तितलियों के नन्हें बच्चे, जिन्हें लार्वा कहते हैं, मजदूर चींटी सावधानी से उठा ले जाती है, उसके शरीर के मीठे वाले अंग को चाट-चाट कर चींटी अपने परिवार के लिए मधु एकत्र कर लेती है। पर ऐसा करते हुए स्पष्ट-सा पता चलता रहता है कि यह एक स्वार्थपूर्ण कार्य है। इससे नन्हें से लार्वे को कष्ट पहुँचता है, इसलिए वह थोड़ी मिठास एकत्र कर लेने के तुरंत बाद उस बच्चे को परिचर्या भवन में ले जाती है और उसकी तब तक सेवा-सुश्रूषा करती रहती है, जब तक लार्वा बढ़कर अच्छी तितली नहीं बन जाता। तितली बन जाने पर चींटी उसे हार्दिक स्वागत के साथ घर से विदा कर देती है। जीवशास्त्रियों के लिए चींटी और तितली की यह प्रगाढ़ मैत्री गूढ़ रहस्य बनी हुई है। उसकी मूल प्रेरणा अंत:करण का वह प्यार ही है जिसके लिए आत्माएँ जीवन भर प्यासी इधर-उधर भटकती रहती है।

आस्ट्रेलिया में फैलेंजर्स नामक गिलहरी की शक्ल का एक जीव पाया जाता है। इसे सुगर स्क्वैरेल भी कहते हैं। वह एक लड़ाकू और उग्र स्वभाव वाला जीव है, तो भी उसकी अपने बच्चों और पारिवारीजनों के प्रति उसकी ममता देखते ही बनती है। वह जहाँ भी जाती है अपनी एक विशेष थैली में बच्चों को टिकाए रहती है और थोड़ी-थोड़ी देर में उन्हें चाटती है और सहलाती रहती है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानो वह अपने अंत:करण की प्रेम भावनाओं के उद्रेक को सँभाल सकने में असमर्थ हो जाती हो। जीव-जंतुओं का यह प्रेम-प्रदर्शन यद्यपि एक छोटी सीमा तक अपने बच्चों के कुटुंब तक ही सीमित रहता है तथापि वह इस बात का प्रमाण है कि प्रेम जीवमात्र की आंतरिक आकांक्षा है। मनुष्य अपने प्रेम की परिधि अधिक विस्तृत कर सकता है, इसलिए कि वह अधिक संवेदनशील और कोमल भावनाओं वाला है। अन्य जीवों का प्यार पूर्णत: संतुष्ट नहीं हो पाता, इसलिए वे अपेक्षाकृत अधिक कठोर, स्वार्थी और खूँख्वार से जान पड़ते हैं। पर इसमें संदेह नहीं कि यदि उनके अंत:करण में छिपे प्रेमभाव से तादात्म्य किया जा सके तो उन हिंसक व मूर्ख जंतुओं में भी प्रकृति का अगाध सौंदर्य देखने को मिल सकता है। भगवान शिव सर्पों को गले में लटकाए रहते हैं, महर्षि रमण के आश्रम में बंदर, मोर और गिलहरी ही नहीं, सर्प, भेड़िये आदि तक अपने पारिवारिक झगड़े तय कराने आया करते थे। सारा 'अरुणाचलम्' पर्वत उनका घर और उसमें निवास करने वाले सभी जंतु उनके बंधु-बांधव, सुहृद-सखा, पड़ोसी थे। स्वामी रामतीर्थ हिमालय में जहाँ रहते, वहाँ शेर, चीते-प्राय: उनके दर्शनों को आया करते और उनके समीप बैठकर घंटों विश्राम किया करते थे। यह उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि हमारा प्रेमभाव विस्तृत हो सके, तो हम अपने को विराट् विश्व-परिवार के सदस्य होने का गौरव प्राप्त कर एक ऐसी आनंद निर्झरिणी में प्रवाहित होने का आनंद लूट सकते हैं जिसके आगे संसार के सारे सुख-वैभव फीके पड़ जायें।

६०० वर्ष पूर्व की घटना है, रोम में एक महिला अपने बच्चे से खेल रही थी। वह कभी उसे कपड़े पहनाती, कभी दूध पिलाती, इधर-उधर के काम करके फिर बच्चे के पास आकर उसे चूमती, चाटती और अपने काम में चली जाती। प्रेम भावनाओं से जीवन की थकान मिटती है। लगता है कि अपने काम की थकावट दूर करने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए उसे बार-बार बच्चे से प्यार जताना आवश्यक हो जाता था। घर के सामने एक ऊँचा टावर था, उसे बैठा हुआ एक बंदर यह सब बड़ी देर से, बड़े ध्यान से देख रहा था। स्त्री जैसे ही कुछ क्षण के लिए अलग हुई कि बंदर लपका और उस बच्चे को उठा ले गया। लोगों ने भाग-दौड़ मचायी, तब तक बंदर सावधानी के साथ बच्चे को लेकर उसी टावर पर चढ़ गया।

जैसे-जैसे उसने माँ को बच्चे से प्यार करते देखा था स्वयं भी बच्चे के साथ वैसे ही व्यवहार करने लगा। कभी उसे चूमता-चाटता तो कभी उसके कपड़े उतार कर फिर से पहनाता। इधर वह अपनी प्रेम की प्यास बुझा रहा था, उधर उसकी माँ और घर वाले तड़प रहे थे, बिलख-बिलखकर रो रहे थे, बच्चे की माँ तो एकटक उसी टावर की ओर देखती हुई बुरी तरह चीखकर रो रही थी।

बंदर ने यह सब देखा। संभवत: उसने सारी स्थिति भी समझ ली, इसीलिए एक हाथ से बच्चे को छाती से चिपका लिया, शेष तीन हाथों-पाँवों की मदद से वह बड़ी सावधानी से नीचे उतरा और बिना किसी भय अथवा संकोच के उस स्त्री के पास तक गया और बच्चे को उनके हाथों में सौंप दिया। यह कौतुक लोग स्तब्ध खड़े देख रहे थे और देख रहे थे साथ-साथ एक कटु सत्य कि किस तरह बंदर जैसा चंचल प्राणी प्रेम के प्रति इस तरह गंभीर और आस्थावान हो सकता है। माँ के हाथ में बच्चा पहुँचा, सब लोग देखने लगे उसे कहीं कोई चोट तो नहीं आई। इस बीच बंदर वहाँ से कहाँ गया, किधर चला गया—यह आज तक किसी ने नहीं जाना।

पीछे जब लोगों का ध्यान उधर गया हो सबने यह माना कि बंदर या तो कोई दैवी शक्ति थी जो प्रेम की वात्सल्य महत्ता दर्शाने आई थी अथवा वह प्रेम से बिछुड़ी हुई कोई आत्मा थी जो अपनी प्यास को एक क्षणिक तृप्ति देने आई। उस बंदर की याद में एक अखंड-दीप जलाकर उस टावर में रखा गया। इस टावर का नाम भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी यादगार में बंदर टावर (मंकी टावर) रखा गया। कहते हैं कि ६०० वर्ष हुए यह दीपक आज भी जल रहा है। दीपक के ६०० वर्ष से चमत्कारिक रूप में जलते रहने में कितनी सत्यता है, हम नहीं जानते, पर यह सत्य है कि बंदर के अंत:करण में बच्चे के प्रति प्रसूत-प्यार का प्रकाश जब तक यह टावर खड़ा रहेगा, लाखों लोगों को मानव जीवन की इस परम उद्‌दात्त ईश्वरीय प्रेरणा की ओर ध्यान आकर्षित करता रहेगा।

प्रेम ही जीवन का सच्चा यज्ञ है। जिसका प्रकाश, जिसकी ऊष्मा कभी बंद नहीं पड़ती, वह मनुष्य को परमात्मा से मिला देने वाला भाव है। इसलिए परमेष्ठी ब्रह्मा जी ने उसे जीवन का अन्यतम यज्ञ कहा है।

प्रेम का परिष्कार-पेड़ पौधों से भी प्यार

संभव है संसार के किसी और भाग में भी अब ऐसे गुलाब के पौधे हों, जिनमें काँटे न हों, कुमुदिनी हो पर दिन में भी खिलती हो, अखरोट के वृक्ष हों और ३२ वर्ष की अपेक्षा १६ वर्ष में ही अपनी सामान्य ऊँचाई से भी बड़े होकर अच्छे फल देने लगते हों। पर वे होंगे अमेरिका के कैलिफोर्निया में विशेष रूप से तैयार किए गए पौधों की ही संतान। कैलिफोर्निया में ये पौधे किसी वनस्पति शास्त्र या किसी ऐसे शोध संस्थान द्वारा तैयार नहीं किए गए। उसका श्रेय एक अमेरिकन संत लूथर बरबैंक को है जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में प्रेमयोग का अभ्यास किया और यह सिद्ध कर दिया कि प्रेम से प्रकृति के अटल सिद्धांतों को भी परिवर्तित किया जा सकता है। यह पौधे और कैलिफोर्निया का लूथर बरबैक का यह बगीचा उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

एक बार एक सज्जन इस बाग से एक बिना काँटों वाला 'सेहुँड़' लेने गए ताकि वे उसे अपने खेत के किनारे-किनारे थूहड़ के रूप में रोप सकें। अमेरिका क्या सारी दुनिया भर में संभवत:

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही वह स्थान था जहाँ सेहुँड़ बिना काँटों के थे। बाग का माली खुरपी लेकर डाल काटने चला तो दूर से ही लूथर बरबैंक ने मना किया और बोले—"आपसे काटते नहीं बनेगा, लाओ, मैं काट देता हूँ।" यह कहकर खुरपी उन्होंने अपने हाथ में ले ली और बोले—माना कि ये पौधे हैं, इनमें जीवन के लक्षण प्रतीत नहीं होते तथापि यह भी आत्मा है और प्रत्येक आत्मा प्रेम की प्यासी, भावनाओं की भूखी होती है। हम संसार को कुछ दे नहीं सकते, तो प्रेम और करुणाशील भावनाएँ तो प्रदान कर ही सकते हैं। कदाचित् मनुष्य इतना सीख जाए तो संसार में सुख-शांति का वारापार न रहे।

बरबैक सेहुँड़ के पास बैठकर खुरपी से सेहुँड़ की डाल काटते जाते थे, पर उनकी उस क्रिया में भी कितनी आत्मीयता और ममत्व झलकता था यह देखते ही बनता था। जैसे कोई माँ अपने बच्चे को कई बार दंड भी देती है, पर परोक्ष में उसका हित और मंगल भाव ही उनके हृदय में भरा रहता है, वैसे ही श्री बरबैक सेहुँड़ को काटते जाते थे और भावनाओं का एक सशक्त स्पंदन भी प्रवाहित करते जाते थे—ऐ पौधे! तुम यह न समझना कि हम तुम्हें काट कर अलग कर रहे हैं। हम तो तुम्हारे और अधिक विस्तार की कामना से विदा कर रहे हैं। यहाँ से चले जाने के बाद भी तुम मुझसे अलग नहीं होगे, तुम मेरे नाम के साथ जुड़े हो, तुम मेरी आत्मा के अंग हो। माना लोक-कल्याण के लिए तुम्हें यहाँ से दूर जाना पड़ रहा है, पर तुम मेरे जीवन का अभिन्न अंग हो। जहाँ भी रहोगे हम तुम्हें अपने समीप ही अनुभव करेंगे—ऐसी भावनाओं के साथ बरबैंक ने सेहुँड़ की दो-तीन डालें काट दीं और आगंतुक उन्हें ले गया। इस तरह इस बाग की सैकड़ों पौध सारी दुनिया में फैली और बरबैंक के नाम से विख्यात होती गईं।

यह कोई गल्प-कथा नहीं, वरन् एक ऐसा तथ्य है जिसने सारे योरोप के वैज्ञानिकों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या सचमुच ही भावनाओं के द्वारा पदार्थ के वैज्ञानिक नियम भी परिवर्तित हो सकते हैं ?

जिस तरह भारतवर्ष में इन दिनों नेहरू गुलाब, शास्त्री गेहूँ आदि नामों से पौधों, अन्नों की विशेष नसलें कृषि विशेषज्ञ वैज्ञानिक अनुसंधान से तैयार कर रहे हैं, उसी प्रकार बरबैक पोटेटो (आलू), बरबैक स्कवैश, बरबैक चेरी, बरबैक रोज, बरबैक वालनट (अखरोट) आदि सैंकड़ों पौधों फलों, सब्जियों तथा अन्नों की नसलें बरबैक के नाम से प्रचलित हैं। इन्हें बरबैक ने तैयार किया, यह सत्य है, पर किसी वैज्ञानिक पद्धति से नहीं, यह उससे भी अधिक सत्य है। यह सब किस तरह संभव हुआ उसका वर्णन स्वयं लूथर ने अपने शब्दों में 'दि ट्रेनिंग ऑफ ह्यूमन प्लांट' नामक पुस्तक में निम्न प्रकार लिखा है। यह पुस्तक न्यूयार्क की सेंचुरी कंपनी से १९२२ में प्रकाशित हुई थी। लूथर लिखते हैं—

'आत्मचेतना के विकास के साथ मैंने अनुभव किया कि संसार का प्रत्येक परमाणु आत्मामय है। जीव-जंतु ही नहीं, वृक्ष-वनस्पतियों में भी वही एक आत्मा प्रकाशित हो रहा है—यह जानकर मुझे बड़ा कुतूहल हुआ। मैं वृक्षों की प्रकृति पर विचार करते-करते इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इनमें जो काँटे हैं, वह इनके क्रोध और रुक्षता के संस्कार हैं। संभव है कि लोगों ने उन्हें सताया, कष्ट दिया, उनकी आकांक्षाओं की ओर ध्यान नहीं दिया। इसीलिए ये इतने सुंदर फूल-फल देने के साथ ही काँटे वाले भी हो गए।'

यदि ऐसा है तो क्या इन्हें प्रेम और दुलार देकर सुधारा भी जा सकता है ? ऐसा एक कुतूहल मेरे मन में जाग्रत हुआ। मैं देखता हूँ कि सारा संसार ही प्रेम का प्यासा है। प्रेम के माध्यम से किसी के भी जीवन में परिवर्तन और अच्छाइयाँ उत्पन्न की जा सकती हैं, तो यह प्रयोग पौधों पर करना प्रारंभ किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुलाब का एक छोटा पौधा लगाया, तब उसमें एक भी काँटा नहीं था। मैं उसके पास जा बैठता, मेरे अंतःकरण से भावनाओं की सशक्त तरंगें उठतीं और आस-पास के वातावरण में विचरण करने लगतीं। मैं कहता—मेरे प्यारे बच्चे, मेरे गुलाब! लोग तुम्हें लेने इस दृष्टि से नहीं आते कि तुम्हें कष्ट दें। वह तो तुम्हारे सौंदर्य से प्रेरित होकर आते हैं। वैसे भी तो तुम्हारी सुवास विश्व-कल्याण के लिए ही है। जब दान और संसार की प्रसन्नता के लिए उत्सर्ग ही तुम्हारा ध्येय है तो फिर यह काँटे तुम क्यों उगाते हो? तुम अपने काँटे निकालना और लोगों को अकारण कष्ट देना भी छोड़ दो तो फिर देखना कि संसार तुम्हारा कितना सम्मान करता है। अपने स्वभाव की इस मलिनता और कठोरता को निकालकर एक बार देखो तो सही कि यह सारा संसार तुम्हें हाथों ही हाथों उठाने के लिए तैयार है।

गुलाब से मेरी ऐसी बातचीत प्रतिदिन होतीं। भावनाएँ अंतःकरण से निकलें और वह खाली चली जाएँ, तो फिर संसार में ईश्वरीय अस्तित्व को मानता ही कौन? गुलाब धीरे-धीरे बढ़ने लगा। उसमें सुडौल डालियाँ फूटीं, चौड़े-चौड़े पत्ते निकले और पाव-पाव भर के हँसते इठलाते फूल भी निकलने लगे, पर उसमें क्या मजाल कि एक भी काँटा आया हो। आत्मा को आत्मा प्यार से कुछ कहे और वह उसे ठुकरा दे—ऐसा संसार में कहीं हुआ नहीं, फिर भला बेचारा नन्हा-सा पौधा ही अपवाद क्यों बनता, उसने मेरी बात सहर्ष मान ली और मुझे संतोष हुआ कि मेरे बाग का गुलाब बिना काँटों का था।

अखरोट का धीरे-धीरे बढ़ना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मैंने उसे पानी उतना ही दिया, खाद उतनी ही दी, निकाई और गुड़ाई में भी कोई अंतर नहीं आने दिया, फिर ऐसी क्या भूल हो गई, जो अखरोट ३२ वर्ष में ही बढ़ने की हठ ठान बैठा। मैंने समझा, इसे भी किसी ने प्यार नहीं दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मैंने उसे संबोधित कर कहा—मेरे बच्चे! तुम्हारे लिए हमने सब जुटाया, क्या उस कर्तव्यपरायणता में जो तुम्हारे प्रति असीम प्यार भरा था, उसे तुम समझ नहीं सकते? तुम मेरे बच्चे के समान हो, तुम्हें मैं अलग अस्तित्व दूँ ही कैसे? हम-तुम एक ही तो हैं। आज माना कि दो रूपों में खड़े हैं, पर एक दिन तो यह अंतर मिटेगा ही, क्या हम उस आत्मीयता को अभी भी स्थायित्व प्रदान नहीं कर सकते? तुम उगो और जल्दी उगो, ताकि संसार में अपने ही तरह की और जो आत्माएँ हैं, उनकी कुछ सेवा कर सको।

अखरोट बढ़ने लगा और १६ वर्ष की आधी आयु में ही अच्छे-अच्छे फल देने लगा। इसी तरह कद्दू, आलू, नेक्टारीनेस बेरीज, पापीज आदि सैकड़ों पौधों पर प्रयोग कर श्री बरबैक ने उन्हें प्रकृति के समान गुणों वाले पौधों के रूप में विकसित कर यह दिखा दिया कि प्रेम ही आत्मा की सच्ची प्यास है। जिस प्रकार हम स्वयं औरों से प्रेम चाहते हैं वैसे ही बिना किसी आकांक्षा के दूसरों को प्रेम लुटाने का अभ्यास कर सके होते तो आज सारा संसार ही सुधरा हुआ दिखाई देता। प्रेम का सिद्धांत ही एकमात्र वह साधन है जिससे छोटे-छोटे बच्चों से लेकर पारिवारिक जीवन और पास-पड़ोस के लोगों से लेकर सारे समाज, राष्ट्र और विश्व को भी वैसा ही सुधारा और सँभाला जा सकता है जैसे बरबैक ने पेड़-पौधों को विलक्षण रूप से सँभालकर दिखा दिया।

श्री बरबैक ने श्री योगानंद नामक भारतीय योगी से क्रियायोग की दीक्षा ली थी। उनका निधन १९२६ में हुआ, तब लोगों के मुख से एक ही शब्द निकला था—प्रेमी प्रयोगी का निधन सारे विश्व की क्षति है, वह कभी पूरी नहीं हो सकती।

श्री बरबैंक तत्त्वद्रष्टा थे। प्रेम का अभ्यास उन्होंने पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों तक से करके ही आत्मानुभूति प्राप्त की थी। उसी से सिद्ध हो गए थे। उनकी भविष्यवाणियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण होती थी। लंदन से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशित होने वाली 'ईस्ट और वेस्ट' पत्रिका में उन्होंने 'साइंस एण्ड सिविलाइजेशन, नाम से लेख प्रकाशित किया। उसमें लिखा था—

"संसार को सुधारने की शक्ति पूर्व में केवल भारतवर्ष के पास है। पश्चिमी देशों में वहाँ की योगक्रिया और प्राणायाम की विधियाँ सीखने के साथ प्रेम, दया, करुणा, उदारता, क्षमा, मैत्री के भाव भी सीखने और आत्मसात् करने चाहिए। मैं देख रहा हूँ कि भारतवर्ष उसके लिए अपने आपको तैयार कर रहा है और एक दिन सारे संसार को ही उसके कदमों में झुककर जीवन जीने की शुद्ध पद्धति और आत्म विज्ञान सीखना पड़ेगा, इससे ही संसार का कुछ वास्तविक भला होगा।"

१९४८ में लंदन के एसोसियेटेड प्रेस के एक आमुख में भी उन्होंने भावना योग की महत्ता पर प्रकाश डाला था और कहा था— शीघ्र ही भारतवर्ष में कुछ ऐसे लोगों का उदय होगा जो फिर से सारे संसार को मानवता का पाठ सिखलायेंगे। उसमें परस्पर प्रेम और आत्मीयता की भावना प्रमुख होगी। उसी से संसार का सुधार होगा, उसी से सुख-समृद्धि की वृद्धि भी होगी।

प्रेम-प्रतिरोपण से पत्थर भी परमात्मा

प्रकृति में सर्वत्र एक आकर्षण का नियम (ला ऑफ ग्रेविटेशन) काम करता है। नियम यह है कि दो वस्तुओं की दूरी जितनी अधिक है, आकर्षण उतना ही कम होगा। यह दूरी जितनी कम होती है, उतना ही आकर्षण बढ़ता चला जाता है।

मनुष्यों-मनुष्यों के बीच भी प्रकृति का यही नियम काम करता है हम स्पष्ट देख सकते हैं कि पड़ोसी के दुःख के साथी हम होते अवश्य हैं, समय आने पर उसकी सेवा और सहायता भी करते हैं, पर मूल में एक स्वार्थ भरा रहता है कि इसके साथ ऐसा इसलिए कर रहे हैं कि कभी हमें भी बदले का सहयोग मिलेगा। विनिमय वाले इस व्यवहार में आकर्षण और प्रेम होता तो है, पर अत्यल्प, न के बराबर।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने चाचा, मामा, भाई के प्रति कर्तव्य पालन में अपेक्षाकृत अधिक प्रेम और आकर्षण अनुभव करते हैं, किंतु जो प्रेम अपने पुत्र या पुत्री के लिए हो सकता है, वह इनमें से किसी के साथ नहीं था। इस प्रेम की घनिष्ठता का कारण था दूरी का अभाव। हमारी इस मान्यता और सत्य में कोई अंतर नहीं था कि यह पुत्र तो मेरा प्राण है, मेरे शरीर से निकली हुई सत्ता है। उसके लिए जब आवश्यकता पड़ती है तो हम प्रकृति के नियमों का भी उल्लंघन कर डालते हैं। साधारणतः दिनभर की थकावट के बाद रात में नींद आए बिना नहीं रहती, किंतु बच्चा बीमार हो, अस्पताल में हो, तो एक-दो रात तो क्या कई-कई रात जाग सकते हैं। ऐसा किसी दूसरे के साथ करने में कष्टप्रद लगता है, पर प्रेम वही दुःख-सुख की तरह अनुभव होने लगता है।

इस तरह का सभी प्रेम 'तस्मैवाहं'—मैं उसी का हूँ—की सीमा के अंदर आता है। उसमें प्रेम का, आकर्षण का, भाव तो है—पर वह परदे में है। उसमें अपनापन, अपना स्वार्थ जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

दूसरी प्रकार का प्रेम 'तवैवाहं' मैं तेरा ही हूँ—परमात्मा की आमुख उपस्थिति का बोध कराता है। अनुभव करते हैं कि हम अपने आप में अपूर्ण हैं। इस अपूर्णता को जब तक भरा नहीं जाता, तब तक संतोष नहीं होता, शांति नहीं मिलती, प्रसन्नता नहीं होती। संसार में मनुष्य स्वार्थ-ही-स्वार्थ चाहकर जिंदा नहीं रह सकता। उसे अपने स्वार्थ को जब कहीं प्रतिरोपित करने का अवसर मिलता है, तभी उसे कुछ संतोष होता है—ऐसा प्रेम अपनी पत्नी के प्रति हो सकता है। पत्नी से हमारा कोई रुधिरगत संबंध नहीं होता। एक व्यक्ति पूरब से चलकर जाता है, दूसरा पश्चिम से आकर मिलता है। दोनों एक-दूसरे को जानते भी बहुत कम हैं। किंतु समर्पण के भाव ने सांसारिक दूरी को इतना कम कर दिया है कि जोड़े में से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक-दूसरे को देखे बिना रह ही नहीं सकता। मिलन के प्रारंभिक दिनों में एक की—दो एक दिन की बिछुड़न भी दूसरे के लिए कई वर्षों के समान असह्य हो जाती है। समर्पण प्रेम की इस भावना में शक्ति-सुख का स्थान अधिक तो है, पर उसमें भी परमात्मा सम्मुख ही था, अपने भीतर मिल नहीं सका। ऐसा कोई नियम नहीं था कि चाहते हुए भी स्त्री-पुरुष दोनों एकाकार हो जाते—दो न रहकर एक ही शरीर में समा जाते। काम-वासना उसी की भटक है, जिसमें मनुष्य पाता तो कुछ है नहीं, अपना आकर्षण और कम कर लेता है।

प्रेम के विकास की तब एक तीसरी और अंतिम भूमिका जो पत्थर को भी भगवान बना देती है, वह है 'त्वमेवाहं' मैं तो तू ही हूँ।

मैं और मेरे के घेरे में संसार में स्थूलता का एक परदा जो चढ़ा हुआ है, उसी के कारण चेतना के स्वतंत्र अस्तित्व का आभास नहीं हो पा रहा था। 'राम' में भी वही प्रवृत्तियाँ, वही आकांक्षाएँ, वही चेतना भरी पड़ी हैं, जो 'श्याम' में हैं। नैसर्गिक विकास की क्रिया दोनों में एक-सी ही है, पर राम को अपने काम से अवकाश नहीं, इसलिए उसे श्याम में कोई रुचि नहीं है। किंतु जब वह श्याम को थोड़ा संदेह मिटाकर देखता है, तो पाता है कि अरे! इसमें तो सब कुछ वही वैसा ही है, जैसा मुझमें है।

राम और श्याम तो दूर रहे, चेतना तो सृष्टि के कण-कण में समाविष्ट है। तीनों अवस्थाओं में हमारा प्रेम इस चेतना के प्रतिदान से ही हमें सुख मिलता रहा है। शारीरिक सुख का विनिमय तो क्षणिकमात्र और अज्ञानता के कारण होता है। वस्तुतः भूख और प्यास तो चेतना की थी, जिसे अपनी अपूर्णता सहन नहीं हो रही थी।

तब फिर उस चेतना की पूर्णता कहाँ हो? साकार में या निराकार में? यह प्रश्न सनातन काल से चलता और उलझता रहा है। मनीषियों, आचार्य और तत्त्वदर्शियों ने समझाया भी कि साकार और निराकार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई अंतर नहीं है। सृष्टि में जो कुछ भी दिखाई देता है, उस सबमें परमेश्वर ही भरा पड़ा है। तू तो अपना स्वार्थ, अपनी खुदी, अपना परदा हटाकर देख, तुझे सबमें भगवान ही दिखाई देगा। अपनी भावनाओं में जो सबके प्रति 'तू' ही 'तू' के प्रति समर्पित कर देता है, उसे तो पत्थर में भी परमात्मा के दर्शन होने लगते हैं।

प्रेम जो लौकिक अर्थों में था, उसमें भी भावनाओं के समर्पण के अतिरिक्त कुछ भी तो नहीं था। भावनाएँ नहीं रह जातीं तो अपनी स्त्री, पुत्र-पुत्री और भाई-बहनों के लिए तो कोई प्रेम नहीं रह जाता। पंच भौतिक पदार्थों के प्रति प्रेम भावनाओं का प्रतिरोपण मात्र है। भावनाएँ आवेश है, विद्युतीय चुंबक है। उन्हें तो जहाँ भी प्रतिरोपित कर दिया जाता है, वहीं प्रेम का सुख मिलने लगता है।

पत्थर भी तो पंच भौतिक पदार्थ ही है। आने वाली ध्वनि को प्रतिध्वनित करने का, रगड़कर अग्नि पैदा करने का, उनके सूक्ष्म कणों में जल और आकाश का अंश होने का प्रमाण तो आज वैज्ञानिक भी दे रहे हैं। कोई भी जड़-से-जड़ वस्तु में भी चेतना का नियम सर्वत्र भावनाओं की उपस्थिति का प्रमाण ही तो है। तब फिर क्या पत्थर की मूर्ति हमें बदले में कुछ नहीं दे सकती। यदि हमारे अंत:करण का प्रेम अपने स्वार्थ की सीमा को तोड़कर प्रत्येक वस्तु में 'तू-ही-तू' के दर्शन करने लगे, तो इन पत्थर की गढ़ी हुई मूर्तियों में ही भगवान के दर्शन किए जा सकते हैं।

यह भगवान कोई अशक्त और अभावग्रस्त भगवान नहीं होगा, वरन् मीरा के गिरधर गोपाल की तरह समुद्र में डूबने से बचाने वाला, विष का प्याला आप अपने कंठ में धारण कर लेने वाला, पायलों के साथ अपनी पायलों से संगति मिलाने वाला हो सकता है। प्रहलाद के नृसिंह की तरह वह आधा शरीर मनुष्य और आधा पशु का धारण कर रक्षा के लिए उपस्थित हो सकता है। कविवर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुलसीदास ने उन भावनाओं की शक्ति को निःसीम बताते हुए लिखा है—

अन्तर्जामिहु ते बड़ बाहिर्जामि हैं राम जे नाम लिये तें।
पैंज परे प्रह्लादहु को प्रगटे प्रभु पाहन तें न हिये तें॥

अर्थात—अपने भीतर भरे हुए परमात्मा से भी बड़ा है, बाहर सृष्टि के कण-कण में विराजमान परमात्मा। उसे जब भावनाओं की, प्रेम की, समर्पण की चोट देकर प्रहलाद ने जाग्रत किया तब अपने भीतर से नहीं, पत्थर से प्रकट होकर आ गया।

ईश्वर की भक्ति प्रेमपूर्ण भावनाओं का पारमार्थिक विकास मात्र है। उसे हम सृष्टि में फैली विराट् चेतना के प्रति जाग्रत कर लें तो हम पत्थर के भगवान से भी सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो कोई भी देहधारी भगवान प्रकट होकर या निराकार ईश्वर भक्ति से द्रवित होकर दे सकता है।

प्रेम साधना द्वारा विश्वात्मा की अनुभूति

अपने आप से प्रेम करके अपनी प्रसुप्त आत्म-शक्तियों का किस प्रकार विकास किया जाए, अपने पड़ोसी, अपने स्वजन संबंधियों से लेकर ग्राम, नगर, प्रदेश, देश और विश्व के मानव-मात्र में प्रेम का प्रतिरोपण करके किस प्रकार मनुष्य जीवन में स्वर्गीय परिस्थितियों का आविर्भाव किया जाए और फिर उससे भी आगे बढ़कर सृष्टि के इतर मानव प्राणियों, पेड़-पौधों तथा निर्जीव वस्तुओं तक से प्रेम-भाव की घनिष्ठता स्थापित करके किस प्रकार विश्वात्मा की अनुभूति, साक्षात्कार और पूर्णानंद की प्राप्ति संभव है? इन नियमों की निश्चित प्रक्रियाएँ भले ही हमें ज्ञात न हों, तो भी मानव जाति का अस्तित्व केवल मात्र प्रेम के लिए टिका हुआ है। ऐसा गांधीजी कहा करते थे।

प्रेम की शक्ति समस्त भौतिक शक्तियों से बढ़कर है। यही वह भाव है जो छोटे से केंद्र जीवात्मा को विराट जगत् से जोड़ने में समर्थ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो पाता है। प्रेम न होता तो सृष्टि में टकराव और संघर्ष इतना अधिक बढ़ जाता कि उसका अस्तित्व दो दिन टिकना भी असंभव हो जाता। वैज्ञानिक बताते हैं कि परमाणुओं के बीच जोड़ने वाली सत्ता विद्यमान न हो तो पृथ्वी टुकड़े-टुकड़े हो जाए। जड़ परमाणुओं को एक आकर्षण जोड़कर रखता है, उसी प्रकार चेतन प्राणियों को भी एक ही आकर्षण, एक ही केंद्राभिसारी बल बाँधकर रखता है, वह है—प्रेम। प्रेम की कला में हम जितने पारंगत हो सकते हैं उसी अंश में अपना विकास कर सकते हैं।

भौतिक आकर्षण और समान स्वार्थों की पूर्ति के लिए मेल-मिलाप से भी प्रेम जैसा ही आकर्षण होता है और चूँकि उसमें प्रारंभिक प्रेम के नियमों का अस्तित्व होता है इसलिए मानव जाति भूल से उसे ही प्रेम समझने लगती है। इस प्रेम को प्रेम मानते हुए भी स्थूल और वासनाजन्य ही कहा जाएगा। अदीस अबाब के मध्य में सिदिस्त के किले में वहाँ का अच्छा चिड़ियाघर है। इस चिड़ियाघर के संरक्षक बोलने हतेंयस ने २० वर्षों तक लगातार शेरों के जीवन का सूक्ष्म अध्ययन के दिनों में इन पशुओं से संबंधित अनेक घटनाएँ संकलित करके लिखा है कि शेर अपने बच्चों से प्यार नहीं करता, कभी-कभी तो वह उनको जख्मी भी कर देता है। इसके विपरीत शेर अपनी पत्नियों से बहुत प्रेम करते हैं। शेर-शेरनी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और एक-दूसरे को समझते हैं। शेर यह सहन नहीं कर सकता कि शेरनी पर मक्खी भी आकर बैठे।

यह अध्ययन प्राणियों में प्रेम की जन्मजात आकांक्षा का प्रतीक है, भले ही उसकी सीमा इतनी संकुचित हो कि शेर अपने प्रेम के बीच में बच्चों की उपस्थिति भी सहन न कर सकता हो।

भालू का स्वभाव भी कुछ ऐसा ही होता है। इसमें नर-मादा से प्रेम करता है, पर अपने बच्चों से शत्रु जैसा व्यवहार करता है और मादा अपने बच्चे से इतना प्रेम करती है कि उनके लिए वह कितने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही सप्ताहों तक माँद में छिपी पड़ी रहती है, पानी तक नहीं पीती, भूख मिटाना तो और भी दूर की बात रही।

मनुष्य जाति पशुओं से विकसित श्रेणी का प्रेम करती है, पर उसे जाग्रत आत्माओं वाला प्रेम नहीं कह सकते। एक गाँव में एक बच्चा नदी के पानी में डूब रहा था, किनारे पर और भी लोग खड़े थे, पर स्वयं डूब जाने के भय से कोई कूद नहीं रहा था। उसकी माँ ने अपने को संकट में डाला और तैरना न जानते हुए भी वह पानी में कूद गई। यहाँ यदि और कोई व्यक्ति कूदकर उस बच्चे को बचाता तो उसकी वह निष्काम सेवा प्रेम की उत्कृष्टता का प्रतिपादन करती। माँ के लिए यह प्रेम कर्तव्य भाव था, उसे श्रेष्ठ तो कहा जा सकता है, पर समस्त मनुष्य जाति की तुलना से वह साधारण प्रेम था, दैवी नहीं। वह स्त्री बच्चे को बचाने के लिए आगे बढ़ती है और स्वयं डूबने लगती है, तब उसका पति कूदता है और अपनी पत्नी को बचाता है। इस तरह उसने जो प्रेम प्रदर्शित किया, उस प्रेम को वन्य जीवन का-सा ही प्रेम कहा जा सकता है।

मनुष्य का प्रेम कुछ इसी तरह का स्वार्थ और शारीरिक संबंधों की संकीर्णता तक अनुबद्ध हो जाने से हमारी आत्मिक प्रगति का द्वार बंद हो जाता है—यह हमारी लघुता का प्रतीक है, प्रकृति की प्रेरणा नहीं। आत्म-चेतन की संतुष्टि का आधार सीमाबद्ध प्रेम नहीं हो सकता। दूसरी जाग्रत आत्माएँ, भले ही वे अपना विकासक्रम क्रमवश किसी क्षुद्र योनि में चला रही हों, इस सीमा को तोड़ती हैं और बताती है कि आत्मा के प्रेम का विस्तार किसी वर्ग, जाति और लिंग तक सीमित न होकर समस्त सृष्टि में फैली चेतना के मूल तक है, उसी से सच्ची संतुष्टि मिल सकती है।

२७ अक्टूबर १९७० की जूनागढ़ (गुजरात) की घटना है, वहाँ से २३ किलोमीटर दूर नखदी गाँव में कोई एक नवजात शिशु को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फेंक गया। उसको देखते ही चील, कौवे और सियार खाने को लपके, किंतु तभी एक कुत्ता वहाँ आ धमका और वह बच्चे की तब तक रक्षा करता रहा, जब तक दूसरे लोगों ने पहुँचकर बच्चे को उठा नहीं लिया। इस बीच अन्य हिंसक जीव भी वहीं मँडराते रहे, पर कुत्ता वहाँ से हटा नहीं।

अलीगढ़ के कसबा जवां में एक बंदर और कुत्ते की मैत्री विघटित भावनाओं वाले इस युग में लोगों को चुनौती देती है और बताती है कि विपरीत स्वभाव के दो पशु परस्पर प्रेम कर सकते हैं परंतु मनुष्य परस्पर स्नेह से नहीं रह सकता, ये दोनों ही अमानव मित्र दिन-रात साथ-साथ रहते थे। विश्राम के समय बंदर कुत्ते के जुएँ बीनकर और कुत्ता बंदर के तलवे सहलाकर अपनी प्रेम-भावनाओं का आदान-प्रदान करते थे।

अपने स्वभाव को अपनी रुचि की भिन्नता के बावजूद भी यदि दूसरे जीव परस्पर प्रेम से रह सकते हैं, तो बुद्धिशील मनुष्य को तो उनसे बढ़कर ही होना चाहिए। ऐसा नहीं होता तो यही लगता है कि चेतना की गहराई को जितना मनुष्य नहीं जान सका, प्रेम दर्शन का जो अभ्यास मनुष्य नहीं कर सका, वह दूसरे प्राणी हँसी-खुशी से कर सकते हैं। यहाँ तक कि दो शत्रु स्वभाव के जीवों में भी उत्कट मैत्री रह सकती है।

फैजाबाद डिवीजन के सुलतानपुर जिला स्थित अस्पताल में एक बालक इलाज के लिए भरती किया गया। बालक ९ वर्ष पूर्व सियारों द्वारा अपहरण कर लिया गया था। नन्हें से जीव के प्रति उनकी सहज करुणा प्रेम उमड़ा होगा तभी तो उन्होंने उसे खाने की अपेक्षा पाल लेना उचित समझा होगा। बहुत संभव है, सियारों में उनको खाने के लिए संघर्ष भी हुआ हो, पर जीत इस दिव्य शक्ति की हुई। सियारों ने बच्चे को पाल लिया। उसे अपनी तरह चलना-फिरना, बोलना और खाना तक सिखाकर यह सिद्ध कर दिया कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-चेतना शरीर से भिन्न तत्त्व है, वही समस्त जीवों में प्रतिभासित हो रहा है, इस मूल की ही संतुष्टि जीवन की सच्ची उपासना है।

कुछ आत्माएँ बोल नहीं सकतीं, पर प्रेम तो परावाणी है, जो हाव-भाव और आँखों की चमक से व्यक्त हो जाता है। उसके लिए शरीर उपादान नहीं, वह व्यक्त होने के लिए आप समर्थ है। त्याग और बलिदान सेवा और साधना ही उसके रूप हैं। यह देखने को तब मिला, जब अलकनंदा में बाढ़ आई थी, गढ़वाल जिले के श्रीनगर ग्राम में बाढ़ से बचने के लिए २०-२२ व्यक्ति एक बड़े पेड़ पर चढ़ गए, रात तक पानी सिमट गया तो नीचे उतरने लगे। पर वहाँ एक भयंकर विषधर खड़ा था और वह किसी को उतरने नहीं देता था कोई मारने को करता तो वह पीछे हट जाता, पर यदि कोई उतरने को करता तो उधर दौड़ कर भगा देता। रात इसी तरह बीती सवेरा हुआ तो साँप अपने आप चला गया और तब तक तक उन लोगों ने देखा कि यहाँ इतना गहरा दलदल था कि यदि सर्प ने न रोका होता तो उन सबकी जीवित समाधि लग जाती।

बंगाल के माल्दा इलाके की १९५१ की एक घटना उससे भी विलक्षण है और इस बात का प्रमाण है कि दो घनिष्ठ शत्रु भी दो घनिष्ठ मित्रों का-सा प्रेमी जीवन जी सकते हैं। पति और पत्नी के सिद्धांत भिन्न हों तो भी प्रेम का आदान-प्रदान चलते रह सकता है—यह घटना उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। यहाँ कुछ दिन से एक चीता सक्रिय था, उसने बहुत उत्पात मचा रखा था, पर कोई उसे मार न पाता था। उसका कारण था उसकी एक बंदर से अटूट मैत्री। संथाली लोग बड़े आश्चर्यचकित थे कि एक बंदर और चीते की मित्रता का रहस्य क्या है। जब कभी कोई चीते को मारना चाहता वह खों-खों करके चीते को सूचना दे देता और दोनों ही वहाँ से सकुशल भाग निकलते। चीता तभी मारा जा सका जब बंदर मारा गया। मरते-मरते भी दोनों एक-दूसरे के पास ही थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा की अपनी कोई जाति है और न कोई देश। समस्त प्राणियों में उसका विस्तार है। समस्त भूतल और ब्रह्मांड में उसी की चेतना नर्तन कर रही है। यह विश्वात्मा ही परमात्मा है, उसे पाना है तो देश-जाति की संकीर्णताएँ त्यागकर प्रेम की परिधि उसी तरह बढ़ानी होगी, जिस तरह लंदन के एक शाही बाग के पक्षियों ने बढ़ाई। वहाँ हंस और बत्तखों की कई जातियों ने अपनी-अपनी जातीय संकीर्णताएँ तोड़कर अन्य जाति के हंस और बत्तखों से प्रेम संबंध स्थापित किया है, यह क्रम अधिकांश पक्षियों पर चल पड़ने और पक्षियों द्वारा अंतर्जातीय प्रेम प्रदर्शित करने के कारण वहाँ के अधिकारी चिंतित हो उठे कि नसलों की शुद्धता को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाए। श्री आर्थर को अब उसके लिए जीवशास्त्रियों की मदद लेनी पड़ी, क्योंकि वे पक्षियों के इस अंतर्जातीय प्रेम को रोक सकने में असमर्थ स्वयं को असमर्थ पा रहे थे।

इस तरह का मुक्त प्रेम जो शारीरिक सुखों, इंद्रियों के आकर्षणों, जाति, वर्ण और देश की सीमाओं से परे हो तो वह सच्चा प्रेम है। ऐसा प्रेम ही सेवा, मैत्री, करुणा, दया, उदारता और प्राणिमात्र के प्रति आत्मीयता का भाव जाग्रत कर तुच्छ जीवात्मा को परमात्मा से मिलाता है। हमारे प्रेम का दायरा संकुचित न रहकर समस्त लोक-जीवों के प्रति श्रद्धा के रूप में फूट पड़े, तो जो भागवत अनुभूतियाँ दु:साध्य जान पड़ती हैं, कल वही काँच के स्वच्छ दर्पण में अपने साफ प्रतिबिंब की तरह झलकने लग सकती हैं।

प्रेम विस्तार से परमात्मा की प्राप्ति

आरंभ में मनुष्य अपने तक ही सीमित रहता है। वह जो कुछ करता या चाहता है, अधिकांशत: अपने लिए। उसे अपने इस स्वार्थ में कुछ सुख अनुभव होता है, किंतु यह सुख क्षणिक ही होता है। स्वार्थ की पूर्ति का संतोष समाप्त होते ही सुख की अनुभूति भी समाप्त हो जाती है, फिर दूसरा स्वार्थ सताने लगता है। इस स्वार्थ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की यह श्रृंखला चलती रहती हैं, लेकिन वह सुख-संतोष नहीं मिल पाता, जिसकी वांछा रहती है। आत्मा रीती रह जाती है। अशांति और असंतोष बना रहता है।

स्वार्थ में भी जो, कम, ज्यादा, अथवा झूठी-सच्ची सुखानुभूति होती है, उसका कारण है—अपना प्रेम। प्रेम ही सुख का हेतु है। किन्हीं कारणों से जिनको अपने से प्रेम नहीं रहता, आत्म-ग्लानि अथवा आत्म क्षोभ का भाव घेर लेता है, उन्हें स्वार्थ की पूर्ति में भी सुख नहीं मिलता। वह कुछ भी खाए, कुछ भी पहने, कितना ही लोभ क्यों न हो, किंतु उसे क्षणिक संतोष भी नहीं मिलता, जो स्वार्थपूर्ति पर किसी स्वार्थी को ही मिल जाता है। इस प्रवंचन का मुख्य कारण यही होता है कि उसका अपने प्रति प्रेम समाप्त हो गया होता है। सुख तथा संतोष प्रेम में ही निवास करता है, न तो वस्तु में और न व्यक्ति में।

कुछ समय बाद उसका विवाह हो जाता है। संकीर्ण स्वार्थ की सीमा टूटती है, उसका परिवेश बढ़ता है। अब वह न केवल अपने लिए ही करता है अब उसके करने और चाहने में पत्नी सम्मिलित हो जाती है, सम्मिलित ही क्यों प्रथम हो जाती है? वह कुछ खाता है तो उसे पत्नी की याद आती है। खाना अच्छा नहीं लगता। जब तक पत्नी को न खिलालें खाने में रस नहीं आता, कुछ पहनता है तो उसका ध्यान पत्नी की ओर जाता है और जब तक अपने से पहले और अपने से अच्छा उसे न पहना ले, जरा भी अच्छा नहीं लगता।

बल्कि सच्ची बात यह है कि जब वह पत्नी के लिए जितना अधिक त्याग का अवसर पाता और करता है, उतना अधिक सुख और संतोष होता है। ऐसा क्यों? इसलिए कि उसे पत्नी से प्रेम होता है। नहीं तो जिसकी संपत्ति का उपभोग कोई दूसरा करे तो अच्छा लगना दूर, बुरा ही लगना चाहिए। किंतु प्रेम के कारण जब पुरुष अपनी गाढ़ी कमाई के मूल्य पर पत्नी को सुख-सुविधा में देखता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे खाते, पहनते और व्यय करता देखते हैं तो प्रसन्न होता है। अब उसे अपना एकाकी स्वार्थ नहीं भाता। उसे उससे ग्लानि होती है, विचार में आते ही हीनता आती है। जो स्वार्थ पहले उसे सुख देता था, वही अब अरुचिकर लगने लगता है। इसका कारण केवल वही होता है कि उसे पत्नी से प्रेम होता है। पत्नी के प्रति प्रेम रंजना से जो सुख प्राप्त होता है, वह स्पष्ट ही स्वार्थ पूर्ति से प्राप्त होने वाले सुख से अधिक शीतल, संतोषप्रद तथा स्थायी होता है-यह अनुभव भी प्रभावित नहीं रहता।

फिर बच्चे होते हैं। प्रेम की परिधि का और अधिक विस्तार होता है। अभी तक पत्नी के साथ कुछ स्वार्थ अपना भी बना रहता था, लेकिन अब वह उतना भी नहीं रहता। अब यदि अपना पेट खाली है और बच्चे तृप्त हैं तो भी संतोष रहता है। अपने कपड़े फटे-पुराने हैं और बच्चे अच्छे वस्त्र पहनते हैं, तो इतने मात्र से ही आनंदित हो जाते हैं इतना ही नहीं, सबको खिलाने के बाद बचा हुआ खाने बैठे और बच्चे आते ही लूट मचा देते हैं। सब कुछ छीन-झपटकर खा जाते हैं। इस लूट-खसोट में और भी आनंद आता है। ऐसा क्यों? इसलिए कि बच्चों से प्रेम होता है। स्वार्थ और भी कई अंशों में समाप्त हो चुका होता है और त्याग भावना बढ़ने लग जाती है। प्रेम का जितना विस्तार उतनी ही स्वार्थ की हानि, जितनी ही स्वार्थ की हानि—उतनी ही त्याग भावना की वृद्धि—उतना ही सुख, संतोष और आनंद।

प्रेम की परिधि बढ़ती है। समाज, देश अथवा राष्ट्र तक फैल जाती है। राष्ट्र तक विस्तृत प्रेम की परिधि के ही अनुपात से त्याग भावना की वृद्धि होती है। राष्ट्र हित के लिए, देश-प्रेम के लिए व्यक्ति क्या नहीं दे देता, जीवन दे देता, पत्नी, पुत्रों और परिजनों को दे देता, संपत्ति दे देता, सर्वस्व दे देता है। जितना-जितना देता जाता है, उतना-उतना ही उठता जाता है और आनंद पाता जाता है। देश-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्त फाँसी पाते और गोली खाते समय भी आनंदित होते रहते हैं। किसलिए? इसलिए कि उन्हें देश, राष्ट्र अथवा समाज से प्रेम होता है। आनंद का निवास प्रेम में है न कि किसी अन्य वस्तु में। प्रेम की पूर्णता की परिणति ही आनंद की उपलब्धि और आनंद मिश्रित मृत्यु का परिपाक मोक्ष के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

यही प्रेम जब अपनी सारी सीमाओं को तोड़कर अखिल जड़-चेतन तक फैल जाता है, तब मनुष्य विभुरूप हो जाता है। मनुष्य का यह असीम विस्तार उसे आनंद सागर में निमग्न कर देता है। प्रतिक्षण सुख-संतोष, शीतलता और आनंद अनुभव होता है। सारा मंगल, सारा कल्याण और सारी स्वस्ति अनायास ही सदा-सर्वदा के लिए मिल जाती है। फिर कुछ भी मिलना शेष नहीं रहता।

प्रेम की उपलब्धि परमात्मा की उपलब्धि मानी गई है। प्रेम परमात्मा का भावनात्मक स्वरूप है। जिसे अपने अंतर में सहज ही अनुभव किया जा सकता है। प्रेम प्राप्ति परमात्मा की प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग है। परमात्मा को पाने के अन्य साधन कठिन, कठोर, दु:साध्य तथा दुरूह है। एकमात्र प्रेम ही ऐसा साधन है, जिसमें कठिनता, कठोरता अथवा दु:साध्यता के स्थान पर सरलता और सुख का समावेश होता है। प्रेम की आराधना द्वारा परमात्मा को पाकर मनुष्य परमात्मा स्वरूप ही हो जाता है।

यों तो कोई भी कह सकता है कि उसके हृदय में प्रेम का निवास है। ऐसा अनुभव भी हो सकता है। क्योंकि बिना प्रेम भावना के मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। उसे किसी-न-किसी से, किसी स्तर का प्रेम होना अनिवार्य है। प्रेम ही मानव जीवन की संजीवनी है। प्रेम भावना के सर्वथा समाप्त हो जाने पर मनुष्य मृत हो जाता है। अपने से लेकर संसार तक जिनका प्रेम सर्वथा समाप्त हो जाता है, उनकी रुचि, आकर्षण अथवा लगाव किसी से नहीं रहता,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तब या तो उनकी जीवन गति रुक जाती है अथवा वे पागल हो जाते हैं। अत्याचार, आततायित्व, रक्तपात, रोष, क्षोभ, कुंठा आदि के विकार भी पागलपन के लक्षण हैं। प्रेम के समाप्त हो जाने पर मनुष्य मरुभूमि की तरह तप्त तथा नि:सार हो जाता है, जो कि अस्तित्ववान होने पर भी मृत के सदृश ही होते हैं।

हृदय की सरलता तथा सदाशयता प्रेम पर ही निर्भर है। इसके नष्ट हो जाने पर मनुष्य अधिकांश में आतातायी बन जाता है, फिर चाहे वह अपने प्रति अनाचारी हो अथवा औरों के प्रति। आततायित्व भी मृत्यु का ही एक लक्षण है। शरीर से जीते हुए भी ऐसे मनुष्य आत्मा से मर चुके होते हैं। जीवन अनुभूति का कोई भी आनंद उन्हें नहीं मिलता। करुणा, दया, क्षमा आदि से बहने वाली शीतल वायु का अनुभव इन्हें नहीं होता। इन दोषों के साथ चलने वाला जीवन निश्चेष्ट मृत्यु से भी बुरा होता है। अस्तु, जीवित मनुष्य में प्रेम का कुछ-न-कुछ भाव होना अनिवार्य है।

तथापि जिसे प्रेम को, जिस आकर्षण अथवा रुचि को मनुष्य अपने अंदर अनुभव करता है, वह वास्तविक प्रेम नहीं होता। वह मात्र स्वार्थ के प्रति मोह की अनुभूति हुआ करती है।

प्राय: लोगों का अनुमान होता है कि उन्हें अपने परिवार से, समाज से और राष्ट्र से प्रेम है। किंतु क्या वे एक क्षण भी यह सोच पाते हैं कि उनका प्रेम सच्चा है अथवा मिथ्या? इसकी एक मोटी-सी पहचान यह है कि यदि वे कभी भी किसी दशा में कोई ऐसा व्यवहार नहीं करते, जिससे राष्ट्र, देश, समाज, परिवार अथवा अपने को कोई क्षति नहीं पहुँचती, उनका कोई अहित नहीं होता? यदि ऐसा है, तब तो एक बार कहा जा सकता है कि उन्हें उन संबंधों के प्रति प्रेम है अन्यथा नहीं। किंतु सच्चे प्रेम की कसौटी इससे कुछ ऊपर है। वह यह कि यदि कोई संबंधों तथा अनुबंधों के लिए कुछ त्याग करता है और उसके साथ अपना कोई स्वार्थ नहीं जोड़ता, साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही उसे उस उत्सर्ग में आनंद की अनुभूति होती है, तो उसका प्रेम सत्य ही कहा जायेगा।

अनेक बार लोग देश, राष्ट्र अथवा समाज के प्रति बड़ा प्रेम अनुभव करते हैं। उनका यह प्रेम बात-बात में प्रकट होता है। परमात्मा के प्रति भक्ति भाव में आँखें भर-भर लाते हैं। कीर्तन, भजन अथवा जाप करते समय धाराओं में रो पड़ते हैं। उनकी यह दशा देखकर कहा जा सकता है कि उन्हें समाज अथवा परमात्मा से प्रेम है। किंतु वे ही लोग अवसर आने पर उसके लिए थोड़ा-सा भी त्याग करने के लिए तैयार नहीं होते। ऐसे प्रेमी अथवा भक्तजन प्रेम से नहीं, भावातिरेक से परिचालित होते हैं। सच्चे प्रेम का प्रमाण है— त्याग। जो अपने प्रिय के लिए सब कुछ सुखपूर्वक त्याग करता है और जो उस त्याग के बदले में रत्ती भर भी कोई वस्तु नहीं चाहता, वही सच्चा प्रेमी है, भक्त है।

प्रेम में प्रदान के सिवाय आदान का विनिमय नहीं होता। वह विशुद्ध बलिदान, त्याग और आत्मोत्सर्ग की भावना है। सत्य प्रेमी अपने प्रियजन के हित और सुख के लिए सब कुछ दे डालता है और इस देने की भावना में दान अथवा प्राप्ति का कोई भाव नहीं रखता। किसी के लिए कुछ त्याग करते समय जब ऐसा अनुभव हो कि हम अपने लिए ही त्याग कर रहे हैं, अपने त्याग से दूसरे को मिलने वाला सुख जब अपनी आत्मा में अनुभव हो, तब समझना चाहिए कि हमारे हृदय में सच्चे प्रेम का शुभारंभ हो गया है। जिस दिन इस शुभ प्रेम का आरंभ हो जायेगा, संसार के सारे दु:ख शरीर, मन और आत्मा के तीनों ताप नष्ट होने लगेंगे। हर समय एक अनिर्वचनीय आनंद की शीतलता का अनुभव होता रहेगा।

प्रेम ही परमात्मा का अनुभूतिमय स्वरूप है। उसे प्राप्त करना ही मानव जीवन का ध्येय होना चाहिए। इसकी प्राप्ति के लिए सबसे पहली शर्त है नि:स्वार्थ होना। अपने हृदय का प्रेम अणु-अणु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में स्थापित कर उसके लिए निःस्वार्थ त्याग का अभ्यास करने वाले ठीक मार्ग पर चल पड़ते हैं, जो कि उस परमपिता परमात्मा की ओर जाता है। इस प्रेमभावना का विकास अपने से बड़ा आत्म प्रेम की परिधि को परमात्मा तक पहुँचाकर सरलता से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

अस्तु, आत्म कल्याण के इस क्रम को स्मरण रखते हुए मनुष्य को अपने जीवन का संचालन करना चाहिए—ज्यों-ज्यों प्रेम की परिधि बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों स्वार्थ घटता जाता है, ज्यों-ज्यों स्वार्थ घटता जाता है, त्यों-त्यों त्याग-भावना की वृद्धि होती जाती है, ज्यों-ज्यों त्याग की वृद्धि होती जाती है, त्यों-त्यों आत्मा में आनंद का आगमन होता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि मनुष्य परमानंद स्वरूप परमात्मा को पाकर भव-बंधन से मुक्त हो जाता है।

परमात्मा की प्राप्ति सच्चे प्रेम द्वारा ही संभव है

पूजा, पाठ, जप, ध्यान, अनुष्ठान आदि जो भी क्रियाएँ की जाती हैं, उनका मूल उद्देश्य परमात्मा के प्रति अपनी निष्ठा को गहरा करना होता है। ज्यों-ज्यों निष्ठा गहरी होती जाती है, त्यों-त्यों परमात्मा का प्रेम भाव धीरे-धीरे परिपक्व होकर भक्ति का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार उपासना का मूल तात्पर्य ईश्वर के प्रति प्रेम का विकास करना ही है।

परमात्मा के प्रति विकसित प्रेम जब अपनी चरमावधि में पहुँचता है, तब केवल परमात्मा तक ही सीमित नहीं रहता। वह विश्व रूप परमात्मा तक फैल जाता है। सच्चे भक्त और परमात्मा के सच्चे प्रेमी की पहचान यही है कि उसका प्रेमभाव संसार के सारे जीवों के प्रति प्रवाहित होता रहता है। कोई व्यक्ति कितनी ही पूजा और ध्यान, जप आदि क्यों न करता हो, पर उसका प्रेमभाव संकुचित हो, उसका प्रचार प्राणिमात्र तक न हुआ हो, तो उसे भक्त नहीं माना जा सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान का भक्त, परमात्मा को प्रेम करने वाला अपनी आत्मा और समाज के नैतिक नियमों को प्यार करता है। कारण यह होता है कि नैतिक नियमों में आदर्शवाद का समन्वय होता है और आदर्शवाद का ही एक व्यवहारिक रूप अध्यात्म होता है। अध्यात्म का संबध आत्मा से और आत्मा का परमात्मा से होता है। संसार से परमात्मा की ओर उन्मुख़ होने का यह क्रम है। भगवान का भक्त इस पावन क्रम से विमुख नहीं हो सकता। जो परमात्मा को प्रेम करेगा, वह उससे संबंधित इस क्रम में भी प्रेमभाव रक्खेगा।

जिसने आदर्शवाद को प्रेम करना सीख लिया उसने मानो परमात्मा को पाने का सूत्र पकड़ लिया। परमात्मा के मिलने में अपार आनंद होता है। लेकिन उसकी ओर ले जाने वाले इस क्रम में भी कम आनंद नहीं होता है। जो आत्मा द्वारा स्वीकृत समाज के नैतिक नियमों का पालन करता रहता है, आदर्शवाद का व्यवहार करता है, वह समाज की दृष्टि में ऊँचा उठ जाता है। समाज उससे प्रेम करने लगता है। ऐसे भाग्यवान व्यक्ति जहाँ रहते हैं, उसके आस-पास का वातावरण स्वर्गीय भावों से भरा रहता है। कटुता और कलुष का उसके समीप कोई स्थान नहीं होता। जिस प्रकार का निर्विघ्न और निर्विरोध आनंद परमात्मा के मिलने से मिलता है, उसी प्रकार का आनंद आदर्शवाद के निर्वाह में प्राप्त होता है।

स्वर्ग की उपलब्धि किसी लोक विशेष की उपलब्धि नहीं है। वह अनुकूल और पावन परिस्थितियों का एक धार्मिक नाम है। जहाँ सुंदर, सुखदायक और कर्तव्यपूर्ण परिस्थितियाँ होंगी, वह स्वर्ग ही माना जाएगा। ईश्वर के सच्चे भक्त में प्रेम की जो पावन-धारा बहती रहती है, उसके आधार पर उसके चारों ओर की परिस्थितियाँ भी प्रेमपूर्ण बनी रहती हैं। इसलिए भक्तजन हर समय स्वर्ग में ही निवास किया करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधन का मंतव्य ईश्वरीय प्रेम प्राप्त करना ही माना गया है। यदि साधना सच्ची है, तो उनका परिणाम प्रेम के रूप में ही मिलना चाहिए। सच्चे साधक का हृदय-प्रेम की धारा में परिप्लावित हो जाता है। वह प्राणीमात्र में अपनी आत्मा के दर्शन करने लगता है। आत्मीयता और उदारता प्रेम का ही तो रूप होता है। आत्मीयता का भाव मिलते ही संसार का दुख-सुख साधक को अपना दुख-सुख मालूम होने लगता है।

जिस प्रकार कुएँ में मुख डालकर आवाज करने से उसी प्रकार की आवाज कुएँ से निकलकर कानों में गूँजने लगती है, उसी प्रकार साधक के हृदय का प्रेम परमात्मा अथवा उसके व्यक्त रूप प्राणियों को प्राप्त होकर पुनः प्रेमी के पास ही वापस आकर उसे आत्म-विभोर कर देता है। इसका यह आशय नहीं कि परमात्मा अथवा प्राणी उसके प्रेम को स्वीकार नहीं करते और वह वैसे ही वापस कर दिया जाता है। बल्कि इसका आशय यह है कि जब साधक परमात्मा अथवा प्राणियों को प्रेम करता है, तो उनकी ओर से भी प्रेम पाता है।

उदारता और त्याग सच्चे प्रेम की अनिवार्य विशेताएँ हैं। जिसके प्रति प्रेम का भाव रखा जाता है, उसके प्रति कुछ त्याग करने की इच्छा होती है। प्रेम का स्तर जितना ऊँचा होता है, त्याग का भाव भी उसी अनुपात से बढ़ जाता है। भक्त भगवान के लिए, प्रेमी अपने प्रेमास्पद के लिए सर्वस्व त्याग कर देने की तैयार रहते हैं। प्राणिमात्र से प्रेम होने के कारण साधक सदा ही सबके प्रति त्याग करने और कष्ट उठाने के लिए तैयार रहता है। समय आने पर वह त्याग करता भी है। तथापि सामान्य स्थिति में भी वह संसार की सेवा तो करता और अपने उदार भाव का परिचय देता ही रहता है। उदारता और त्याग से रहित व्यक्ति को साधक नहीं माना जा सकता। प्रेम और त्याग का यह जीता-जागता उदारण भील बालक एकलव्य के चरित्र में पूरी तरह से देखने को मिलता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भील बालक एकलव्य धनुर्वेद सीखना चाहता था। उस समय धनुर्वेद के आचार्य द्रोणाचार्य थे। वे कौरवों और पांडवों को धनुर्विद्या सिखाने के लिए नित्य ही जंगल में जाया करते थे। एक दिन एकलव्य उनसे जंगल में मिला और शिष्य रूप में स्वीकार कर धनुर्विद्या सिखलाने की प्रार्थना की। किंतु जंगली जाति का होने के कारण द्रोणाचार्य ने उसे धनुर्विद्या की शिक्षा देने से इनकार कर दिया।

किंतु एकलव्य उससे निराश न हुआ। उसने मिट्टी से द्रोणाचार्य की मूर्ति बना और उसी में अपनी हार्दिक श्रद्धा स्थापित कर धनुर्वेद का स्वयं अभ्यास करने लगा। उसकी श्रद्धा और निष्ठा फलीभूत हुई। वह उस समय का अद्वितीय धनुर्धर बन गया और बाद में गुरु के कहने से अपना अगूँठा काटकर दे दिया।

मिट्टी के गुरु ने उसे कोई सहायता न की। सहायता की एकलव्य की अपनी गुरु भक्ति ने, जो कि उसके हृदय में निवास कर रही थी। इसके विपरीत यदि द्रोणाचार्य स्वयं भी उसे धनुर्विद्या सिखलाते और एकलव्य के हृदय में भक्ति भाव न होता तो वह जरा भी प्रगति न कर पाता। कौरवों के साथ यही घटित हुआ। उनमें गुरु-भक्ति की कमी थी, निष्ठा निर्बल थी। इसीलिए श्रेष्ठ आचार्य द्रोण के सिखाने पर भी वे अच्छे धनुर्धारी न बन सके। जबकि उन्हीं के साथ अर्जुन के हृदय में गुरु के प्रति सच्ची भक्ति और निष्ठा थी, जिससे वह अपने युग का यशस्वी और अमोघ धनुर्धर बन सका।

यही बात ईश्वरोपासना के संबंध में है। उसकी उपासना चाहे साकार अथवा निराकार रूप में की जाए, यदि श्रद्धा, भक्ति और निष्ठा आदि की, प्रेम प्रवण भाव की कमी रहेगी, तो उपासना किसी भी प्रकार सफल न होगी। इससे स्पष्ट है कि उपासना में पूजा, पाठ, ध्यान, जप, तप आदि की उतनी महत्ता नहीं है, जितनी कि सच्ची

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम भावना की। उपासना के रूप में साधक जो भी जप-तप, पूजा-पाठ करता है, उससे वह अपनी निष्ठा और प्रेम भावना को ही परिष्कृत एवं विकसित करता है। इस दिशा में वह जितनी-जितनी प्रगति करता जाता है, उतना-उतना ही ईश्वरीय अनुभूति का अधिकारी बनता जाता है। साधना का सार प्रेम अथवा भक्ति को ही माना गया है, बाह्य आडंबर को नहीं।

साधक यदि इस बात की खबर रखना चाहता है कि उसकी साधना समुचित रूप से विकास की ओर बढ़ रही है या नहीं, तो उसे यह देखना होगा कि उसके हृदय में प्रेम-भावना की वृद्धि हो रही है या नहीं। पूजा-पाठ तो वह बहुत करता है, किंतु उसकी भावना उसी प्रकार नीरस और कठोर बनी हुई है तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसकी साधना निष्फल जा रही है। विकास की दिशा में वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ रहा है। और यदि वह यह अनुभव करता है कि उसके हृदय में आत्मीयता, उदारता और प्रेम की भावना जाग रही है तो उसे विश्वस्त रूप से अपने पथ पर चलते जाना चाहिए। उसकी साधना सफलता की ओर जा रही होगी।

सच्ची तथा समुचित साधना का लक्षण यही है कि साधक के अंतःकरण में प्रेम की सुधारा प्रवाहित होती चले। उसे दूसरों का दुःख-सुख अपना जैसा अनुभव हो और प्राणिमात्र में अपनी आत्मा और अपनी आत्मा में प्राणीमात्र की आत्मा का दर्शन करे। जिस दिन साधक इस सार्वभौमिक प्रेम की अनुभूति करने लगेगा, उसी दिन से वह परमात्मा-मिलन की परिधि में प्रवेश कर जाएगा।

छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष आदि दोष प्रेम भाव के बाधक होने के कारण साधक को आगे बढ़ने से रोकते हैं, अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधक को इन पर विजय प्राप्त करना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होगा। हृदय को परिष्कृत एवं विकसित बनाने के उपाय यही है कि या तो अपने हृदय में प्रेम भावना का विकास किया जाय या उक्त दोष का दमन किया जाय। इन दोनों उपायों का परिणाम एक ही होगा। प्रेम का विकास करने से प्रेम में वृद्धि होगी और दोषों का दमन हो जाएगा और यदि दोषों का दमन कर दिया जाएगा तो अवरोधों के टूट जाने से हृदय में प्रेम भावना का विकास स्वयं ही होने लगेगा। तात्पर्य यह कि ईश्वर-मिलन और आध्यात्मिक सफलता के लिए साधक के हृदय में प्रेमभाव का विकास तथा अभिवृद्धि होनी चाहिए। उसके लिए उपाय कोई भी क्यों न अपनाया जाए।

त्यागपूर्ण सेवा भाव को प्रेम का प्राण माना गया है। प्रयत्न और अनुभव कितना ही क्यों न किया जाय, किंतु यदि उसमें त्याग और सेवा भाव नहीं है तो वह सच्चा प्रेम नहीं है। वह अनुभूति आसक्ति अथवा मोह का ही एकरूप होगी। मोह अथवा आसक्ति आध्यात्मिक अवगुण है। इनके रहते हुए विकास की वांछित दिशा में नहीं बढ़ा जा सकता। प्रेम आत्मा की शक्ति है और मोह अथवा आसक्ति उसकी निर्बलता, निर्बलता को साथ लेकर ईश्वर-मिलन के उच्च-पद पर चढ़ सकना संभव नहीं।

प्रेम की वंचना में मोह अथवा आसक्ति का परिपालन न होने लगे, साधक को इस बात की सावधानी रखनी चाहिए। यदि उसे किसी आस्पद से प्रेम तो अनुभव होता है, पर उसके लिए त्याग करने की, उसकी सेवा करने की जिज्ञासा नहीं होती, तो विश्वास कर लेना चाहिए कि वह अपनी आत्मा में प्रेम नहीं, मोह का ही विकास कर रहा है। ऐसी दशा में उसे तुरंत सावधान होकर अपना सुधार कर लेना चाहिए।

जिसके प्रति सच्चा प्रेमभाव होगा उसके प्रति त्याग और सेवा का भाव उदय होना स्वाभाविक है। सच्चा प्रेमी अपने को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कष्ट देकर, अपने को निर्लोभ और निःस्वार्थ रख अपने प्रेम पात्र को अधिकाधिक सुख पहुँचाने का प्रयत्न करता है। अपने प्रेमास्पद ईश्वर को प्रसन्न करने, उसे सुख पहुँचाने के लिए उसकी भी सेवा करनी होगी, उसके लिए त्याग करना होगा। किंतु ईश्वर स्थूल रूप में तो प्राप्त नहीं होता और न उसे सीधे-सीधे किसी के त्याग की आवश्यकता होती है। ऐसी देशा में कैसे तो उसे सुख पहुँचाया जा सकता है और कैसे प्रसन्न किया जा सकता है ?

इसका एक सरल और सुंदर-सा उपाय यही है कि हम ईश्वर के प्रति जिस त्याग को करना चाहते हैं, उसकी जो सेवा करना चाहते हैं, उनका लाभ उनके अंश संसार के अन्य जीवों को पहुँचाएँ। संसार के सारे जीवों में परमात्मा का निवास है। उनको दी हुई हर सेवा उस एक ईश्वर को ही प्राप्त होती है। प्राणियों की सेवा ईश्वर की ही सेवा है और उनके लिए किया हुआ हर त्याग उसके प्रति ही किया गया माना जायेगा।

इस प्रकार ईश्वर-मिलन के उपाय को सारांश में समझकर उसकी साधना करनी चाहिए। जप-तप, पूजा-पाठ, योग-अनुष्ठान द्वारा अपनी आत्मा में प्रेमभाव का विकास करते हुए, उसकी सचाई के प्रमाण में सेवापूर्ण त्याग का लाभ प्राणिमात्र के देते हुए परमात्मा को प्रसन्न करते रहना चाहिए। धीरे-धीरे वह समय आ जाएगा, जब परमात्मा प्रसन्न होगा और साधक को अपनी करुणामयी, आनंदमयी और कल्याणमयी गोद में स्थान देगा और तब जीवन की सारी साधना सफल हो जाएगी और उसके सारे मूल्य एक साथ मिल जाएँगे।

प्रेम-साधना हमें परमात्मा से मिला देती है

परिश्रम के पश्चात् विश्राम, क्षुधा के पश्चात् भोजन और कष्ट के पश्चात् सुख का आनंद मिलता है-इसी प्रकार मिलन का आनंद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विछोह के बाद ही मिलता है। दो स्नेही जन एक स्थान पर रहकर जब नित्य मिलते हैं तो नवीनता समाप्त हो जाने पर मिलन का आनंद शिथिल हो जाता है। किंतु जब वे दोनों सुहृदय कुछ समय अलग रहने के बाद मिलते हैं, तो मिलन का आनंद सहस्रों गुना हो जाता है।

परमात्मा एकाकी था। उसे अपने एकाकीपन से विरक्ति हुई और चाहा कि एक से बहुत हो जाऊँ। उसके अंतर से "**एकोऽहं बहुस्यामि**" की ध्वनि होते ही सृष्टि-रचना का काम आपसे आप प्रारंभ हो गया और जड़-चेतनामय यह सारा संसार बनकर तैयार हो गया।

संसार और कुछ नहीं, एक परमात्मा का ही अंश है। उसी से उत्पन्न हुआ है, उसी में लीन हो जाएगा। चेतन सृष्टि परमात्मा का विशेष अंश है और उसमें व्यक्ति विशिष्ट-वह परमात्मा की समीपता के क्रम में सबसे आगे और सबसे पहले हैं। व्यक्ति अन्य जीवों की अपेक्षा परमात्मा के अधिक निकट है। इन दोनों के बीच पारस्परिक प्रेम की धारा भी अधिक गहरी है। यों तो परमात्मा को अपनी सृष्टि के अणु-अणु से प्रेम है। किंतु तब भी व्यक्ति से कुछ अधिक प्रेम-भाव है। इसका कारण यह है कि अन्य सृष्टि की उत्पत्ति जहाँ माया के माध्यम से हुई है, वहाँ मनुष्य जीवात्मा के रूप में उसका सीधा-साधा अपना अंश है, जिसे व्यक्ति ने अपने विवेक द्वारा समझ कर उसके प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर ली है।

तो मनुष्य परमात्मा का विशिष्ट अंश है। उसने 'बहुस्यामि' की इच्छा से अपने इन अंशों को अपने से पृथक कर संसार में बिखेर दिया है। इसलिए कि विछोह के बाद मिलन का अनिर्वचनीय आनंद प्राप्त हो सके। इस मिलन का माध्यम क्या हो सकता है? प्रेम और केवल प्रेम। विछोह से बढ़ी प्रेम की तड़पन ही वह साधन है, जो व्यक्ति को परमात्मा की ओर और परमात्मा को व्यक्ति की ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकर्षित करती है। इसीलिए प्रेम की शक्ति को परमात्मा-मिलन की बहुत बड़ी साधना माना गया है। जिन दो के बीच प्रेम नहीं होता, वे परस्पर कभी नहीं मिल पाते।

परमात्मा से मिलन का आनंद एक लंबी साधना और लंबी अवधि के बाद होता है। इस बीच जीव अपने प्रेम की कसौटी की अभिव्यक्ति कहाँ करे? किस माध्यम से अपनी इस आनंददायक वेदना को सहन करे? इसका एक ही उपाय है। परमात्मा के अंश जीव-मात्र से प्रेम किया जाय। जिस प्रकार प्रियजन की वस्तुएँ और उसके अनुबंध भी प्रिय होते हैं, विरही उनमें ही प्रेमास्पद का प्रतिबिंब देखकर उसकी याद से संतोष कर लेता है, उसी प्रकार जीवों का पारस्परिक प्रेम परमात्मा के प्रति प्रेम का ही एक प्रकार है। और यही कारण है कि जहाँ परस्पर प्रेम, सौहार्द्र और आत्मीयता होती है, वहाँ भाव रूप परमात्मा की उपस्थिति मानी जाती है और उसी के मिलन जैसा आनंद छाया रहता है। मनुष्य का पारस्परिक प्रेम परमात्मा से ही प्रेम का एक रूप है।

मानव जीवन परमात्मा की महती कृपा है। व्यक्ति और कुछ भी तो नहीं, परमात्मा का ही एक अंश है, जिसको परमात्मा ने स्वयं ही अपने से पृथक कर पुनर्मिलन के लिए निर्मित किया है। परमात्म मिलन ही मानव जीवन का ध्येय है। इस ध्येय की पूर्ति प्रेम द्वारा ही हो सकती है। जिन मनुष्यों के बीच परस्पर प्रेम, सौहार्द्र और सहयोग की भावना रहती है, जो दूसरों के प्रेम और प्राणिमात्र पर दया का भाव रखते हैं, और सबके प्रति स्नेह एवं शिष्टता का व्यवहार करते हैं, वे सब परमात्मा से मिलने के अपने ध्येय की ओर ही अग्रसर होते रहते हैं।

परमात्मा से मिलन का उपाय साधना, उपासना तथा योग आदि भी बतलाया गया है। किंतु यह उपाय भी तभी सफल होते हैं, जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इनमें भी प्रेम की प्रधानता होती है। यह प्रेम श्रद्धा, भक्ति, आस्था, विश्वास आदि किसी रूप से भी हो सकता है। श्रद्धा अथवा प्रेम से रहित कोई भी साधना सफल नहीं हो सकती। प्रेम की व्याकुलता ही परमात्मा से मिलाने में समर्थ है। इसके बिना सारे तप कठोर तितिक्षा के सिवाय और कुछ नहीं होते।

अध्यात्म का मूल मंत्र प्रेम ही बताया गया है। भक्ति-साधना से मुक्ति का मिलना निश्चित है। जिस भक्त को परमात्मा से सच्चा प्यार होता है, वह भक्त भी परमात्मा को प्यारा होता है। उपनिषद् का यह वाक्य '**रसो वै सः**' इसी एक बात की पुष्टि करता है- 'परमात्मा प्रेम रूप है' इसका स्पष्ट तात्पर्य यही है कि जिसने प्रेम की सिद्धि कर ली है, उसने मानो परमात्मा की प्राप्ति कर ली है अथवा जहाँ प्रेमपूर्ण परिस्थितियाँ होंगी, वहाँ परमात्मा का वास माना जाएगा। परमात्मा की प्राप्ति आनंद का हेतु होता है।

प्रेम का आनंद अनिर्वचनीय है। वह एक ऐसा आनंद होता है, जिसकी तुलना में संसार का दूसरा कोई आनंद नहीं रखा जा सकता। प्रेम की इस अनुभूति का आनंद कबीर ने लिया और एक स्थान पर कहा है—'राम बुलावा भेजिया, कबिरा दीना रोय' जो सुख प्रेमी संग में, सो बैकुंठ न होय, भक्त प्रेम के आनंद में बैकुंठ का निवास तुच्छ मानता है। जब उसको प्रेम के वातावरण से निकालकर प्रेमीजनों से पृथक करके स्वर्ग ले जाने की बात कही जाती है, तो वह रोने लगता है, उसे अपार दुःख होने लगता है। प्रेम का आनंद ऐसा ही आनंद है।

किंतु प्रेम में इस प्रकार के अनिर्वचनीय आनंद की प्राप्ति तभी होती है, जब वह सच्चा हो, निःस्वार्थ हो। झूठा प्रेम तो शत्रुता की नींव होता है, दुःख और क्लेश का आधार होता है। बहुत बार लोग अपने मतलब से बड़ा प्रेम दिखलाने लगते हैं। बहुत से लोग इस प्रवंचना में आ भी जाते हैं। मतलब निकल जाने अथवा उस विषय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में निराश हो जाने पर स्वार्थी व्यक्ति का प्रेम समाप्त हो जाता है और तब वह अपने सामयिक प्रेमास्पद की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखता, मिलने पर पीठ फेर लेता है। उसका यह व्यवहार वहीं से बुराई, मनोमालिन्य अथवा शत्रुता का सूत्रपात कर देता है। इसलिए कहा गया है कि एक बार प्रेम भले ही न किया जाए, पर स्वार्थपूर्ण प्रेम का नाटक न किया जाए। नहीं तो इसमें हित के स्थान पर अहित होता है। आनंद के स्थान पर दुःख मिलता है।

आनंद, संतोष, प्रफुल्लता और आत्म भाव आदि की दिव्य अनुभूतियाँ वहीं प्राप्त हो सकती हैं, जहाँ निर्मल और निःस्वार्थ प्रेम की पावन गंगा बहती है। जिन परिवारों, मित्रों और सुहृदयजनों के बीच सच्चा प्रेम रहता है, उनके बीच क्या संपन्नता और क्या विपन्नता—किन्हीं भी स्थितियों में कलह, क्लेश और विवाद नहीं होता। उनका सारा जीवन एक स्निग्ध पुष्करिणी की भाँति आनंद की शीतलता और सरसता से भरा रहता है। यह मानव जीवन की एक महान उपलब्धि है। प्रेम-विहीन जीवन एक शुष्क मरुस्थल के समान होता है। उसमें रस अथवा आनंद का एक कण भी नहीं मिल सकता, फिर चाहे उसमें कितनी ही धन-दौलत और सुख-साधन क्यों न भरे हों।

प्रेम द्वारा शत्रु को भी वश में किया जा सकता है। प्रथम तो जो प्रेमी हृदय होते हैं, वे स्वभावतः अजातशत्रु होते हैं। संसार में उनसे द्वेष करने वाला कोई नहीं होता और यदि अपने दुष्ट स्वभाव-वश कोई उनसे द्वेष मानने भी लगता है तो भी वह उनके सम्मुख आकर विनत हो जाता है। सच्चे संत और महात्माओं को न जाने कितने चोर, डाकू मिले और उन्होंने उनको हानि पहुँचानी चाही। किंतु पास जाते ही उनके आंतरिक प्रेम से प्रभावित होकर पैरों पर ही गिरे हैं। बहुत-से डाकू और दुष्ट लोग महात्माओं की प्रेमानुभूति से विवश होकर संत तक बन गये हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकस्मिक घटनाओं को यदि छोड़ दिया जाए तो भी ऋषि-मुनियों के आश्रम का हाल पढ़कर भी इस सत्य की पूर्णतः पुष्टि हो जाती है। पूर्वकालीन ऋषि आश्रमों में शेर, चीते आदि हिंस्र जंतु आते थे और ऋषियों आक्रमण करने की बात तो दूर वे अपने स्वभाव विरोधी गाय और हिरनों आक्रमण थे। नहीं करते उनके साथ उठते, बैठते और खेलते थे। इसका कारण और कुछ नहीं, ऋषि का यह सच्चा प्रेम ही होता था, जो जीवमात्र की मैत्री के रूप में उसके अंतर में प्रवाहित होता रहता था। उसी के संपर्क में आकर सारे जीव अपना द्वेष भाव भूल जाया करते थे।

सांसारिक जीव ही नहीं, ईश्वर तक प्रेम के वश में हो जाता है। 'भक्त के वश में भगवान'-यह कथन आज नया नहीं है। यह युगों से अनुभूत किया हुआ एक सत्य है। जिन महात्माओं, संतों और साधुजनों ने भगवान की भक्ति की है, उससे निश्छल प्रेम किया है, उन्होंने भगवान को अपने वश में कर लिया है। उसे दर्शन देने के लिए मजबूर कर लिया है। तुलसी, सूर, नामक आदि संत इसके प्रमाण हैं। प्रेम का यह प्रभाव कोई चमत्कार नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक तथ्य है। प्रेम की हिलोरें जिस मानव में उठती रहती है, जो सहृदय भक्त संसार के अणु-अणु में अपने प्रेमास्पद परमात्मा को ही देखता है, उसकी आत्मा का स्तर असाधारण कोटि तक उन्नत हो जाता है। उसमें समग्र दिव्य गुणों का विकास हो जाएगा। उसके चरित्र और आचरण में आदर्शवाद का समावेश हो जाएगा, जिससे वह महान और पवित्र कर्म ही करेगा। समाज अथवा आत्मा विरोधी कर्म उससे हो ही नहीं सकता। ऐसे सुकर्मी और पवित्र भक्त पर परमात्मा स्वयं ही आसक्त हो जाता है और उसकी पुकार पर प्रकट होकर दर्शन देता है।

यह प्रेम का ही प्रभाव है जो पाषाण को भी भगवान बना देता है। मूर्ति क्या है? पाषाण की एक प्रतिमा मात्र। उसमें अपनी व्यक्तिगत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशेषता कुछ नहीं होती। किंतु यही साधारण प्रस्तर प्रतिमा तब परमात्मा के रूप में बदल जाती है और वैसा ही प्रभाव संपादन करने लगती है, जब भक्तों की प्रेमभावना उसमें समाहित हो जाती हैं। भक्त का प्रेम पाते ही पाषाण खंड अपनी शोभा, आकर्षण, तेज और प्रभाव में सजीव हो उठता है। प्रतिमा पूजन का तत्त्व-ज्ञान यही है कि परम परमात्मा, ब्रह्म, सामान्यजनों के लिए अज्ञेय और असाध्य होता है, उससे प्रेम किया जा सकता है, उसकी भक्ति भी की जा सकती है, किंतु यह भावना मानसिक अस्थैर्य के कारण निराधार रह जाती है।

मनुष्य की भावना एक आधार चाहती है, एक ऐसा अवलंब चाहती है, जिसका सहारा लेकर वह ठहर सके और अपनी वांछित दिशा में विकसित भी हो सके। मानव की भक्ति-भावना को आधार देने के लिए ही मूर्ति पूजा का आविष्कार किया गया है। युग-युग से परमात्मा के प्रतीक के रूप में मूर्ति पूजन होता आ रहा है तथा लोग उस माध्यम से आनंद और सद्गति पाते चले जाते हैं। इस प्रयोग में एक महान आध्यात्मिक तथ्य वर्तमान है। वह यह कि जिस किसी में, अपनी भावना का अरोपण कर प्रेम किया जाएगा, वह वस्तु चाहे जड़ हो या चेतन, सजीव हो अथवा निर्जीव व्यक्त की भावना के अनुसार ही फलीभूत होने लगती है।

मूर्ति पत्थर अथवा धातु की बनी एक निर्जीव प्रतिमा होती है। किंतु भक्त से परमात्मा की भावना पाकर वह उसके लिए भगवान ही बन जाती और तदनुसार ही फल देने लगती है। तथापि मूर्ति में यह विशेषता आती तब ही है, जब भगवान के साथ अखंड आस्था और असंध श्रद्धा का भी समावेश हो।

प्रेम संसार का अमृतत्व माना गया है। अमृत की तरह ही इसमें आनंद और अमरता का गुण होता है। प्रेमी का हृदय प्रतिक्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंद से परिप्लावित रहता है और परमात्मा से सान्निध्य पाकर वह अमर पद तो पा ही लेता है। इसलिए इन दोनों स्थितियों को पाकर मानव जीवन को सफल और सार्थक बनाने के लिए प्रेम की साधना करनी ही चाहिए। यह साधना अपने आस-पास से आरंभ कर जीव मात्र को लेते हुए निखिल ब्रह्मांड तक विस्तृत की जा सकती है और प्रेम ही परमात्मा है—इस तथ्य वाक्यांश को अपने इसी जीवन में चरितार्थ कर मुक्ति और मोक्ष का लाभ उठाया जा सकता है।

ईश्वर का प्रतिबिंब प्रेम है, प्रेम हृदय का आलोक

एक आदमी ने सूफी संत खुसरो के समीप जाकर पूछा—"आपको रात में नींद भी आती है अथवा रात में भी ईश्वर की याद में रोया करते हो?" खुसरो ने उत्तर दिया-

मन कुजा खुसपम् कि अज फरमादे मन।
शब न मीखुसपद् कसे दर कुए तो॥

ऐ भाई! मुझे नींद कहाँ आती है, स्थिति तो यह है कि मेरे रोने से पड़ोसी भी नहीं सो पाते।

प्रेम-मानवीय गुणों का, भक्ति का वह स्वरूप है, जो सांसारिकता हो या आध्यात्मिकता—दोनों के लिए इतनी शक्ति, उष्णता और क्रियाशीलता प्रदान करता है, जितनी अन्य कोई भी भावना पैदा नहीं कर पाती। प्रेम ही वस्तुतः इस लोक में लोक संचालन व व्यवस्था का मूलाधार है। प्रेम ही वह तत्त्व है, जिसका विकास हुए बिना परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते।

ऐसा जानने से पहले प्रेम की पहचान आवश्यक है, प्रेम एक अनादि तत्त्व है, दर्शन है। भौतिक सुखों की आकांक्षा का नाम प्रेम नहीं है, रूप-सौंदर्य पर दीवानगी का नाम भी प्रेम नहीं है। प्रेम कर्तव्य और आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा का नाम है। एक बार शायर बलदेव के पास एक युवक ने जाकर पूछा—श्रीमान, मुझे युवती से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम है। मैं चाहता हूँ कि वह हर क्षण मेरे पास रहे और कहीं न जाए, इस पर बलदेव ने उत्तर दिया—

हुस्न पर मुश्ताक होना हर किसी को पसंद है।
'बल्देव' सादिक यार दिलोजाँ निसारी और है॥

अरे मित्र! सौंदर्य पर न्योछावर होना कोई बात नहीं, यह तो हर कोई कर सकता है। अच्छी वस्तु किसे नहीं लुभाती, पर श्रेष्ठ वस्तु की आकांक्षा तो वही सार्थक है, जो उस पर अपना हृदय, अपना प्राण भी निसार कर सकता हो। हृदय और प्राण दिए जाने का अर्थ अपनी क्षमताओं का औरों के उत्थान में प्रयोग करना है। सच्चे प्रेम का अर्थ है—हमारे पास जो भी ज्ञान, वैभव, विभूतियाँ हैं उनसे अपने प्रेमास्पद की इच्छाओं, आकांक्षाओं और वृत्तियों का विकास किया, जाए उसे यशस्वी बनाया जाये। ऐसे प्रेम में पाना कम, खोना ही अधिक है।

प्रेम 'रस' है, ढककर रखा जाता है। दिखावट—उसे खोलकर रखना विकृति उत्पन्न करता है। सांसारिक प्रेम अपने प्रियास्पद के प्रति कर्तव्य और आत्मोन्नति के रूप में स्वत: व्यक्त होता है। इस प्रकार ईश्वरीय प्रेम लोकसेवा, दया, करुणा, उदारता आदि दैवी गुणों में स्वत: अभिव्यक्त होता है। न तो संसाराभिमुख प्रेम को चिल्लाकर व्यक्त करना आवश्यक है और न ही भक्ति, प्रेम का बखान–

जिन्हें है इश्क सादिक वे कहाँ फर्याद करते हैं।
लबों पर मुहरे खामोशी दिलों से याद करते हैं॥

जो सच्चे प्रेमी होती है, वे अपना प्रेम दिखाते नहीं फिरते, उनका मुँह बंद और दिल याद करता रहता है।

वस्तुत: प्रेम एक शक्ति है, यदि उसे बाँधकर न रखा जाए तो वह जीवन का बहुमुखी विकास कर सकने की अपेक्षा इधर-उधर बिखरकर नष्ट ही हो जाती है। ईंधन इंजन के भीतर जलाया जाता है तो वह शक्ति देता है, ताकत देता है, जो उस इंजन और इंजन के साथ जुड़े हुए हजारों डिब्बों और यात्रियों को खींचकर गंतव्य तक पहुँचा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देती है। यदि वही आग पटरी से बाहर बिखरी होती, तो वहाँ न कोई गति होती न प्रगति। भौतिक प्रगति का पथ हो अथवा आत्मोन्नति का, ईश्वर दर्शन का मार्ग प्रेम को भीतर ही छिपाकर रखा जाता है।

हृदय में जगाया प्रेम नष्ट नहीं होता, निरर्थक नहीं जाता। वह प्रेम यदि भौतिक है तो अंत:वृत्तियों को विकसित कर जीवन में क्रियाशीलता, स्वालंबन, कला निपुणता, अनुशासन और कर्तव्य-परायणता के भाव पैदा करता है। अपनी पत्नी से प्रेम करके कोई उसके पास बैठा नहीं रहता। वह जानता है कि बैठना तो किसी भी क्षण के लिए ठीक नहीं है, फिर बैठना तो जीवन की इतिश्री, आह्लाद और उल्लास को खो देना है, वह अपनी पत्नी को सजाने-सँवारने की आवश्यकता अनुभव करता है, उसे कर्म करने की आवश्यकता पड़ती है वह स्वयं क्रियाशील होती है, विकास की नई विधियाँ खोजता है और अपने आपको सांसारिक द्वेष, आकर्षणों से बचाकर भी रखता है, क्योंकि उसका लक्ष्य तो उसके पास है, भटकने की उसे कहाँ फुरसत ?

इस प्रकार परमात्मा का प्यार मानसिक शक्तियों को, बुद्धि को सूक्ष्म बनाता है। प्रज्ञाचक्षु ईश्वर के भक्त ही होते हैं, आत्मपरायण व्यक्ति तीन काल की बातें जान लेने जितना पवित्र हो जाता है। काव्य-सृजन की क्षमता, दूरदर्शिता, वाक सिद्धि, भाव-विह्वलता यह सब ईश्वरीय प्रेम की ही किरणें हैं-ईश्वरीय प्रेम से अंत: सामर्थ्यों का विकास ध्रुव सत्य है। ऐसे प्रेमी के लिए प्रियतम तो अपने आप न्योछावर होता है-

कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
पीछे-पीछे हरि फिरत कहत कबीर-कबीर॥ (कबीर)
साँवलिया मैंने चाकर राखो री। (मीरा)

प्रेमी की चाह तो एक ही होती है—प्रेमी की याद न भूल जाये, उसे तो प्रेमी के प्रेम के अतिरिक्त और किसी वस्तु की इच्छा क्यों होने लगी ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिल देके लिया करते हैं सौदा यहीं उश्शाक ।
सौदाई कभी दूसरा सौदा नहीं करते॥

अंत:करण का प्रेम, प्रेम से ही संतुष्ट होता प्रेम को अपनी मस्ती ही क्या कम सुखद है जो उसके आगे किसी और सुख की आकांक्षा की जाए। एक–दूसरे के लिए निरंतर जलने से रवि–प्राण के मिलन जैसा आनंद मिलता है। प्रत्यक्ष देखने में विरह की जलन और दरद के अतिरिक्त कुछ नहीं दीखता पर–

मिली वह दर्द में लज्जत कि जख्मे दिल पै गर कोई।
छिड़कता है नमक तो हम उसे मरहम समझते हैं॥
वस्ल में हिज्र का गम, हिज्र में मिलने की खुशी।
कौन कहता है जुदाई से वस्ल अच्छा है॥

विरह को प्रेम के दर्द का अपना रस है, अपनी अनुभूति है उसमें तो दूसरों के द्वारा दिया दु:ख भी अच्छा लगता है। मिलना–बिछुड़ना दोनों में एक–सा सुख यही प्रेम की विशेषता है। परमात्मा दो विपरीत शक्तियों की एकीभूत सत्ता ही तो है इसीलिए तो कहते हैं, जहाँ प्रेम है वहाँ परमात्मा है। प्रेम हृदय का प्रकाश है। ईश्वर का प्रतिबिंब प्रेम ही है।

प्रेम–अमृत का झरना

परमेश्वर का कराल मुख अग्नि जिह्वा की तरह है और उससे प्रेम करना यज्ञ। वह यज्ञ जिससे देह, प्राण, मन, वस्तु, परिस्थिति, ममता, राग, कामना, मोह आदि को समिधाएँ बनाकर स्वाहा किया जाता है। प्रेम की परीक्षा यही तो है कि हम अपनी प्रिय वस्तुओं का प्रेमी के लिए कितना नि:स्वार्थ उत्सर्ग कर सकते हैं। जब तक विवाह नहीं होता व्यक्ति केवल अपने हित की बात सोचता है, तब तक अपने लिए सबसे अच्छा खाना, सबसे अधिक खर्चा, सबसे अच्छे साधन चाहता है। उनमें कोई त्रुटि हो, अभाव दिखाई दे तो वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़ने-झगड़ने पर उतारू हो जाता है। और किसी को भी उसी तरह अधिक पाने की इच्छा और अधिकार का उसे किंचित् भी ज्ञान न था, क्योंकि उसे मालूम नहीं था कि प्रेम जैसी, उत्सर्ग जैसी सुखद वस्तु भी संसार में कुछ है। जब तक लेना ही लेना, स्वार्थ ही स्वार्थ था, तब तक अधिक पाकर भी उसके मन में संतोष और तृप्ति न थी।

फिर विवाह हो गया और नई दुलहन आ गई। दुलहन के अंग प्रत्यंग, नाक-नकशा, पहराव-ओढ़ाव में अपनी बहन, बुआ, भावज से थोड़ा ही अंतर था, किंतु वह एक समर्पण का भाव-'मैं केवल तुम्हारी हूँ' ऐसा भाव लेकर जो आई थी, इसलिए अब उस व्यक्ति के सुख और स्वार्थ, संतोष और तृप्ति का माध्यम धर्मपत्नी हो गई। अपना आपा नष्ट हो गया। धर्मपत्नी को आत्म समर्पण का लाभ यह मिला कि उसे न जाने क्या-क्या मिल गया, पर खोया उस व्यक्ति ने भी नहीं। देखने में नव वधू ने उसके स्थूल सुखों को छीनना प्रारंभ कर दिया, किंतु वह जानता है कि बदले में उसे जो प्रेम मिल रहा है, उस सुख की तुलना में वस्तुओं का सुख तुच्छ और नगण्य है, इसलिए अब उसे अपना ध्यान नहीं रहता। वह अपने की अपेक्षा अपनी पत्नी की सुख-सुविधाओं की चिंता करने लगता है। प्रेम की इस परीक्षा में दोनों ने ही जो कुछ पाया उस पर उससे भी अधिक न्योछावर किया जा सकता है, यह कोई नव-विवाहित दंपति ही जानते हैं।

परमात्मा के प्रेम का अमृत समुद्र की तरह गहरा और अपार है। सामान्य हाड़-मांस के शरीर वाले सौंदर्य के प्रति प्रेम भाव से मनुष्य की थोड़ी देर के लिए ऐसी तृप्ति मिलती है कि मनुष्य उसकी बार-बार याद करता है और भटक-भटक जाता है, किंतु प्रेम के अगाध सागर के पास पहुँचकर द्वंद्व और भटकने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह तो प्रेम का निरंतर बहने वाला झरना है जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कभी सूखता नहीं और जिसके पास पहुँच कर तृप्ति कभी खुटती नहीं।

किंतु ऐसा प्रेम, प्रार्थना और थोड़ी-सी पूजा तक ही सीमित नहीं रह सकता। जब नाशवान वस्तुओं का प्रेम आँखों में नशा बन छा जाता है, एक प्रेमी की मूर्ति के अतिरिक्त और कुछ सुहाता नहीं, मन में उसी की भाव-भंगिमाओं, मधुर निःश्वास और मीठी-मीठी बातों के अतिरिक्त कुछ टिकता नहीं, तो परमेश्वर के बारे में यह कल्पना कैसे कर ली जाए कि वह थोड़ी देर की प्रार्थना-पूजा से भावनाओं में मस्ती बनकर उतर आयेगा। उसके लिए तो मीरा, सूर, तुलसी, गोरखनाथ, रैदास, कबीर, चैतन्य महाप्रभु, नानक और संत गोविंददास की तरह बस एक ही रट—"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई," "अँखिया हरि दर्शन की भूखी", "राम प्रान-प्रिय जीवन जी के", "मन रे राजा राम होइ ले निरदन्द", "दरसन तोरा जीवन मोरा, बिन दरसन क्यों जीवै चकोरा", "राम न भूला दास कबीर", "न धनं न जनं न सुंदरीं कवितां वा जगदीश कामये", "तुमरी अस्तुति तुम ते होई" और "बल्लभ चरन लग्यो चित मेरो" लगानी पड़ती है। अपने अहंभाव को भूल कर उस विशाल-बाहु, सहस्त्रपाद परमेश्वर की प्रेमानुभूति का सुख मिलता है। इन संतों के पास कोई जमीन, जायदादें और जागीरें नहीं थी। प्रेम की सत्ता पर ही वह स्वर्गीय सुखों का रसास्वादन जब तक जिए, करते रहे और मरे तो—मुआ कबीर रमत श्री राम-ईश्वर में ही विलीन हो गए।

पूर्ण समर्पण का ही दूसरा नाम ईश्वर-प्रेम है, पर समर्पित सभी वस्तुओं के बदले में उसी गुण और स्वभाव का अनंत गुना सुख प्रेमी को मिलता है। देह भगवान की हो जाए तो फिर वासनाओं से क्या लगाव? उसकी वस्तु उसी के लिए। फिर उस पर अनावश्यक कामनाओं का बोझ क्यों ? जो रूखा-सूखा मिले, वही खाना जहाँ सौर भर की जगह मिले, वहीं सो जाना, उस संयमी के लिए रोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शोक, हारी-बीमारी की क्या चिंता? उसके लिए सर्वत्र संतोष ही संतोष के दर्शन होते हैं।

प्राण परमेश्वर को दे दे तो वह और भी बढ़ता ही है। प्राण की छोटी-सी मात्रा को किसी लौकिक कार्य में नियोजित करके तल्लीनता का अपार सुख मिलता है, पर उससे प्राण का विनिमय होता है। जिस तरह शारीरिक शक्ति देकर कामोपभोग का क्षणिक सुख प्राप्त किया जाता है। प्राण के मूल्य पर ही तो सांसारिक भोग आकर्षित किए जाते हैं, पर अपने प्राणों को जब प्रेमी भगवान के प्राणों से जोड़ देता है तो उसकी अपनी मेधा, प्रज्ञा और ऋतुंभरा बुद्धि का विकास होता है। तालाब के पास के गड्ढे को तालाब से संबंधित कर दो तो गड्ढे का पानी भला तालाब को क्या भरेगा? अपने पानी से भरकर उस नन्हें से गड्ढे को भी तालाब बना देने की क्षमता के समान प्रेमी मनुष्य को अपनी तरह का भगवान बना देने की क्षमता परमेश्वर में ही है, इसलिए उसके लिए हवन किया हुआ प्राण कभी निरर्थक नहीं जा सकता।

मन, वस्तुएँ, परिस्थितियाँ और सांसारिक सुखों को भगवान के लिए जितना ही उत्सर्ग करते हैं, उतना ही आमोद बढ़ता है। जिस प्रकार होम की वस्तुयें अधिक सूक्ष्म और व्यापक होकर प्रभावित करती है, होम किए हुए सांसारिक सुख भी सूक्ष्म होकर आत्मिक सुख, श्री, शक्ति और सौंदर्य प्रदान करते हैं। जब सब कुछ छोड़कर सहज स्थिति में अपने आपको खाली बना लिया जाता है, तब केवल परमात्मा के प्यार का अंत:करण में दोहन होता है और उस निर्झरित प्रेम-प्रवाह की मस्ती में प्रेमी भक्त संसार के सब कुछ दु:खों को भूल जाता है। उस प्रेम का अंत नहीं होता, उस सौंदर्य की इति नहीं होती और उस आनंद का कोई वारापार नहीं होता, वरन् रस और जीवन का माधुर्य बढ़ता ही जाता है।

ऐसे प्रेमी को अपने सुखों की लेशमात्र भी इच्छा नहीं रहती। इच्छाएँ सदैव विचारपूर्ण रहती हैं और जब-जब मन में विकार आता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है तब-तब आत्मा के उजलेपन में अंधकार छा जाता है। विकार का अँधियारा बढ़ते-बढ़ते वह एक दिन आत्मा को घटाटोप की तरह छा लेती है और दिव्य ईश्वरीय प्रकाश कूड़े में पड़े मोती की तरह निरर्थक हो जाता है। मनुष्य भटकता रहता है, फिर कभी अनायास ही वह प्रकाश मिल जाए तो हरि इच्छा, अन्यथा विकार-प्रसूत ८४ लाख योनियों में ही मनुष्य भटकता रहता है। परमेश्वर की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति के लिए इच्छाएँ दूषण कही गई हैं और इसलिए भगवान भक्त की केवल ईश्वरीय प्रेम की अभिलाषा को ही दृढ़ बनाते रहे हैं। उससे जहाँ वे लौकिक खड्डों से बचे हैं,वहाँ उन्हें प्रेम-रस का धारा प्रवाह सिंचन मिलता रहा है।

प्रेम का विकास करते-करते एक दिन सब द्वंद्व मिट जाते हैं। हम कभी भावनात्मक सुख की ओर जाते हैं, फिर कभी पदार्थों की आसक्ति अपनी ओर खींच लेती है। मानव-इतर योनियों में भ्रमित कराने वाली आसक्ति से ठीक उलटी स्थिति परमेश्वर के प्रेम की है। उसमें लौकिक सुखों के द्वंद्व समाप्त होकर जीवन में एक प्रकाश की स्थिति शेष रह जाती है, प्रियतम की छवि, सौंदर्य और माधुर्य ही शेष रह जाता है। उसे सबमें प्रेम की ही चाह दिखाई देती है। उसे सब में प्रेम का ही व्यापार दिखाई देने लगता है, वह उसी प्रेम के सागर में डूबकर प्रेम-स्वरूप हो जाता है। यही ईश्वरत्व है, इसी का नाम अमृत है। जो प्रेम का अमृत पा गया, वह ईश्वर को पा गया।

परमात्मा की प्राप्ति प्रेमी के लिए ही संभव

आध्यात्मिक उन्नति की चरम अवस्था तथा ईश्वर प्राप्ति की अंतिम अवस्था भक्ति-अथवा प्रेम है। भक्ति का स्वरूप भी निःस्वार्थ प्रेम ही कहा गया है। इस विषय में कोई विवाद नहीं है कि परमात्मा की प्राप्ति के अन्य सभी साधनों में प्रेम दिव्य एवं शुद्ध साधन है और उसका प्रत्येक साधन में समावेश होना चाहिए। वस्तु कितनी ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुंदर क्यों न हो, यदि उसके प्रति आकर्षण का भाव नहीं होगा तो न तो उसकी प्राप्ति का प्रयत्न ही हो सकता है और न उस प्रयत्न में चिरस्थायी ही रहा जा सकता है। प्रेम का विकसित रूप ही आध्यात्मिक गुणों—श्रद्धा, भक्ति, विश्वास आदि के रूप में प्रकट होता है, पर ईश्वरोपासना में उसे किसी-न-किसी रूप में प्रकट होना आवश्यक है। इसके बिना उपासना अधूरी है, सच्ची भक्ति तो प्रेम ही है और प्रेम ही परमात्मा का प्रकट स्वरूप है।

प्रेम ईश्वर प्राप्ति की साधना की वह कसौटी है, जिसमें तपकर जीव विशुद्ध बनता है और ब्रह्म में मिलन की स्थिति प्राप्त करता है। जीव और परमात्मा के बीच जो तादात्म्य है, वह अपने शुद्ध रूप में प्रेम द्वारा ही प्रकट होता है। प्रेम न होता तो इस पृथ्वी पर लोगों को आध्यात्मिक तत्त्वों को अनुभूति भी न होती। यह स्थिति प्रारंभ में आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लिए विकलता, विरह के रूप में प्रकट होती है, पर जिन्हें स्वाभाविक रूप में वह स्थिति प्राप्त न हो और वे ईश्वर को प्राप्त करना अपने जीवन का उद्देश्य मान गए हों, तो उन्हें भी प्रेम का अभ्यास करना पड़ता है। तप, त्याग और सुख की इच्छाओं का दमन कर अंतःकरण में प्रेम-प्रवृत्ति को जाग्रत करना पड़ता है।

प्रेम जो मनुष्य का मनुष्य के साथ संबंध स्थापित करता है, उसे उसकी सत्ता के मूल स्रोत में पहुँचा देता है। जो वस्तु मनुष्य-समाज को धारण किए रखती है, उसके विकास और नैतिक उत्कर्ष में सहायक होती है, वह प्रेम ही है। यदि मनुष्य-मनुष्य के बीच प्रेम का आदान-प्रदान न रहा होता और मानव जाति की प्रवृत्ति के मूल में प्रेम का प्रेरक भाव न होता तो नैतिक क्षेत्र में उसने कोई भी उन्नति न की होती।

मनुष्य विकास क्रम में सृष्टि के अन्य जीवों की अपेक्षा बहुत पीछे हैं। संसार के अन्य प्राणियों में जो नैतिक मर्यादाएँ देखी जाती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, वे ईश्वर प्रदत्त होती हैं। यदि उसके जीवन में प्रेम परिचालक न रहा होता तो उसकी सारी नैतिक मर्यादाएँ भंग हुई होतीं। स्वार्थ या छल कपट की अधिकता वाले प्रदेशों में आज भी इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

प्रेम विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली सत्ता है, उसी के आधार पर मनुष्य समाज जीवित है। यह न होता तो मनुष्य बड़ा दरिद्र एवं अविकसित रहा होता। उसे केवल अपना ही ध्यान रहा होता, अपने ही स्वार्थों की फिक्र रही होती, अपने ही सुख सुहाए होते। न तो उसे समाज सेवा के लिए प्रोत्साहन मिला होता, न व्यक्तिगत जीवन में पराक्रम करने की प्रेरणा मिली होती। प्रेम की शक्ति का साम्राज्य आज सुव्यस्थित और सुनियोजित विश्व के रूप में देखने को मिल रहा है।

प्रेम के वगैर मनुष्य मुरदा है। जब मनुष्यों में प्रेम का अभाव होगा तो कोई आकर्षण भी किसी चीज के लिए न होगा और जब आकर्षण न होगा, तो यह सारा संसार नीरव, उदासीन और जड़वत् हो जाएगा। इसीलिए प्रेम ही जीवन है।

ईश्वरोपासना में इस उद्‌दात्त भावना का दर्शन संसार के सभी धर्मों में पाया जाता है। भगवान को प्रेममय समझकर प्रेम मार्ग द्वारा उसकी साधना सभी देशों के भक्तों एवं साधकों में देखी जाती है। उपनिषद् में भगवान को 'मधुब्रह्म' कहा है—यह उसका विशुद्ध प्रेममय स्वरूप ही है। परमात्मा प्रेम द्वारा ही मधुर होता है—'मधुक्षरन्तितद्‌ब्रह्म' जिससे मधु अर्थात् प्रेम विकीर्ण होता है वही ब्रह्म है। अपने इसी रूप में वे भक्त के लिए, आराधक के लिए पुत्र, धन, आत्मीय स्वजन—इन सबसे बढ़कर प्रियतम हो जाते हैं।

महापुरुष ईसा का कथन है—"प्रेम परमेश्वर है।" संत इमर्सन की वाणी है—"परमात्मा का सार-तत्त्व प्रेम है।" सभी ईसाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतों ने भगवान की साधना आनंदमय,मधुमय एवं प्रेममय रूप में ही की है।

सेंट टेरेसा नामक पाश्चात्य साधिका से लिखा है— "परमात्मा के प्रति प्रेम होता है, तभी सच्ची उपासना बन पड़ती है। आत्मा के उत्थान की यह प्रारंभिक अवस्था है। अंत में जीव और ब्रह्म का प्रणय संस्कार होता है तो दोनों एक-दूसरे में आत्मसात् हो जाते हैं। जो ब्रह्म के समान सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान दिखाई देता है।"

मुसलमानों में सूफी संतों की प्रेममयी भक्ति-धारा बहुत प्रसिद्ध हुई है। इन संतों ने परमात्मा की उपासना प्रियतम (माशूक) के रूप में की है और जीवात्मा को प्रेमी (आशिक) के रूप में माना है। इस प्रेम भक्ति धारा का सुंदर प्रवाह, जायसीकृत 'पद्मावत' में भली-भाँति देखने को मिलता है। जलालुद्दीन भक्त बड़े प्रेमी संत हुए हैं, उन्होंने लिखा है—"तुम्हारे हृदय में परमात्मा के लिए प्रेम होगा, तो उसे भी तुम्हारी चिंता होगी।"

जिस प्रेम शक्ति का संतों, अध्यात्म-तत्त्ववेत्ताओं ने इतना समर्थन किया है, वह मनुष्य जीवन में अवतरित होकर किस प्रकार उसे अनंत ब्रह्म की ओर विकसित करती है—यह जानने योग्य है। लोगों के अंदर अनेक बुरी वृत्तियाँ हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, कुसंग, चोरी, व्यसन आदि। इन्हें जीतने और दूर करने का प्रयास जीवनभर करते रहते हैं तो भी वे दूर नहीं हो पाती। मन स्वभावतः कुमार्गगामी होता है और वह किसी भी नियम-बंधन को मानने के लिए तैयार नहीं होता। ऐसी अवस्था में लोग यह मानकर निराश हो जाते हैं कि इन बुराइयों से बचने का कोई उपाय नहीं है। पर यदि मनुष्य के अंतःकरण में प्रेम जाग्रत हो गया तो उसे इन्हें जीतने में कोई कठिनाई नहीं होती। प्रेमी के लिए उत्सर्ग करने में या अभावग्रस्त जीवन जीने में ही आनंद है। मनुष्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का मन प्रेम का गुलाम है। प्रेम की शक्ति के सहारे उसे जिस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जाए वह उसी में चलने के लिए तैयार हो जाता है। प्रेम से मानव जीवन के उत्थान का यही आध्यात्मिक रहस्य है।

असीम सुख की प्राप्ति के लिए प्रेमी अपने आप को घुलाता है और इसमें उसे एक अनिर्वचनीय तृप्ति मिलती है। प्रेम का वास्तविक स्वरूप अपने आपको प्रेमी के प्रति आत्मोसर्ग करना ही तो है। इसका उद्दात्त रूप बच्चे के प्रति माता के वात्सल्य में दीख पड़ता है। प्रेमवश माता बच्चे के ध्यान में अपने आप को बिलकुल विस्मृत कर देती है। उसे अपने सुख, सुविधा, विश्राम, निद्रा और भूख-प्यास की कोई सुध नहीं रहती।

ईश्वरोपासना में ऐसा प्रेम जाग्रत करने के लिए इष्टदेव से मिलने के लिए तीव्र और अदम्य इच्छा जाग्रत करनी चाहिए। साधारण मनुष्य के प्रेम में जब लोग इतने विभोर हो जाते हैं तो ईश्वर के प्रेम में ऐसा क्यों न होना चाहिए। पर इसके लिए भी हमें त्याग और बलिदान की उसी भावना से तैयार रहना चाहिए, जिस प्रकार अपने प्रेमास्पद का मुख देखने को तरसते हैं और उसके सामने अपनी विद्या-बुद्धि, धन-संपत्ति, पद-यश सबको तुच्छ मान लेते हैं।

हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि परमात्मा से शुद्ध प्रेम के लिए अपने आपको , अपनी आत्मा को अपने बच्चों, अपनी धर्मपत्नी घर, गाँव, समाज राष्ट्र और संपूर्ण मानव भाइयों के प्रति विकसित करना चाहिए। यथाशक्ति उनकी सेवा और त्याग भावना द्वारा निष्काम प्रेम, वासना और कामना रहित प्रेम बढ़ाना चाहिए। इस विकास के मार्ग पर जितना अपना अहंभाव नष्ट होता जाएगा, हम उतना ही परमात्मा की सत्ता में चले जाएँगे और इसी प्रेम-अभ्यास में परम-पिता परमात्मा की समीपता का सौभाग्य प्राप्त कर लेंगे, क्योंकि परमात्मा का द्वार प्रेमी भक्तों के लिए सदैव ही खुला रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वप्रेम ही ईश्वर प्रेम

एकांगी उपासना का क्षेत्र विकसित कर अपना अहंकार बढ़ाने वाले व्यक्ति, ईश्वर के सच्चे भक्त नहीं कहे जा सकते। परमात्मा सर्व न्यायकारी है। वह एक ऐसे भक्त को जो अपना सुख, अपना ही स्वार्थ सिद्ध करना चाहता हो, कभी प्यार नहीं कर सकता। संसार केऔर भी जितने प्राणी हैं, वह सब उसी परमात्मा के प्यारे बच्चे हैं। किसी के पास शक्ति कम हैं, किसी के पास गुण कम हैं, तो इससे क्या ? अपने बच्चे पिता को समान रूप से प्यारे होते हैं। जो उसके सभी बच्चों को प्यार कर सकता हो परमात्मा का वास्तविक प्यार उसे ही मिल सकता है। केवल अपनी ही बात, अपने ही साधन सिद्ध करने वाले व्यक्ति लाख प्रयत्न करके भी उसे प्राप्त नहीं कर सकते।

प्रेमी भक्तों के लक्षण बताते हुए गीता में भगवान कृष्ण ने लिखा है-

अदेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः सम दुःखसुखः क्षमी॥
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़ निश्चयः।
मय्यर्पित मनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

—गीता १२/१३-१४

हे अर्जुन ! मैं उन भक्तों को प्यार करता हूँ, जो कभी किसी से द्वेष भाव नहीं रखते, सब जीवों के साथ मित्रता और दयालुता का व्यवहार करते हैं। ममता रहित, अहंकार-शून्य, दुःख और सुख में एक-सा रहने वाला सब जीवों के अपराधों के क्षमा करने वाला, सदैव, संतुष्ट, मेरा ध्यान करने वाला, विरागी, दृढ़ निश्चयी और जिसने अपना मन-बुद्धि मुझे समर्पित कर दिया है, ऐसे भक्त मुझे अतिशय प्रिय हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ हमें एक बात समझ लेनी चाहिए कि यह सारा संसार भगवान के एक अंश में ही स्थित है। छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे सब उसी के बनाए हुए हैं। उनके हित और कल्याण का भी उसे ध्यान होना चाहिए, केवल अपनी-अपनी इच्छाओं की तृप्ति ढूँढ़ने में यह कहाँ संभव है कि मनुष्य औरों के साथ द्वेष न करे। सुख की इच्छा में प्रतिस्पर्द्धा आवश्यक है। कामनाग्रस्त मनुष्य किसी की भलाई भी क्या कर सकेगा और ऐसा व्यक्ति परमात्मा की दया का अधिकारी भी क्यों बन सकेगा?

चराचर जगत् में एक ईश्वर की सत्ता ही अनेक रूपों में कार्य कर रही है। ईश्वर के एक अंग की उपासना की जाय और अन्यों की बिलकुल उपेक्षा की जाय तो परमात्मा उस भक्त से कैसे संतुष्ट हो सकता है? भक्ति का स्वरूप सर्वांगीण होना चाहिए। मुँह को भोजन कराया जाए और पाँवों को बाँधकर एक ओर पटक दिया जाए तो वह परमात्मा अपने उपासक की भावनाओं से कैसे संतुष्ट हो सकेगा? ईश्वर के पारलौकिक और अदृश्य जगत् को यदि प्राण माना जाय और संपूर्ण संसार को उसकी देह, तो देह से भी उतना प्यार होना चाहिए जितना प्राण से। देह की उपेक्षा से प्राणों का अस्तित्व भी भला कहीं संभव हो सका है।

ईश्वर के उपासक में श्रद्धा, भक्ति, एकाग्रता, बुद्धि की तीक्ष्णता के साथ-साथ जीव दया और प्रेम का भी समन्वय होना चाहिए, क्योंकि प्रेम ही विश्व का आधार है, विश्व की आत्मा है। ईश्वर-प्रेम भी विश्व-प्रेम के अंतर्गत है। प्राणिमात्र के साथ सद्व्यवहार, आत्मीयता और मैत्री की भावना रखने वाले लोग उसे बिना प्रयास, बिना साधन प्राप्त कर लेते हैं।

चतुर जनों की यह रीति है कि वे किन्हीं महापुरुषों की कृपा प्राप्त करने के लिए उनकी प्रिय संतान की सेवा और प्यार करते हैं। अपने आत्मीय जनों को प्यार करता हुआ देखकर बड़े कठोर हृदय के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तियों को भी पिघलते देखा गया है, फिर परमात्मा जो इतना सहृदय और दयालु है, वह अपने बालकों के प्रति कर्तव्य-भावना को पूरा हुआ देखकर भला क्यों न प्रसन्न होगा। इससे तो वे भक्त की अन्य कामनाएँ भी सहर्ष पूरी कर देते हैं।

वेद में कहा गया है कि "जो लोग संपूर्ण प्राणियों के हित में संलग्न रहते हैं परमात्मा उनका भार स्वयं वहन करता है।' पर समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का समुचित रीति से पालन न करने वाले ईश्वर भक्त आत्मकल्याण में समर्थ नहीं होते। समाज भी तो मनुष्य का अपना ही स्वरूप है। अपने स्वार्थ की पूर्ति में तो उद्यत रहा जाय पर अपने ही समान अपने समाज के प्रति परमार्थ का ध्यान न रखा जाय तो उस ईश्वरोपासना से आत्मसंतोष होना असंभव है।

निर्ममता और अहंकार से मुक्ति मिल गई—इसका प्रमाण एकात्मवादी होकर नहीं दिया जा सकता। मनुष्य सबके प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करेगा तभी उसकी निर्ममता का भाव नष्ट होगा। अहंकार भी, जब तक अपने आप को औरों के लिए त्यागपूर्वक न भुलाया जाएगा तब तक, दूर होना संभव नहीं। ईश्वर कभी किसी के सामने प्रत्यक्ष नहीं हुआ। इसलिए वह प्रत्यक्ष सेवाएँ भी कभी नहीं ले सकता। उपासना और प्रार्थना से प्रभावित होकर मनुष्य रूप धारण कर कदाचित् वह ईश्वर अपनी विभूतियों सहित भक्त के समक्ष उपस्थित हो जाता और भक्त अपना सर्वस्व अर्पण कर देता तो संभव था उस स्थिति में उसे आत्मसंतोष हो जाता। पर परमात्मा के संसार में ऐसी व्यवस्था नहीं है। वह यदि अपने आराधक की त्याग-वृत्ति को देखना चाहेगा, तो अपने किसी बालक को ही परीक्षा के लिए भेजेगा। हम अपने बच्चे, धर्मपत्नी, परिवार, गाँव, मुहल्ले वाले, समाज और राष्ट्र तथा संपूर्ण विश्व के लिए आत्मत्याग की भावना का परिष्कार करके ही तो सर्वात्मा की कृपा का पुण्य फल प्राप्त कर सकते हैं और यह तभी संभव है जब हम सबके साथ प्यार करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबके साथ आत्मीयता रखें, सबके साथ सहानुभूति बरतें, सबकी उन्नति में सहयोग दें। किसी के साथ ईर्ष्या, छल, पाखंड, अन्याय, अत्याचार करके परमात्मा की कृपा का अधिकार प्राप्त करने की बात सोचना मिथ्या है।

तब यह आवश्यक है कि उपासना का स्वरूप बहुमुखी हो। आत्मोद्धार के लिए एकांत में बैठकर करुण भाव से ईश्वर की उपासना की जाय, पर अपने अन्य भाइयों को भी असाध्य अवस्था से ऊपर उठाया जाय, भगवान के स्वरूप की याद करते हुए प्रेमपूर्वक उनके नाम का जप और कीर्तन, ध्यान और भजन तो किया जाय, पर उनके समाज-शरीर की भी उपेक्षा न की जाय। संपूर्ण जीवों में भगवान का अंश विराजमान है, सब लोग उसी की विविध मूर्तियाँ हैं। सब उसके अंग हैं। सब उसके साधन हैं। एक साधन के लिए अन्य साधन क्यों भुलाए जाएँ? ईश्वर की एकांगी उपासना क्यों की जाय?

"परमात्मा केवल एकांतवासी को मिलते हैं और त्यागी का अर्थ घर-बार छोड़कर योगी हो जाना है"—यदि ऐसा अर्थ लगाया जाय तो फिर हमारे ऋषियों की सारी व्यवस्था एवं भारतीय दर्शन की सारी मान्यता ही गलत हो जाएगी। जप, ध्यान या साधना की एक निश्चित सीमा होती है, उसके बाद कीसाधना समाज और विश्व के हित-साधना तथा लोक-मंगल में जुटने की होती है। ऋषियों ने गृहस्थ में रहकर साधनाएँ की, पर उन्हें कोई स्वार्थवादी नहीं कह सकता। वे समाज के हित के लिए अंत तक लगे रहे। निर्माता का अर्थ भी दरअसल 'मैं और मेरे' का त्यागहै। यह जो कुछ है, वह परमात्मा का अंश है। परमात्मा के प्रत्येक अंश को पूरा कर ही उसकी पूर्ण कृपा प्राप्त की जा सकती है।

ईसा, मंसूर, शंकराचार्य, रामकृष्ण तथा दयानंद आदि अनेकों ईश्वर परायण देवदूत हैं। ईश्वर की कृपा के फलस्वरूप उन्होंने सामान्य व्यक्तियों से उच्चतर सिद्धियाँ प्राप्त कीं। यदि ईश्वरोपासना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का अर्थ एकांगी लाभ उठाना रहा होता तो इन महापुरुषों ने भी या तो किसी एक स्थान में बैठकर समाधि ले ली होती या भौतिक सुखों के लिए बड़े-से-बड़े साधन एकत्र कर शेष जीवन सुखोपभोग में बिताते। पर उनमें से किसी ने भी ऐसा नहीं किया। उन्होंने अंत में विश्वमानव की ही उपासना की। सिद्धि से उन्हें संतोष नहीं हुआ, तो लौटकर वे फिर समाज में आए और प्राणियों की सेवा को अपनी उपासना का आधार बनाया।

मुक्ति के अधिकारी मनुष्यों को परलोक की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह लोक भी परलोक ही है, यदि हम यहाँ भी उस परमात्मा के स्वरूप का दर्शन करें। जीव मात्र में उसकी आभा देखने वाले के लिए परलोक की कामना क्यों होने लगी? परमात्मा से हम प्यार, स्नेह, दया, ज्ञान, शक्ति, भावनाओं के ऊर्ध्वगामी सुखों की अपेक्षा करते हैं, वह सुख हमें मनुष्यों और जीवों की सेवा से भी उपलब्ध हो सकते हैं। इस विश्व में पशु-पक्षी आदि जीवों को जिनको आत्म-ज्ञान की प्राप्ति विधेय नहीं है, उनकी रक्षा-वृद्धि और उनके हित के लिए भी तो कुछ करना चाहिए, अन्यथा परमात्मा के इस सुंदर बाग की रखवाली और उसको सुसज्जित रखने के अपने उत्तरदायित्व का पालन कैसे हो सकता है?

जिस प्रकार परमात्मा की उपासना में उनके रूप, गुण और ऐश्वर्य का कीर्तन करते हैं, वैसे ही हमें उसके पुत्रों का भी कीर्तन-भजन करना चाहिए। जो पदार्थ जीवों के लिए उपयोगी हैं और सद्गुणों, सत्कर्मों की वृद्धि में सहायक हैं उन पदार्थों की उन्नति, वृद्धि और रक्षा करने की चेष्टा करना भी आवश्यक है। परमात्मा अपनी प्रत्येक सुंदर वस्तु की साज-सँवार देखकर उतना प्रसन्न होगा, जितना शायद वह अपने गुणों की प्रशंसा मात्र से न होगा।

उपयोगी पदार्थों की रक्षा द्वारा सत्संपत्तियों को बढ़ाने की चेष्टा के साथ बुराइयों की रोकना भी ईश्वर की ही उपासना है। इसमें भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा के सौंदर्य गुण की ही उपासना का भाव छिपा है। जो पदार्थ जीवों के दुर्गुण और दुष्कर्मों को बढ़ाने वाले हैं उनके घटाने और नष्ट करने के लिए भी हमारे प्रयत्न बिना किसी कामना या द्वेष भावना के चलते रहने चाहिए। हानिकारक पदार्थों के न रहने में जीवों का हित है और विश्व के हित व कल्याण की निष्काम कामना रखना ही विश्वप्रेम है।

इस प्रकार जो विशुद्ध प्रेम और सेवा-भावना से प्राणियों के कल्याण के कार्यों में रत रहते हैं, वे बाहर से देखने पर लोगों को कैसे ही दिखाई दें, पर ईश्वर की दृष्टि में वही सच्चे प्रेमी भक्त होंगे। समाज की उपेक्षा कर की जाने वाली ईश-आराधना का उतना महत्त्व नहीं, विश्वप्रेम ही ईश्वर का सच्चा प्रेम है।

परमात्मा का प्रेम पूर्ण है, पवित्र है

मनुष्य के जीवनोद्देश्य का जितनी गहराई से अध्ययन करें उतना ही स्पष्ट हो जाता है कि अतिशय आनंद ही उसकी मूलभूत आकांक्षा या जीवन का लक्ष्य है। जिन वस्तुओं में मनुष्य को आनंद का आभास होता है, वह उधर ही दौड़ता रहता है। यह बात दूसरी है कि अल्प बुद्धि, अविकसित हृदय एवं प्रसुप्त विवेक के कारण वह सच्चे आनंद को न समझ—पा सके, किंतु चिर सुख की अभिलाषा प्रत्येक मनुष्य करता है और इसी लक्ष्य की पूर्ति में ही उसका सारा जीवन बीत जाता है।

जिन वस्तुओं में आनंद दिखाई देता है उनके प्रति प्रेम होना, अनुराग होना मनुष्य-स्वभाव की विशेषता है। लेकिन जिस आनंद की अभिलाषा से मनुष्य पदार्थों से प्रेम करता है उस आनंद की पूर्ति यदि न हो, तो यह समझना चाहिए कि उससे जीवन-लक्ष्य हल नहीं होता, वह अग्राह्य है। विषय, वासनाओं में सुख तो जरूर है, पर क्षणिक है और मनुष्य की लालसा यह है कि वह ऐसा सुख प्राप्त करे जो कभी नष्ट न हो, जिससे उसे कभी भी विमुख न होना पड़े।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन आनंद की वस्तु है, पर वह स्थायी नहीं है। थोड़ा-सा आनंद देने के बाद धन अपना साथ छोड़कर भाग जाता है। सबकी आँखों में धूल झोंकती हुई लक्ष्मी देवी कभी इसके कभी उसके पास डोलती रहती है, न उससे एक को ही पूरा आनंद मिलता है और न दूसरे को ही। धन का सुख, सुख नहीं, मृग तृष्णा है, भुलावा है। अतः धन के प्रेम को भी साध्य नहीं कहा जा सकता।

स्त्री, पुत्र, सांसारिक भोग, धन आदि सभी सुख के साधन समझे जाने वाले पदार्थ अपना रूप बदलते रहते हैं, परिवर्तनशील हैं। अतः इन वस्तुओं में प्रेम का सार नहीं है। प्रेम अखंड-आनंद की अभिव्यक्ति है तो वह वियोगशील वस्तुओं से कैसे बँधकर रह सकता है? पदार्थों से, प्रियजनों से, धन या भोग-पदार्थों से विछोह होने पर दुःख पैदा होता है, जलन पैदा होती है, ईर्ष्या, द्वेष, कलह, मद और मत्सर पैदा होते हैं, तो इन्हें शाश्वत प्रेम की वस्तु कैसे माना जा सकता है? पूर्ण प्रेम तो परमात्मा का ही है, उसी में मनुष्य को सच्चे आनंद के दर्शन हो सकते हैं। श्रीमद्भागवत में कहा गया है-

एतावानेव लोकेऽस्मिन् पुंसः स्वार्थः परः स्मृतः।
एकान्तभक्तिगोविन्दे यत् सर्वत्र तदीक्षणम्॥

—७।७।५५

अर्थात—इस संसार में मनुष्य का सबसे बड़ा और सच्चा स्वार्थ इतना ही माना गया है कि वह परमात्मा की अनन्य भक्ति, अनन्य प्रेम प्राप्त करें। उस प्रेम का स्वरूप है—सर्वदा, सर्वत्र सब वस्तुओं में भगवान रूप से भगवान का दर्शन करना।

प्रेमी-भक्त के लिए विविध साधनाओं एवं कष्टदायक प्रक्रियाओं की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि उसकी सभी सांसारिक कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं। उसके लिए ईश्वर का प्रेम ही लक्ष्य बन जाता है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः॥

—(७।१७)

नित्य मुझे में एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेम-भक्ति वाला ज्ञानी अति उत्तम है। क्योंकि मुझको तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यंत प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे प्रिय है।"

परमात्मा से प्रीति करने वाले के सभी दुःख-दारिद्र्य मिट जाते हैं। प्राणी रंक से राजा हो जाता है। राज्य-सुख, धन या वैभव का उपयोग मनुष्य अकेले नहीं करता। तमाम इष्ट-मित्रों, प्रियजनों-परिजनों को उसका लाभ देने में उसको सुख मिलता है। परमात्मा अनंत सुख-वैभव के स्रोत हैं। जो लोग उनके समीप जाते हैं, वे निहाल हो जाते हैं। उनका संपर्क इतना प्रभावशाली होता है कि मनुष्य की क्षुद्रताएँ समाप्त हो जाती हैं। जिसके जीवन में अक्षुण्ण सुख ओत-प्रोत हो रहा हो, उसे विविध कामनाओं से क्या प्रयोजन। परमात्मा के सान्निध्य में मनुष्य की इच्छाएँ ऐसे ही पूर्ण होती हैं कि फिर उनके लिए औरों के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता।

भगवान का प्रेम जीवन के सत्य को देखता है। भगवान का प्रेम मनुष्य के शिव को देखता है। भगवान का प्रेम आपके जीवन के सौंदर्य को देखता है। आप परमात्मा की अभिव्यक्ति हैं, अतः उनके हो जाने में उनके गुणों का उभार आपके जीवन में होना स्वाभाविक है। गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, ताप्ती, नर्मदा, गोदावरी आदि नदियाँ तब तक स्थल खंड में इधर-उधर विचरण करती रहती हैं, जब तक उन्हें नदियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जाता। उनकी शक्ति और सामर्थ भी तब तक उतनी ही होती है। किंतु जब वे सब मिलकर एक स्थान में केंद्रीभूत हो जाती हैं तो उनका अस्तित्व समुद्र जितना विशाल, रत्नाकर जैसा संपन्न, सिंधु-सा अनंत बन जाता है। अपने आप को परमात्मा में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्पित कर देने पर मनुष्य का जीवन भी वैसा ही अनंत-विशाल, सत्य, शिव, एवं सुंदर हो जाता है। उन्हें पाकर मनुष्य का जीवन धन्य हो जाता है।

मनुष्य की जगत् में उत्पत्ति हुई है, इसमें भगवान का प्रेम ही हेतु है। निश्छल भाव से वे मनुष्य का भरण-पोषण करते रहते हैं। अन्न, फल-फूल, जल, वायु, अग्नि, ताप, वर्षा, वृक्ष-वनस्पति, प्रकाश आदि की व्यवस्था करने वाले परमात्मा के हृदय की गति को जो न पहचान सके, वह अभागा है। मनुष्य के लिए असंख्य अनुदान जुटाने में परमात्मा का प्रेम ही परिचायक है। उन्होंने अपने प्राणों को विश्व के हित और कल्याण के लिए उत्सर्ग किया है। फिर मनुष्य यदि उन उपकारों का बदला न चुकाए तो उसे हृदयहीन ही कहा जाएगा। परमात्मा को प्रेम की भूख है। वे प्रेम के प्यासे होकर हर प्राणी के द्वार-द्वार भटकते-घूमते हैं। जहाँ उन्हें विमल प्रेम मिल जाता है वहीं वे रम जाते हैं और अपनी सभी शक्तियों की चाबी उसे ही सौंप देते हैं।

कितना हृदयहीन है मनुष्य, जो परमात्मा से भोग की वस्तुएँ माँगता है। सांसारिक स्वार्थ भ्रम है, उनमें स्थिरता नहीं है। जिस क्षण आप परमात्मा के प्रेम को अपनाने के लिए उद्यत हो जाते हैं, उसी क्षण भगवान के प्रेम को आपके जीवन एवं क्रियाओं में सक्रिय होने का अवसर प्राप्त हो जाएगा।

लौकिक दृष्टि से अपनी कामनाएँ पैदा करना ही तो हमारी भूल है, इसी से मनुष्य अपने मूल-लक्ष्य से भटकता और आनंद से वंचित होता है। आत्मा को शरीर मानने से उद्देश्य में गड़बड़ी पैदा होती है। शरीर आत्मा का वाहन, सेवक और उपकरण मात्र है, जिस पर सवार होकर जीवात्मा इस नंदन वन के असीम-आनंद का सुखोपभोग करने आया है। यह सुख परमात्मा में ही ओत-प्रोत है और उसी के हो जाने पर ही मिलता है। अपने मालिक, स्वामी, पिता और सर्वस्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से दूर रहकर मनुष्य को सुख मिल भी कहाँ सकता है ? हम शरीर नहीं आत्मा हैं। प्रेम आत्मा की आध्यात्मिक प्यास है। उसे प्रेम में ही आनंद मिलता है और सच्चा प्रेम, पूर्ण प्रेम, पवित्र प्रेम, परमात्मा में ही मिल सकता है। इससे भिन्नता वासना कहलाती है, क्योंकि उसमें शारीरिक सुख की प्रधानता और स्वार्थपरता रहती है। शारीरिक भोग की दृष्टि से किया हुआ प्रेम निम्न श्रेणी का है, उसमें पवित्रता और आत्म त्याग की भावना नहीं होती।

एक राजकुमार की बड़ी मार्मिक कहानी है। उसके नगर में नटों का बेड़ा आया था। बेड़े में एक अत्यंत रूपवती युवती थी। राजकुमार उस पर आसक्त हो गया और इसी दुःख में दुःखी होकर अत्यंत दुर्बल पड़ गया। राजा ने अपने बेटे की इच्छा जानी, तो नट-राज के पास विवाह-प्रस्ताव भेज दिया। नट ने एक शर्त लगा दी कि यदि राजकुमार नटों की कला में पूर्ण दक्ष होने तक उनके दल में रहे तो वह संबंध स्वीकार कर सकता है। राजकुमार ने शर्त मान ली। अनेक वर्षों तक परिश्रम करने के बाद वह नट-कला में प्रवीण हो गया। पहला प्रदर्शन इसका वाराणसी के राजदरबार में होना था। राजकुमार एक ऊँचे बाँस पर चढ़कर किसी उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन कर रहा था। उसी समय उसने दूर एक मकान में उससे भी अधिक सुंदर युवती को किसी साधु को भिक्षा देते हुए देखा कि उस महात्मा के मुख पर कितनी सरलता व वात्सल्य का भाव है। क्षुद्र प्रेम पर राजकुमार को बड़ी घृणा हुई और उसने अधिक श्रेष्ठता सौंदर्य की प्रति-मूर्ति परमात्मा के साथ उत्कृष्ट स्तर का प्रेम करना आरंभ कर दिया।

अवास्तविक सौंदर्य के लिए राजकुमार जिस प्रकार नट बन जाता है, उसी तरह संसार के प्राणी आत्महित से विमुख होकर सांसारिक पदार्थों में आनंद ढूढ़ते हैं, पर मिलता कुछ नहीं। न ईश्वर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से प्रेम ही हो पाता है और न शरीरों के हित ही सुरक्षित रहते हैं। आत्मिक, शारीरिक या भावनात्मक आदि किसी भी भाव से परमात्मा का प्रेम श्रेष्ठ तथा महान है।

भगवान बहुत थोड़े-से प्रसन्न हो जाते हैं। थोड़ी-सी व्याकुल आराधना, जिसमें जीवात्मा अपनी स्थिति को भूलकर अपने आपको उनमें मिला दें, बस उसी प्रेम के भूखे हैं भगवान! व्याकुलता उसी के लिए होती है, जिसे चित्त चाहता है। मनुष्य परमात्मा की ओर तभी उन्मुख हो सकता है जब वह अपने आप को सदैव आत्मा की दृष्टि से देखे। आत्मा का चिंतन करने से ही ईश्वर-प्रेम पैदा होता है। आत्मा का परमात्मा से चिर-संबंध है, अतः आत्मस्वरूप की जानकारी के साथ उनका प्रेम जाग्रत होना भी स्वाभाविक ही है।

प्रेम परमात्मा का ही श्रेष्ठ है। भगवान के प्रेम के अतिरिक्त और कोई प्रेम नहीं, जो सर्वत्र, सब देश और सब काल में सब व्यक्तियों के द्वारा समान रूप से किया जा सके। इससे बढ़कर सरलता भी और कहीं नहीं। उनके प्रेम में ही जीवन-मुक्ति है। परावलंबन, इंद्रियों के विषय तथा पदार्थों की आसक्ति उनके प्रेम के पास जाकर ऐसे समाप्त हो जाते हैं जैसे प्रकाश के आगे अंधकार नहीं ठहर पाता है। वह संसार में रहते हुए भी सांसारिक बंधनों से नहीं बँधता।

परमात्मा के प्रेम में अद्‌भुत शक्ति है। उसी के सहारे मनुष्य प्रत्येक दुःख पर विजय प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार से दुष्टता का नाश दया से हो जाता है उसी तरह से सच्चे प्रेम के प्रभाव से कुविचारों का नाश हो जाता है प्रेम में शांति है, सुख और आनंद है, किंतु वह केवल निःस्वार्थ परमात्मा के प्रेम में ही है। अतः मनुष्य के जीवन में ईश्वरीय प्रेम का महत्त्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। प्रेम के बिना आंतरिक शुद्धता और भावनात्मक परिष्कार नहीं हो पाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य का और परमात्मा का संबंध पिता और पुत्र का संबंध होता है। बृहद् परमात्मा का एक रूप आत्मा है, उनका चिर संबंध है। '**पितानोऽसि**' का ही मंत्र अंततः मनुष्य को सुख दे पाता है। यह मेरा पिता है। उन्हीं से कहूँगा, उन्हीं से मागूँगा, उन्हीं से हठ करूँगा। बार-बार आत्म-बोध की याचना उन परम पिता से करूँगा। मनुष्य जीवन में इन मूल मंत्रों का समावेश हो जाय, तो उसका मनुष्य तन सार्थक हुआ समझना चाहिए।

स्वामी का सेवक से, राजा का प्रजा से, पिता का पुत्र से, जो संबंध होता है, उसमें अस्वाभाविकता नहीं होती। अतः वहाँ व्यवहार भी निष्कपट होता है। पुत्र में पिता का ही प्राण संचरित होता है। अतः वहाँ कोई बनावटीपन नहीं होता। परमात्मा और मनुष्य का प्रेम भी वैसे ही आधारभूत और छल रहित होता है। इसी में ही उसकी प्रतिष्ठा और उसका आनंद है।

'केनोपनिषद् में प्रश्न किया गया है कि—'केन प्राणः प्रथमः प्रैतियुक्तः ?' अर्थात प्राण को किसके द्वारा (गति)प्रेम प्राप्त हुआ है ? प्रश्न के उत्तर में बताया है—जो महाप्राण है उनके द्वारा। महाप्राण परमात्मा की स्थिति का संकेत है। यहाँ पर गति का भावार्थ प्रेम से लिया गया है।

मनुष्य अपने आप में बहुत छोटा अल्प शक्ति और सामर्थ्य वाला है। पग-पग पर उससे गलतियाँ और अशुद्धियाँ होती रहती हैं। पर जब वह अपने आप को उस परम पिता को ही अनन्य भाव से सौंप देता है, तो उसकी सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं।

भगवान के प्रेम के सहारे जिए। भगवान के प्रेम के आश्रित रहें। उन्हीं के स्मरण, चिंतन और आदेश पालन को अपने जीवन का धर्म समझें। किसी भी निराशा में भगवान का प्रेम महान है। इसी बात को गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है—'ऐ मनुष्य! तू संपूर्ण धर्मों का परित्याग कर केवल मेरी शरण में आ जा। मैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तेरे सभी पापों का विनाश कर तुझे पवित्र तथा बंधन मुक्त कर दूँगा।'

ईश-प्रेम से परिपूर्ण और मधुर कुछ नहीं

परमपिता परमात्मा से वियुक्त होकर जीव ने अपनी एक निराली सृष्टि बना ली। छोटा बालक जिस तरह घर के आँगन में ही मिट्टी इकट्ठा कर एक छोटा-सा घरौंदा बनाकर उसमें विशाल आकार-प्रकार की साधन सामग्रियाँ चाहता है, पर न तो उनके लिए उसके उस छोटे-से घरौंदे में स्थान होता है, और न पात्रत्व। इसलिए उसकी इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती या जान-बूझकर पिता उन्हें पूरा नहीं करता। वह तो सब घर की व्यवस्था का स्वामी होता है, उसे सबका ही ध्यान रखना पड़ता है, इसलिए जितना उसका घरौंदा था, उसी अनुपात से दो-चार पैसे, छटाँक-दो छटाँक सामग्री उसे दे देता है, पर उससे बच्चे को न सुख मिलता है, और न संतोष। छोटी-सी इकाई में पूर्णता की इच्छा रखने वाले छोटे बच्चे की तरह जीव को भी अंततः अपनी लघुता पर असंतोष और पीड़ा ही होती है।

तब वह अपने एकांत में, अंतःकरण की गहराई में मुख डालकर झोंककर देखता है तो पाता है कि अब तक वह जिन वस्तुओं की इच्छा कर रहा था, वह तो सब बंधन रूप थीं। नित्य, शाश्वत आनंद के लिए उनसे कुछ काम बनने वाला नहीं था। यह तो सब क्षण-भंगुर वस्तुएँ थीं। रुपया, पैसा, वस्त्र आभूषण, मोटर, बँगले-पंखे, रेडियो, नौकरी, पद-प्रतिष्ठा, यहाँ तक कि पिता-माता, पुत्र-पत्नी, सुहृद-सखा, परिवार भी एक दिन छूट ही जाता है, चाहे उससे कितना ही मोह बढ़ा ले, चाहे उससे कितना ही प्रेम कर ले। गीता में कहा है—"संसार में गुण-ही-गुण में बर्तते हैं, सो सब वस्तुएँ जहाँ तक उनकी सीमा, मर्यादा और समय है, वहीं तक थोड़ा-सा सुख-संतोष प्रदान कर पाती हैं। उसके बाद जीव का पुनः वही अकेलापन।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिर वही लघुता, फिर वही भय, फिर वही इच्छाएँ, फिर वही दौड़-धूप, आपा-धापी, अविश्राम, अविश्राम, अविश्राम। न इच्छायें पिंड छोड़ती हैं, और न महत्त्वाकांक्षाएँ। मृगमरीचिका की तरह सुख और शांति की चाह में जीव सारे संसार का परिमंथन किया करता है, पर हाथ सिवाय निराशा, कष्ट, अपमान, चिंता, द्वेष-ईर्ष्या, असफलता, विफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता। नेपोलियन जो अनेक राष्ट्रों का भाग्य-निर्माता था, वह भी कैसे दु:खद परिस्थितियों में मरा। महापुरुषार्थी सिकंदर का अंत वहाँ हुआ, जहाँ उसे दवा की व्यवस्था भी न हो सकी।''

अपनी इस स्थिति पर विचार करते-करते जीव अपने पिता परमात्मा की शरण आता है। बहुत दिन के बाद निधि रूप में अपने सर्वस्व, अपने शाश्वत प्राण, अपने लक्ष्य, अपने गंतव्य, अपने प्रकाश को पाकर उसका अंत:करण उमड़ने लगता है, वह कभी-कभी, अपनी अब तक की, गई बीती स्थिति पर दु:ख और पश्चात्ताप करता है। फिर भगवान से स्नेहपूर्ण शिकायत करता है, उसे भय रहता है, कहीं पुन: इसी भ्रमजाल में न फँसना पड़े, इसलिए डरता हुआ जीव भगवान की स्तुति भी करता जाता है, हे प्रभु! संभव है संसार के झंझटों में मैं तुम्हें भूल जाऊँ पर, तुम मुझे छोड़ना नहीं। मैं तुम्हारा ही प्राण हूँ, मैं तुम्हारा ही अंश हूँ, माना कि प्रमाद बहुत किया, भूलें बहुत कीं, पर अब ऐसा ज्ञान दो प्रभु, ऐसी शक्ति दो नाथ, जिससे जर्जर जीवन की नाव पार लग जाए। आकर्षणों से भरे इस संसार-सागर से जीवन तरिणी पार उतर जाए!

मुझे मालूम नहीं प्रभु! तुममें मैं बिछुड़ा क्यों? इसमें भी कुछ रहस्य है? मैं अपनी इच्छा से संसार में आया या तुम्हीं मुझे अकेला छोड़कर मेरे सयानेपन पर, मेरी अतुकांत भूलों पर हँसने और उसका चिर आनंद लेने के लिए परदे में छिपे हो। किंतु हे प्रभु! अब यह खेल खेलने की शक्ति मुझमें नहीं रही। मैंने संसार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के माया रूप को जबसे पहचान लिया है, तब से एक तुम्हारा ही प्रेम उमड़ रहा है। भीतर भी तुम्हारा प्रेम जाग रहा है और सृष्टि के कण-कण में भी तुम्हारा प्रेम प्रतिभासित हो रहा है। हे प्रभु! यह कैसी पीड़ा है, जो तुम्हें आँखों से अलग भी नहीं होने देना चाहती और तुममें मिलने, समा जाने का अवसर भी नहीं देती। अपनी तृणवत् सत्ता से थके हुए जीव को विश्राम दो, अपनी मधुर गोद में ले लो, अपने प्राणों में छिपा लो, जिससे भय, लज्जा और विषाद के संपूर्ण मल आवरण धुल जाएँ। यह सब तुम्हारे से ही संभव है। संसार की ममता में वह सब कहाँ। प्रेम के शाश्वत सिंधु तुम्हीं इतने निर्मल हो कि संसार का सारा मल तुम्हारे अंदर आकर धुल जाता है। हे प्रभु! तुम्हीं इतने प्रकाशवान हो कि संसार का सारा अज्ञ-अँधियार तुम में समा जाता है। तुम निर्बल को भी बलवान करने वाले, घृणित को भी हृदय से लगा लेने वाले हो। तुम्हारी शरण छोड़कर जीव अन्यत्र जा भी तो नहीं सकता।

इस प्रकार जब सब ओर परमात्मा का प्रकाश-ही-प्रकाश दिखाई देने लगता है, जीव अपनी लघुता की पहचान कर लेता है और कातरभाव से परमात्मा को पुकारता है, तो उसके अंत:करण की गहराई भी स्थिर नहीं रह सकती। वह अंत:करण को मथ डालती है और उसमें से दिव्य ईश्वरीय प्रेम निखरता हुआ चला आता है। प्रेम में ही परमेश्वर है, प्रेम की सत्ता ने चर-अचर, स्थावर-जंगम सबको क्रियाशील बना रखा है, प्रेम ही संपूर्ण पवित्र है। अपवित्रता तो आसक्ति थीं, मोह था, ममता थी, वासना थी। जब वही न रहे तो मलिनता कैसी? जीवमात्र के सौंदर्य का सागर अंत:करण में फूट पड़ता है। जीवन मात्र की चैतन्यता की शक्ति अंत:करण में जाग पड़ती है। जब सब अपने, जब सब कुछ अपना तो कहाँ अभाव, कहाँ अशक्ति, कहाँ अज्ञान? सब ओर मंगल, आनंद-ही-आनंद बिखरा दिखाई देने लगता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिक्रिया का नियम तो जड़ वस्तुओं तक में है। कुएँ और पोखर की ओर मुख करके बोली गई आवाज भी जब प्रतिध्वनित होकर आ जाती है तो निःसीम गहराई से लौटी हुई भावनाओं की प्रतिक्रिया का तो कहना ही क्या ? जीव जिस भावना से परमात्मा की पुकार लगाता है, उसी गहराई से भगवान का प्रेम, आशीर्वाद और प्रकाश भी उस तक पहुँचने लगता है। उसकी प्रिय वाणी फूटती है और कहती है—"वत्स! हम तुम दोनों एक ही हैं, तुम मुझसे विलग कब हो ? यह जो तुम खेल खेलते रहे हो, वह मेरी ही तो इच्छा थी, उसमें जो कुछ खराब था, उसका दुःख न कर, उसे भी मेरी ही इच्छा समझकर मुझ को ही सौंप दे। तूने! यह पाप किए हैं, ऐसा भूलकर अब यह मान कि यह तो मेरा ही अभियान, मेरी ही इच्छा थी, अब तू उन सब बुराइयों को मुझे समर्पित करके निर्द्वंद हो जा। जब तू सारे संसार से मोह-ममता के बंधन हटाकर 'अहं विमुक्त' हो रहा है, तो अपनी भूलों और गलतियों को ही अपनी मानने की भूल क्यों करता है ? अपना संपूर्ण अहंकार छोड़कर तू संपूर्ण भाव से मेरी शरण में आ गया है तो पापों को धो डालने का उत्तरदायित्व भी तब मेरा ही है।"

भावनाओं के इस आदान-प्रदान में भी बड़ा रस है। माना कि परमेश्वर दिखाई नहीं देता, पर मन की मलिनताओं के प्रति घृणा और विराट् के प्रति प्रेम से निर्मित स्वच्छ जीवन का सुख तो प्रत्यक्ष है ही। जिसके हृदय में सत्य है, वह भला किसी से भय क्यों करेगा, जिसके हृदय में सब के लिए प्रेम, दया और करुणा होगी, वह भला किस अभाव से पीड़ित होगा ? प्रेम में वह शक्ति है, जो हिंसक जीव को भी वश में कर लेती हैं, फिर जब जीवमात्र में परमात्मा और परमात्मा के प्रति प्रेम का भाव उमड़ने लगेगा तो किसी से छल-कपट, द्वेष-दुर्भाव का दुःख मनुष्य क्यों उठायेगा।

प्रेम-साधना से बढ़कर और कोई साधना नहीं, उसमें आदि से लेकर अंत तक मधुरता, सौंदर्य-ही-सौंदर्य है। किंतु वह सौंदर्य और माधुर्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार के किसी एक पदार्थ या परिस्थिति में उपलब्ध नहीं हो सकती। जीव स्वयं लघु है, उसकी तरह ही हर कण छोटा और अभाव की स्थिति में है, सबका सम्मिलित भाव परमात्मा है, प्रेम उसका निर्विवाद और निर्भय स्वरूप है, इसलिए हम प्रेम को पवित्र बनाकर ही अपनी लघुता को विभुता में बदल सकते हैं। परमात्मा के प्रेम में ही वह शक्ति है, जो जीव को सामान्य रस माधुर्य और आनंद प्रदान करती है।

प्रेम के द्वारा सर्वांगीण कल्याण की साधना

आज का युग अपने पराये के भाव को अधिक प्रोत्साहन दे रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी और अपने परिवार की सुख-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील है। अपने ही परिवार में भी प्राथमिकता अपने व्यक्ति को ही देने का यत्न किया जाता है। मान लीजिए कि एक परिवार में आठ व्यक्ति हैं, उन पर दो सौ रुपया मासिक व्यय होता है और गृहस्वामी इतना ही कमा पाता है, तो प्राय: यह प्रवृत्ति रही है कि गृह स्वामी को अच्छा भोजन, अच्छा कपड़ा प्राप्त करने की इच्छा होगी, उसके कारण चाहे स्त्री-बालकों को घटिया दर्जे का भोजन, कपड़ा ही क्यों न मिले। वे समान रूप से सब का एक-सा खान-पान रख सकते हैं। इससे पारस्परिक प्रेम भी बढ़ सकता है। क्योंकि अपने लिए अधिक सुख-प्राप्ति के यत्न से दूसरों के मन में जो दुर्भावना उत्पन्न होती है, वह समान भाव रखने से नहीं होगी।

परायेपन के भाव से संसार में पागलपन और मानसिक चिंताएँ बढ़ती जा रही हैं, दुर्भावना और कलह का बोलबाला है। हत्याएँ और आत्महत्याएँ भी दिन-पर-दिन बढ़ रही हैं। इन सबमें अपना-परायापन ही कारण रूप से विद्यमान है। यदि मनुष्य सर्वात्म-भाव को अपना ले—सभी को अपना मानने लगे तो ऐसी घटनाओं में बहुत कुछ कमी हो सकती है।

इन बुराइयों को दूर करने के लिए प्रेमपूर्ण वातावरण चाहिए। यदि आप अपने प्रति अथवा ईश्वर के प्रति प्रेम करते हैं, तो उसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मात्रा में वृद्धि कीजिए और दूसरों के प्रति भी प्रेम करने का स्वभाव बनाइए। प्रेम का यह कार्य पहले अपने घर से ही आरंभ कीजिए। पत्नी, पुत्र, भाई, बहन, माता, पिता आदि से प्रेम कीजिए। जब आप स्वयं विश्वास कर लें कि इनके प्रति प्रेम करने में सफल हो गए हैं, तब घर से बाहर निकल प्रेम की सरिता बहा दीजिए।

आपका प्रेम दूसरों के प्रति जैसे-जैसे बढ़ेगा, वैसे-वैसे ही आपकी शक्ति सर्वत्र बढ़ती जाएगी। उस समय अधिक व्यक्ति आपसे प्रेम करते पाये जायेंगे। अधिक से अधिक लोग आपसे मिलने लगेंगे। यदि आप बुरे व्यक्ति पर भी दया और प्रेम प्रदर्शित करेंगे, तो संभव है कि वह आपके प्रभाव से अपनी बुराइयों को धीरे-धीरे छोड़ दें।

जो लोग आपसे द्वेष करते हैं, उनके प्रति भी द्वेष-भाव मत रखिए और सदा उनके कल्याण की कामना करिए। जो आपके निंदक, पीड़क, और शत्रु हैं, उनको भी बुरी दृष्टि से मत देखिये। एक लोकोक्ति भी है—'जो तोकूँ काँटे बोवे, बाकूँ बो तो फूल।' जिस व्यक्ति में प्रेम के गुण का अभाव है, उसके प्रति प्रेम कीजिए। अपने आचरण से उसे प्रेम करना सिखाइये।

बुद्ध, दयानंद, शंकराचार्य, गांधी आदि सबने जन-जन में जाकर अपना प्रेममय संदेश दिया। वे सबसे प्रेम करते और लोगों के दु:ख को अपना ही दु:ख समझते थे। ईसा के अनुयायी एवं प्रचारक लोग विभिन्न कार्य करते हुए अपने मत का प्रचार करते थे। उन्होंने धर्म प्रचार के लिए अनेक छोट-छोटे काम करने में भी अपने को हीन नहीं माना। उन्होंने अपने लिए कभी किसी प्रकार के प्रत्युपकार की माँग नहीं की। उनका उद्‌देश्य केवल सेवा और प्रेम था। उनके विरोधी उनकी हिंसा में लगे थे, परंतु उन्होंने प्रेम के बल पर ही अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की थी।

जो मनुष्य अन्य मनुष्यों की ओर विशेष कर मनुष्येतर प्राणियों की भी सेवा में लगा रहता है, वह निस्संदेह दूसरों के लिए जीवित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है। उसे अपने दु:ख दूर करने में आनंद नहीं आता, बल्कि स्वयं दु:ख पाकर भी वह दूसरों को सुखी करने में सुख मानता है। ऐसे मनुष्यों को स्वर्ग की भी कामना नहीं होती, बल्कि, सच मानिए- उनके लिए तो पृथ्वी पर ही स्वर्ग है।

ज्ञान और कर्म के साथ भक्ति भी अपेक्षित है

ज्ञानेंद्रियों के आधार पर हमारी अंत:चेतना सुख-दु:ख, काम, क्रोध, आदि अनुभव करती है। इस चेतना को ही मन कहते हैं। मन को और अधिक स्पष्ट करें, तो उसे विविध अनुभूतियों के आधार पर बनी हुई मानवी चेतना कह सकते हैं, जो इतनी समर्थ भी होती है कि जिन कोषों की एकत्रित अनुभूतियों ने उसका निर्माण किया है, उन पर नियंत्रण भी रख सकें। मस्तिष्कीय चेतना के विविध पक्षों को प्रभावित, नियंत्रित और प्रोत्साहित कर सकने में समर्थ होने के कारण मन को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है, उसे ही उत्थान-पतन का कारण माना गया है और उसे ही शत्रु-मित्र की संज्ञा दी गई है। परिष्कृत और सुव्यवस्थित होने पर वह सचमुच मित्र का काम करता है और व्यक्तित्व को प्रतिभाशाली, सम्मानास्पद, संतोषप्रद बनाने के साथ-साथ भौतिक और आत्मिक प्रगति का पथ प्रशस्त करता है। इसके विपरीत यदि वह अस्त-व्यस्त एवं असंस्कृत हो तो फिर वह दूसरों के लिए ही नहीं, अपने लिए भी एक संकट सिद्ध होता है। दुष्प्रवृत्तियों से ग्रस्त मन वाला मनुष्य सबकी दृष्टि में अविश्वस्त और अप्रामाणिक रहता है। अपने आप के लिए भी वह विक्षोभ और असंतोष ही उत्पन्न करता है। ऐसे व्यक्ति पग-पग पर असफल और तिरस्कृत होते रहते हैं, ऐसी विषम परिस्थिति में धकेल देने वाले मन को यदि शत्रु कहा जाय तो उसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं है।

मस्तिष्क की भौतिक संरचना से ऊपर उठकर यदि उसकी चेतनात्मक संरचना का विवेचन किया जाय, तो उसे तीन भागों में बाँटना पड़ेगा— (१) भावनात्मक, (२)क्रियात्मक, (३) ज्ञानात्मक।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यों हर काम में इनमें से एक का बाहुल्य रहता है, पर उसका समुचित समन्वय हर काम में रहना चाहिए, अन्यथा वह कार्य भोंड़ा और बेतुका दीखने लगेगा। और उस कार्य का वह परिणाम न निकलेगा जो संतुलित स्थिति में निकल सकता था।

भावना का आवेश मनुष्य को विक्षिप्त जैसी स्थिति में पटक देता है। प्रेम, श्रद्धा आदि भावनाओं का रंग कई बार ऐसा चढ़ जाता है कि बिना समझे-परखे और आगे की बात सोचे अपने प्रेमी या श्रद्धास्पद पर सब निछावर कर देने का आवेश छाया रहता है। यदि प्रेमपात्र या श्रद्धास्पद उपयुक्त हुआ तो ठीक, अन्यथा इस आवेश में खतरा है। भोली लड़कियों को कितने ही दुराचारी इसी प्रेम जाल में फँसाकर उनका भविष्य हर प्रकार अंधकारमय बना देते हैं। अंधश्रद्धा के चंगुल में फँसे हुए देवी-देवताओं अथवा संत-महंत के माध्यम से इतनी क्षति उठाते हैं, जो यदि सही दिशा में विवेकपूर्वक उठाई गई होती तो उससे अपना और दूसरों का बहुत बड़ा हित-साधन होता।

अनियंत्रित भावनाएँ यदि कुमार्गगामी हो जायें तो पूरी विपत्ति बन कर ही सामने आती हैं। कामांध, क्रोधांध, लोभांध, मोहांध न जाने क्या न करने लायक कर बैठते हैं और पीछे पछताते हैं। पेशेवर हत्यारों की बात छोड़ दें तो सामान्यत: हत्याएँ और आत्महत्याएँ क्रोधांध स्थिति में ही होती हैं। उस समय विवेक पूर्णतया नष्ट हो जाता है और आवेश इस कदर मस्तिष्क पर छा जाता है कि परिणाम का—औचित्य का विचार कर सकने की गुंजाइश ही नहीं रहती। और तनिक से कारण को लेकर आवेशग्रस्त व्यक्ति हत्या या आत्महत्या कर बैठता है। पीछे जब वह बुखार उतरता है तो दूसरों की तरह स्वयं ही अपने आप को धिक्कारते ही बनता है।

भावनाओं का स्तर परिष्कृत हो, तो मनुष्य संत, सज्जन, दयालु, परोपकारी, सहृदय, उदार जैसी सत्प्रवृत्ति से सुसंपन्न होकर देवोपम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन जी सकता है और महामानवों की पंक्ति में खड़ा होकर ऐसे आदर्श उपस्थित कर सकता है, जिससे असंख्यों को चिरकाल तक प्रेरणा मिलती रहे। सद्भावना संपन्न अंतःकरण स्वयं संतुष्ट रहता है और उसके समीपवर्ती शांति और शीतलता अनुभव करते हैं। भावनाओं का संतुलन—उन्हें आवेशों से मुक्त रखकर सत्पथगामिनी बनाए रहना मन का सच्चे अर्थों में सदुपयोग है। जो इसे कर सकें, वे मनस्वी कहलाते हैं और उस मनोबल के कारण अपना और दूसरों का भारी हित साधन करते हैं।

मनश्चेतना का क्रिया पक्ष भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। शरीर के द्वारा—मस्तिष्क के द्वारा जो कुछ किया जाता है, उसी के फलस्वरूप भली-बुरी उपलब्धियाँ सामने आती हैं। परिणाम फल-फूल हैं और उन पौधों के बीज हैं कर्म। अकसर भले-बुरे परिणामों का कारण दूसरे लोगों या कारणों को समझा जाता है। इसमें बहुत थोड़ी सचाई है। वास्तविकता यह है कि अपनी खामियों के कारण परिस्थितियों का पासा उलटा पड़ जाता है और जिनका व्यवहार अनुकूल रह सकता था उनका प्रतिकूल हो जाता है। काम को पूरे मन से न करना, उसे खराब करने के बराबर है। लापरवाही से—अन्यमनस्क होकर कुछ किया जाय उससे तो न करना अच्छा। मनोयोग के अभाव में क्रिया त्रुटिपूर्ण रह जाती है और तत्काल एक काम पूरा किया गया दीखने पर भी परोक्ष रूप से उसमें इतनी कमी रह जाती है जिसके कारण उसे न करने से भी अधिक अपनों को या दूसरों को हानि उठानी पड़े।

क्रियापक्ष यह चाहता है कि उसके साथ पूरा मनोयोग जुड़ा हो। जो किया जाय पूरी दिलचस्पी के साथ किया जाय। समग्र कुशलता का उसमें समावेश जुड़ा रहे। ऐसे काम ऐसे शानदार होते हैं कि उनसे अपना मन भी प्रसन्न हो और दूसरों की दृष्टि में उस कर्तृत्व के आधार पर अपने व्यक्तित्व का मूल्य बढ़े। व्यवस्था-बुद्धि कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्मजात गुण नहीं है। पूरे मनोयोग से अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न मानकर यदि हर काम को करने की आदत डाल ली जाय तो निस्संदेह उसके द्वारा किए हुए काम ऐसे बढ़िया होंगे कि शत्रु भी उन हाथों को चूमना चाहेगा। छोटे कामों में अपनी यह प्रवृत्ति दिखाने वालों को दुनिया सिर आँखों पर उठाती है और फिर वे एक के बाद एक उन्नति की सीढ़ियाँ पार करते हुए प्रतिष्ठा एवं सफलता के उच्च शिखर पर पहुँच जाते हैं।

अच्छी आदतें डालने में देर लगती है और अध्यवसाय से काम लेना पड़ता है। आत्म नियंत्रण रखना पड़ता है। पर बुरी आदतें थोड़ा सा ही अवसर पाने पर स्वभाव का अंग बन जाती हैं और फिर मुश्किल से छूटती हैं। आलसी और प्रमादी स्वभाव के व्यक्ति अपना अधिकांश समय ऐसे ही बरबाद करते रहते हैं और सामर्थ्य की तुलना में दसवाँ अंश भी काम उनसे नहीं बन पड़ता। हरामखोरी की, कामचोरी की आदत आलस और प्रमाद के रूप में परिपक्व होकर जीवन की बरबादी का कारण बनती है। ऐसे व्यक्ति कभी कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकते। नशेबाजी, जुआ आदि के व्यसन कइयों के पीछे पड़ जाते हैं। फजूलखरची की कइयों की ऐसी बुरी आदत होती है कि वे उपयुक्त आजीविका होते हुए भी सदा ऋणग्रस्त और तंगदस्त रहते हैं। अपने क्रिया संस्थान पर मन का नियंत्रण न होने से ही ऐसी अस्त-व्यस्तताएँ पनपती है। यदि मन:चेतना प्रखर हो और मच्छर काटते ही जिस तरह उसे उड़ाने का, काटे हुए स्थान को खुजलाने का प्रबंध अचेतन मन करता है उसी तरह यदि सचेतन मन शरीर की समस्त क्रिया पद्धति पर नियंत्रण रखे तो समय का हर क्षण, बुद्धि का हर कण सप्रयोजन कामों का अभ्यस्त हो सकता है और प्रगति की दिशा में इतना आगे बढ़ा जा सकता है जिसे जादू या चमत्कार कहा जाय।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुगल साम्राज्य का जब अंत हुआ तो कुछ दिन पहले केंद्र का नियंत्रण ढीला पड़ गया था और प्रांतों के सूबेदार आजाद होकर अपना अलग-अलग राज्य बना बैठे थे। यही स्वेच्छाचार उस सत्ता के पतन का कारण बना। ज्ञानेद्रिंय और कर्मेंद्रिय मन साम्राज्य के सूबेदार हैं। यदि उन पर विवेक का नियंत्रण न रहें और वे स्वेच्छाचार बरतें तो समझना चाहिए कि जीवन साम्राज्य का अंत मुगल साम्राज्य की तरह ही सन्निकट सुनिश्चित है।

मन की तीसरी प्रवृत्ति है—ज्ञान। जानकारियों के आधार पर ही मनुष्य को सही सोचने और सही निष्कर्ष निकालने की क्षमता प्राप्त होती है। एकांगी, अधूरा अथवा उलटा ज्ञान होने से चिंतन को सही दिशा नहीं मिलती और अविकसित मस्तिष्क बाल-क्रीड़ाओं की तरह ऐसा कुछ सोचता और ऐसा कुछ करता रहता है, जिसे उपहासास्पद ही कहा जाए।

भावात्मक, क्रियात्मक और ज्ञानात्मक त्रिविध प्रवृत्तियों को संतुलित, नियंत्रित और व्यवस्थित रखने से ही मन की शक्ति का पूरा लाभ उठाया जा सकता है। अन्यथा वह अंतर्द्वंद्व में ही उलझी हुई अपनी अद्भुत क्षमता को नष्ट-भ्रष्ट करती रहती है और इतनी अद्भुत क्षमता से संपन्न होने पर भी मनुष्य उसके लाभों से वंचित रह जाता है।

आज ज्ञान और कर्म के विकास पर जोर दिया जा रहा है,पर भाव पक्ष को भुला ही दिया गया है। मनुष्य जड़ मशीन बनता चला जा रहा है। कंप्यूटरों की तरह का ज्ञान और मशीनों की तरह का कर्म भौतिक साधन बढ़ा सकता है, पर उससे मनुष्य की अंतःचेतना को पोषण न मिल सकेगा। भाव-स्तर यदि सूना, नीरस, शुष्क और निष्ठुर बना रहे तो भाव कोमलता के उस दिव्य आनंद से सर्वथा वंचित ही रह जाना पड़ेगा जो आत्मा की भूख है। जड़ जीवन जीकर केवल इंद्रिय तृप्ति की जा सकती और अहंता के उन्माद की थोड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खुमारी अनुभव की जा सकती है। पर यदि भावना स्तर को सुविकसित करने की परिस्थितियाँ पैदा नहीं की गईं तो संसार में सुख-सामग्री कितनी ही बढ़ जाय आनंद और उल्लास की एक-एक बूँद के लिए तरसकर आत्मा की उत्कृष्टता मर जाएगी। केवल नर कंकाल ही जीवित रहेगा और उसमें प्रेत-पिशाच का आसुरी अट्टहास ही देखने को मिलेगा।

भाव-स्तर की सरसता जिस प्रेम, दया, करुणा, ममता, स्नेह, आत्मीयता, सेवा आदि के रूप में विकसित देखी जाती है, वही जीवन की श्रेष्ठतम मधुरिमा है। उसकी एक बूँद भी कहीं मिल जाय तो मनुष्य तो क्या छोटे जंतुओं की आत्मा भी आनंद-विभोर हो जाती है।

क्वीन्स यूनिवर्सिटी, ओटोरियो (कनाडा) में 'प्रेम का प्राणियों पर भौतिक प्रभाव', विषय पर, एक नई खोज के परिणाम सामने आए हैं। इस विश्व विद्यालय कें फार्मेकोलोजी विभाग के प्राध्यापक डॉ० एल्डन वायड ने बताया कि उनके विभाग की एक महिला कर्मचारी चूहों वाले विभाग को सँभालती है। उसे स्वभावत: चूहों से बहुत प्रेम है। वह उन्हें दुलार भरी दृष्टि से देखती है, उनकी सुविधाओं का ख्याल रखती है और यथासंभव अपने व्यवहार में प्रेम प्रदर्शन भी करती है। इसका प्रभाव चूहों पर आश्चर्यजनक हुआ है। महिला ने चूहों के नाम रख छोड़े हैं और वह जिसे पुकारती है वही आगे आता है। जैसे ही वह पिंजड़ों के पास आती है, चूहे दौड़कर उसके पास इकट्ठे हो जाते हैं और एकटक ताकते रहते हैं । जो भी वह खिलाती है खुशी-खुशी खा लेते हैं, यद्यपि उसमें तरह-तरह की औषधि मिली रहने से वह भोजन उनकी रुचि और प्रकृति के प्रतिकूल होता है। कई बार कष्टकर विधि से चूहों के शरीर में औषधियाँ पहुँचाई जाती हैं। अनुभव होने पर तो इसके लिए किसी चूहे को तैयार नहीं होना चाहिए, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह महिला जिस चूहे को चाहती है खुशी-खुशी इस प्रयोग के लिए सहयोग देने के तैयार कर लेती है।

कई बार चूहे मारने की दवा का भी प्रयोग किया गया। एक ही किस्म की एक ही मात्रा में दवा दो महिलाओं द्वारा चूहों को खिलाई गईं। इस प्रेम-भावना-युक्त महिला के हाथ से दवा खाने पर २० प्रतिशत चूहे मरे जबकि उसी दवा को उतनी ही मात्रा में दूसरी महिला ने खिलाया तो ८० प्रतिशत मर गए।

इस विभाग के अध्यक्ष डॉ० वायड ने निष्कर्ष निकाला है कि-चिकित्सा क्षेत्र में प्रेम-भावनाओं का भी प्रयोग किया जाना चाहिए। चिकित्सकों का व्यवहार रोगी के साथ विश्वास, प्रेम पात्र जैसा होना चाहिए, साथ ही उन्हें अपने प्रियजनों के साथ रहने का भी अवसर देना चाहिए, ताकि—रोगियों को औषधि उपचार के अतिरिक्त प्रेम भावनाओं की औषधि से भी बढ़-चढ़कर गुणकारी सिद्ध होने वाली खुराक मिलती रह सके।

प्रगति और सुख-सुविधा की बात सोचने वाले मनुष्य को भाव-गरिमा की ओर भी ध्यान देना चाहिए और आत्मा की इस आकांक्षा को पूरा करने के लिए भी कुछ सोचना-करना चाहिए। ज्ञान-कर्म के साथ भक्ति का भी समन्वय होना चाहिए।

प्रेम भावना के साथ आदर्शवादिता भी जोड़ें

प्रेम अंत:करण का अमृत है। जिसकी भावनाएँ स्नेहसिक्त होती हैं, वे अनुभूतियों से आनंदित रहते हैं और दूसरों पर उसके छीटें छिड़ककर उन्हें उल्लास प्रदान करते हैं। प्रेम एक चुंबक है जिसके सहवर्गी तत्त्व अनायास ही खिंचते चले जाते हैं। यदि प्रेम-भावना के साथ आदर्शवादिता भी जुड़ी हुई हो तो अपना संपर्क-क्षेत्र श्रेष्ठ तत्त्वों के साथ सघन होता चला जायेगा। बुरी प्रकृति के किंतु प्रेमी स्वभाव के लोग, बुरी चांडाल चौकड़ी के सरगना बने हुए देखे जाते हैं। यही बात अच्छी प्रकृति पर भी लागू होती है, मधुरता और ममता के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि सज्जनता भी जुड़ी हुई हो, तो फिर निश्चय ही अपने को देवसमाज के सम्मानित सदस्य के रूप में पाया जाएगा।

दर्पण में अपनी ही छाया दिखाई पड़ती है। कुरूप छाया दृष्टिगोचर हो तो दर्पण पर क्रुद्ध होना बेकार है। अपनी मुखाकृति जैसी होगी वैसी ही सूरत सामने खड़ी होगी। दूसरों को सुधारने के लिए हमें अपने में आवश्यक हेर-फेर करना होगा अन्यथा मनमरजी की दुनिया देखने के सपने कभी साकार न हो सकेंगे। अक्सर होता यह कि अपने दुर्गुणों की प्रतिक्रिया ही अवांछनीय परिस्थितियों के रूप में इर्द-गिर्द घूमती रहती है। यदि अपने में आवश्यक सुधार कर लिया जाय तो दूसरों में भी उस परिवर्तन का आभास सहज ही होने लगेगा।

रूखे, नीरस और स्वार्थी व्यक्ति दूसरों के सघन सत्कार एवं गहरा सहयोग प्राप्त नहीं कर सकते। अपनी असलियत यदि खोटों से भरी है, तो वह दूसरों को भी उदासीन, असहयोग एवं उपेक्षा, अवज्ञा करने वाला बना देगी। सचाई और आत्मीयता की विशेषताएँ जिनमें भरी रहती हैं आमतौर से उन्हें दूसरों की शिकायतें कम ही करनी पड़ती है। सच तो यह है कि जिन्हें दूसरे लोग अनुपयुक्त मानते हैं वे भी उनके साथ अनुकूलता और सद्भावना का परिचय देते देखे जाते हैं।

आलसी और अस्त-व्यस्त लड़के ही प्रश्न-पत्र कड़ा होने से लेकर शिक्षा अथवा शिक्षकों को दोष देते हैं जबकि उन्हीं परिस्थितियों में दूसरे परिश्रम और मनोयोग से पढ़ने वाले अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं। कठिनाइयों से अवरोध तो होता है, पर इतना नहीं कि प्रबल पुरुषार्थ से उनका समाधान न हो सके। जिंदगी में कटुता एवं विषमता के अवसर कम नहीं होते। पर उन सबसे बड़ा संकट यह है कि कदम-कदम पर अमंगल की आशंका से ग्रसित रहा जाय। हीनता, निराशा, भीरुता और अशुभ की कल्पनाएँ मनुष्य का स्वत्व निचोड़ लेती हैं। वह आंतरिक दृष्टि से खोखला एवं कुरूप बन जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसी मनःस्थिति को देखकर समीप आई हुई सफलता उलटे कदम वापिस लौट जाती है।

व्यक्तित्व का वजन बढ़ाने में बहुमूल्य साधनों का भी महत्त्व हो सकता है, पर निश्चय रूप से वह उन पर अवलंबित नहीं है। जिसके पास अमीरी प्रदर्शित करने वाला ठाठ-बाट है, लोग सहज ही उसके बड़प्पन को आँकते हैं। पर दूसरा पक्ष यह भी है कि उच्चस्तरीय व्यक्तित्व को अभावग्रस्त स्थिति में भी पूजा जाता है। संतों और मनीषियों की यही परंपरा रही है। संपत्ति साधनों से रहित होते हुए भी उनके सद्गुणों को समझा गया और उन्हें श्रद्धा के साथ नमन किया गया। अमीरी का ठाठ-बाट आरंभिक प्रभाव छोड़ता है, उसकी चकाचौंध से हतप्रभ होकर लोग सोचते हैं, जिसके पास इतनी धन दौलत है कि वह लापरवाही के साथ खरच कर सके— वह जरूर ही कोई भाग्यवान होना चाहिए, पर असलियत खुलते देर नहीं लगती। दुर्गुणी व्यक्ति इतनी उलझनों से उलझा होता है कि निकट आने पर गरीब मनुष्य भी अपनी तुलना में उसे कहीं अधिक दुर्भाग्यग्रस्त पाता है। गुणों की गरिमा चिरस्थायी है, पर उसकी अनुभूति देर में और गहरा संपर्क बनने पर ही होती है। इतना होते हुए भी उनसे उत्पन्न श्रद्धा-प्रतिक्रिया चिरस्थायी होती है और गहरी भी। इसके विपरीत चेहरे की चमक, वाचालता एवं अमीरों के ठाठ-बाट के कारण आरंभ में ही तत्काल उत्पन्न होने वाला प्रभाव कुछ ही देर में तिरोहित होने लगता है और उसका अंत होते देर नहीं लगती। व्यक्तित्व की गरिमा और जीवन-स्तर की महिमा बढ़ाने के लिए सद्गुणों की संपदा संचय करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं।

जीवनक्रम में प्रामाणिकता का समावेश 'सादा जीवन उच्च विचार' का आदर्श अपनाने से ही हो सकता है। सादगी शालीनता की निशानी है। उद्धत वेश बनाकर या भड़कीला ठाठ- बाट जमाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों पर अपनी छाप छोड़ने या धाक जमाने की बालचेष्टा में कितने ही व्यक्ति बहुत धन और समय खरच करते हैं और तरह-तरह की विडंबनाएँ आए दिन रचते हैं। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि सामान्य मनुष्य के भीतर भी एक ऐसी विशेषता रहती है जिसके आधार पर उसे वस्तुस्थिति समझने में देर नहीं लगती। जिस प्रकार शारीरिक रुग्णता को कीमती पोशाक के भीतर भी छिपाया नहीं जा सकता है। उसी प्रकार ठाठ-बाट का झीना आवरण भीतरी दुर्बलताओं को छिपाने में सफल नहीं होता। दंभ के आधार पर बड़ा आदमी बनने के प्रयास जब प्रकट होते हैं, तो उनकी दुर्गंध से घृणा ही उत्पन्न होती है और दंभी व्यक्ति को बड़प्पन प्राप्त होना तो दूर उस प्रमाणिकता से भी वंचित होना पड़ता है, जो सामान्य लोगों को भी सहज स्वाभाविक रूप से उपलब्ध रहती है।

जितना समय धन और मस्तिष्क बड़प्पन का ढोंग रचने में खरच किया जाता है, उसकी अपेक्षा कहीं अधिक प्रयत्न से वास्तविकता से भरी महानता कमाई जा सकती है। सादगी में यदि स्वच्छता और व्यवस्था जुड़ी हुई हो तो वह कम खरच की होते हुए भी महँगे मोल पर खरीदी गई "अमीरी" की अपेक्षा कहीं अधिक वजनदार सिद्ध होती है।

दूसरों को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शन के साधन जुटा लेना पर्याप्त नहीं। किसी को चकाचौंध से क्षणभर के लिए चमत्कृत तो किया जा सकता है, पर श्रद्धा और विश्वास से भरा सम्मान प्राप्त करने के लिए चरित्र और चिंतन की गहराई ही काम आती है। अति भावुकों की बात अलग है, सामान्यतः विश्वास उपलब्ध करने के लिए प्रामाणिकता की कसौटियों पर खरा उतरना पड़ता है। इस अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण वही हो सकता है जिसने आदर्श की आग में तपाकर अपने व्यक्तित्व को प्रखर एवं परिपक्व बनाया है। इस मार्ग पर चलते हुए 'बड़ा आदमी' बना नहीं जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवहार कुशलता, सहनशीलता, मधुरता और उदारता का संबंध व्यक्तित्व में ऐसा आकर्षण उत्पन्न करता है जिससे अपने संबंधित, परिकर को स्नेह सौहार्द के बंधनों में बाँधकर रखा जा सकता है। अभावग्रस्त परिवारों में भी यदि ऐसा स्नेह सौजन्य हो,तो वहाँ स्वर्ग जैसी सरसता बरसती है और अभावजन्य असुविधाओं का पता भी नहीं चलता। इसके विपरीत प्रचुर साधन संपन्न लोग भी दोष–दुर्गुणों से ग्रसित रहने के कारण खिन्न और क्षुब्ध रहते हैं। स्वार्थपरता और संकीर्णता की दुष्प्रवृत्तियाँ जहाँ जितनी मात्रा में बढ़ी–चढ़ी होंगी, वहाँ नारकीय वातावरण उतने ही विस्तार के साथ बिखरा होगा। प्रसन्नता और प्रामाणिकता दोनों सद्भाव संपन्न वातावरण में ही उत्पन्न होती, बढ़ती और चिरस्थायी रहती हैं।

दया और सहानुभूति में आनंद का रहस्य छिपा पड़ा है। मन में जितनी स्नेहसिक्तता कम होती है, वचन उतने ही रूखे और कर्कश निकलते हैं। साँप की तरह फुसकारने वाले और जलती मशाल की तरह चिनगारियाँ बखेरने वाले कटुभाषी व्यक्ति हर जगह पाये जाते हैं, वे न अपने को वरन् दूसरों को भी क्षुब्ध करते हैं।

जड़ें दिखाई नहीं पड़तीं, पर पेड़ का अस्तित्व उन्हीं पर निर्भर रहता है। जीवन की जड़ें कर्तव्यपालन के तंतुओं के रूप में बिखरी हुई देखी जा सकती हैं। प्रेम के जल से इन्हें सींचा जाता है और आत्मसंयम की खाद पाकर वे परिपुष्ट होती हैं। जीवन का वटवृक्ष कितना विशाल, कितना हरित, और कितना सघन होता है—यह इस बात निर्भर है कि उसकी जड़ें सींचने में कितना प्रयास किया गया ?

मिट्टी का बरतन खरीदने वाला उसे बजाकर परखता है कि वह कहीं से फूटा तो नहीं है। फूटा होगा तो बजाने पर उसकी आवाज ही वस्तुस्थिति बता देती है। जीभ से निकलने वाले शब्द किसी व्यक्ति के फूटे या रद्दी होने की बात निरंतर प्रकट करते रहते हैं। नीरस व्यक्ति ही कर्कश शब्द बोल सकते हैं। जिस व्यक्तित्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की जड़ें गहरी हैं, उसकी वाणी ऐसे शब्द निःसृत करती है जो विद्या के गौरव को बढ़ाएँ और सुनने वाले में उत्साह उत्पन्न करें। सुसंस्कृत व्यक्ति अपनी वाणी को संस्कारित करते हैं और मतभेद अथवा क्षोभ उत्पन्न होने का अवसर आने पर भी वाणी को कुत्सित नहीं ही होने देते।

सच्ची बात लोगों को कटु लगती है, ऐसा कहा-सुना जाता है, पर यह अंशतः ही सत्य है। जिनके स्वार्थों पर सत्य के प्रकटीकरण से सीधी चोट पहुँचती है, ऐसे लोग सही कथन पर रुष्ट भी हो सकते हैं, पर यदि बोलने की शैली में स्नेह, सद्भावना मिली है और जिससे कहा जा रहा है उसके सम्मान की रक्षा का भी ध्यान रखा जाय, तो सत्यवचन कभी संकट उत्पन्न नहीं करता। प्रेम मिश्रित सत्य यदि सद्भावनापूर्वक सुधार की आशा से कहा गया है, उसमें समाधान एवं सुझाव है तो कोई कारण नहीं कि किसी के मन पर उसकी चोट पहुँचे और शत्रुता उत्पन्न हो। किसी को यह कहा जाय कि तुमने अनीति से धन अर्जित किया है और कृपणतापूर्वक जोड़ा है तो उचित न होगा। यह कहना ज्यादा अच्छा है कि आपने कमाया है उसका श्रेष्ठ उपयोग यही हो सकता है कि उसका एक महत्त्वपूर्ण अंश आप लोकमंगल के कार्यों में लगाकर श्रेय के भागी बनें। इससे चोट पहुँचाए बिना सुझाव देकर वह श्रेष्ठ हल उपस्थित किया जा सकता है, जिसके आधार पर वर्तमान स्थिति में जो सर्वोत्तम हो सकता है उसे किया जा सके।

जीवन् की सफलता और सार्थकता का भवन छोटे-छोटे सद्गुणों की ईंटों और सतर्कता के गारे चूने में चुना जाता है। यदि हम जीवन को महत्त्वहीन न समझें और उसके सदुपयोग का समुचित ध्यान रखें तो उस लक्ष्य तक सहज ही पहुँच सकते हैं जिसके लिए यह मनुष्य जीवन की महान विभूति उपलब्ध हुई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम से ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति

प्यार की संवेदना ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति एवं अभिव्यक्ति है। हलचल तो जड़ पदार्थों में भी होती है, परमाणु, जीवाणु और विषाणु भी चलते-फिरते, जीते और हलचलें करते हैं। पर उन्हें आत्मा की चेतना से युक्त नहीं गिना जाता, कारण कि हलचल के रहते हुए भी उनमें भावना का समावेश नहीं होता। भावनाओं से संपन्न चेतना का ही दूसरा नाम आत्मा है। आत्मा की परमात्मा के रूप में परिणति तब होती है, जब उसमें प्यार का अमृत भरा निर्झर लहराने लगता है। प्रेमी प्रकृति को ईश्वर की प्रतिध्वनि-प्रतिच्छाया कहा जाय जो उसमें कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

नीरस, रूखे, निष्ठुर, शून्य और शुष्क प्रकृति के मनुष्य जीवित तो कहे जा सकते हैं, पर उनमें उस सद्भावनायुक्त सरसता का अभाव रहता है, जिसे सहृदयता कहते हैं। सहृदयता का ही दूसरा नाम प्रेम प्रकृति है। यह जिस भी अंतःकरण में उगेगी वहाँ चंदन जैसी शीतल सुगंध उमँगती रहेगी। ऐसे व्यक्ति इस धरती के वरदान हैं स्थिर शांति और प्रगति उन्हीं के अस्तित्व से जुड़ी रहती है।

अपनी आत्मा की परिधि जो जितनी विस्तृत कर सकता है वह उतना ही प्रेम व्यवहार की व्यापकता का परिचय दे सकता है। दूसरों में अपनी आत्मा का—अपने में दूसरों का अस्तित्व समाया हुआ अनुभव करना ही वह उद्गम है जहाँ से प्रेम-भावनाओं का आविर्भाव होता है। परायापन जहाँ होगा वहाँ उपेक्षा बरती जाएगी और उदासीनता रहेगी। पर जहाँ अपनापन जोड़ लिया गया हो, वहाँ गहरी दिलचस्पी पैदा होगी। अपने आपे को सुखी, समुन्नत बनाने का प्रयास हर कोई सहज स्वभाव से करता है। आत्मीयता की बूँदें जितने क्षेत्र में बरसेंगी, उसमें उल्लास की हरियाली निश्चित रूप से उगेगी।

अधिकार में आई हुई वस्तुओं को अपना माना जाता है। जिनसे कुछ प्राप्त होने की आशा है अथवा जिनके साथ कारणवश मोह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंधन बँध गये हैं, वे सभी प्रिय लगते हैं। प्रिय पदार्थों और प्रियजनों का सान्निध्य भी प्रिय लगता है। उनके सुख-संतोष में भी अपने को प्रसन्नतादायक अनुभूति होती है। आनंद-समस्त परिवार के प्रेम के केंद्र-बिंदु से ही विनिर्मित और विकसित होता है। रुग्ण और अभावग्रस्त दुखी मनुष्य भी प्रिय पात्रों को देखकर खिल उठते हैं, यह सदा देखा जाता है। वैभव के विस्तार एवं निकटवर्ती परिजनों में जितनी ममता होती है, उतना ही उनका सान्निध्य प्रिय लगता है। यदि हम इस आत्मीयता की परिधि को अधिक व्यापक और विस्तृत बना सकें, तो अपनी सारी दुनिया हर्षोल्लास से भर सकती है।

समस्त सद्‌गुणों का मूल प्रेम है। जो अपने से प्रेम करेगा, उसे व्यक्तित्व को सद्‌गुणों से—सत्प्रवृत्तियों से—सुसज्जित करना ही होगा। सद्ज्ञान का आहार आत्मा को देना ही पड़ेगा। जो अपने से प्यार करेगा, जिसे अपने उज्जवल भविष्य की आशा है, उसके लिए एक मात्र राजमार्ग यही प्रतीत होगा कि संयम और सदाचार से शरीर को और परिष्कृत विवेक दृष्टि से अपने मन:क्षेत्र को परिष्कृत एवं सुसंस्कृत बनाने में संलग्न हो।

आत्मा का प्रकाश जितने क्षेत्र में विस्तृत होगा, उतने में अपना आपा बिखरा दिखाई देगा। उसे स्वच्छ, सुरक्षित और समुन्नत बनाने के लिए अंत:करण में अदम्य स्फुरणा उठेगी। सेवा धर्म उसका सहज स्वभाव बन जाएगा। जब अपने समान ही दूसरों को भी सुखी-संपन्न बनाने की आत्मभावना विस्तृत हो उठेगी तो, अपनी ही भाँति उन्हें भी सुखी-समुन्नत बनाने के लिए ऐसी उत्कंठा उगेगी, जिसे रोकना या दबाना संभव ही न हो सके।

मोह और प्रेम में वही अंतर है जो काया और छाया में होता है, छाया तो काया से मिलती-जुलती तो होती है, पर उसमें न तो जीवन होता है और न बल। फोटो देखकर आभास तो मूल मनुष्य का होता है, पर उस कागज के टुकड़े से प्रयोजन कुछ सिद्ध नहीं होता। मोह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में जलन भर होती हैं, पर वह प्रकाश और उल्लास नहीं होता जो प्रेम में पाया जाता है।

प्रेम में प्रेमास्पद की प्रसन्नता का ध्यान रखा जाता है। मोह में प्रेमी को अपनी इच्छानुसार चलाने की ललक रहती है। मोह तब प्राप्त होता है, जब मनोरथ की पूर्ति होती है, उसमें व्यवधान आने पर खीझ और झुँझल का उद्वेग उमड़ता है, इसके विपरीत प्रेम में चाहने का—पाने का—कोई प्रश्न ही नहीं रहता। जिसमें प्रेमास्पद को सुविधा और प्रसन्नता अनुभव हो, वही सोचना उचित लगता है और वही करने की आकांक्षा उठती है। मोह में प्रेमास्पद पर यह दबाव डाला जाता है कि वह इच्छानुकूल कार्य करे, पर प्रेम में अपने को ही उसके संकेतों पर चलने एवं ढलने के लिए उत्साह उमड़ता है।

मोह अंधकार में भटकता है। उसमें भय, आशंका, असफलता की संभावना बनी रहती है, पर प्रेम तो शाश्वत है, उसमें सफलता के अतिरिक्त और कहीं कुछ है ही नहीं। प्रेम एकांगी होता है। वह अपने पक्ष में ही परिपूर्ण होता है। दूसरा उसे स्वीकार करता है या अस्वीकार, इससे सच्चे प्रेमी की स्थिति में कोई अंतर नहीं आता।

मूर्ति पूजा-प्रेमयोग की साधना का एक उत्कृष्ट माध्यम है। भक्त इष्टदेव की प्रतिमा पर अपनी श्रद्धा-भक्ति का आरोपण करता है—करता ही चला जाता है। वह यह नहीं देखता कि प्रतिमा ने प्रत्युत्तर दिया या नहीं। मूर्ति सदा मौन ही रहती है, कभी बदले में प्रेम प्रदर्शित नहीं करती तो भी भक्त के मन पर उसकी कोई बुरी प्रतिक्रिया नहीं होती। वह अपने प्रेम पक्ष को अपने में पूर्ण मानता है और विश्वास करता है कि प्रतिमा का कोई प्रत्युत्तर न मिलने पर भी उसकी साधना की प्रगति में कोई अंतर आने वाला नहीं है। मीरा के 'गिरधर गोपाल' एकांगी थे। पाषाण प्रतिमा में से जीवंत कृष्ण का सृजन मीरा की एकांगी श्रद्धा ने ही संपन्न कर लिया था। एकलव्य की साधना में यह तथ्य और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम अपने आप में आनंद से ओत-प्रोत है। उसकी उपलब्धि के बाद और कुछ पाने योग्य रह नहीं जाता। प्रेम अपने अतिरिक्त और कुछ किसी को नहीं देता और वह प्रेमी की अहंता से कम कुछ मूल्य भी स्वीकार नहीं करता। कामनाओं के जाल में मोहासक्ति ही उलझी रहती है। जो चाहता है वह प्रेमी नहीं हो सकता। लेन-देन की यदि कुछ प्रेमी और प्रेमास्पद के बीच गुंजाइश भी है तो इतनी ही कि वह दिया हुआ दुःख शिरोधार्य करता है और अपने सुखों को निछावर करने से पीछे नहीं हटता। प्रियतम का दिया दुःख लेकर तपस्वी बना जाता है और उसे अपना सुख देकर त्यागी की पंक्ति में बैठने की पात्रता प्राप्त होती है।

दिव्य प्रेम की परिणति आत्मदान में होती है। आत्मदान और दिव्य प्रेम को अन्योन्याश्रित समझा जाना चाहिए। परमेश्वर को देने के लिए मनुष्य के पास पवित्र प्रेम के अतिरिक्त और कुछ अपनी वस्तु है भी नहीं। पदार्थ तो प्रकृति के हैं, प्रकृति परमेश्वर की। कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसे हम अपनी कह सकें और परमेश्वर को अर्पण कर सकें। यदि प्रेम रहित मनःस्थिति में अपने वैभव का थोड़ा-सा अंश दे भी दें तो उतने से परमेश्वर को संतोष नहीं हो सकता। प्रियतम की तृप्ति आत्मदान से ओत-प्रोत दिव्य प्रेम के बिना हो ही नहीं सकती। जहाँ प्रेम और आत्मदान के साथ समग्र वैभव भी जुड़ा होता है, वहाँ आत्मदानी का ऐसा कुछ बचता ही नहीं जो उसने अपने प्रियतम के चरणों पर अर्पण न कर दिया हो। आत्मदानी के धन,यश, वैभव, विलास, मन, मस्तिष्क आदि का उपयोग परमेश्वर के लिए-उसके संकेतों पर निछावर करने के लिए ही सुरक्षित रहता है, इससे कम में न प्रेम की पूर्णता होती है और न प्रेमास्पद को संतोष।

दिव्य प्रेम अनवरत होता है। उसके लिए अलग से समय निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। जिस प्रकार अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरीर मन का क्रिया-कलाप हर घड़ी ध्यान में रहता है, इसी प्रकार प्रेमी भी रोम-रोम में समाया रहता है, और उसी के लिए क्रियाएँ होती हैं, उसी को प्रसन्न करने के लिए मस्तिष्क सोचता है। ऐसी दशा में हर घड़ी उसी का स्मरण-भजन होता रहता है। सच्चा स्मरण वही है जिसमें और सब कुछ विस्मरण हो जाय, यहाँ तक कि अपना आपा भी। जीवन, मरण, व्यय और संग्रह सब कुछ जिसमें प्रियतम के लिए होता रहे, उसी को समर्पित जीवन कह सकते हैं। मोह से निवृत्ति पाने के लिए दिव्य प्रेम की आवश्यकता है। जहाँ सच्चा प्रेम होगा वहाँ मोह नहीं रहेगा और जहाँ मोह का साम्राज्य होगा, वहाँ प्रेम का प्रकाश उदय न हो सकेगा।

प्रेमी न तो लोभ या भय दिखाकर प्रेमास्पद को आकर्षित करता है और न स्वयं इनके कारण उसकी ओर आकर्षित होता है। ईश्वर हमारी मनोकामना पूर्ण करे अथवा उसका अनुग्रह पाप कर्मों के दंड से बचा दे, इस प्रकार भय और लोभ के कारण की जाने वाली भक्ति उपहासास्पद है, उसमें वह उत्कृष्टता कहाँ रह सकती है जिसमें आत्मा को अजस्र आनंद और संतोष की उपलब्धि होती है। स्वर्ग का लोभ और नरक का भय भी जिसे प्रभावित न करे—जो अपने आप में सरल स्वाभाविक हो—आत्मोल्लास ही जिसका लक्ष्य हो, दिव्य प्रेम उसी को कहा जाना चाहिए। जिसमें सिद्धियों की कामना हो उसे भी भक्ति की संज्ञा में नहीं गिनना चाहिए। प्रेम के उदय के साथ-साथ मिलन की जो उत्कंठा प्रबल होती है, उसे द्वैत के अद्वैत में परिवर्तित होने की भावनात्मक तितिक्षा और तप साधना ही कहना चाहिए।

प्रेम का अभ्यास एक बिंदु से आरंभ किया जा सकता है, पर उतने तक वह सीमित नहीं रह सकता, इष्टदेव को लक्ष्य बनाकर उसका शुभारंभ श्री गणेश किया जा सकता है। किसी व्यक्ति विशेष को भी प्रेमास्पद वरण किया जा सकता है, पर दिव्य प्रेम उतनी छोटी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिधि में सीमाबद्ध नहीं रह सकता। बत्ती जलाकर प्रकाश उत्पन्न करने की प्रक्रिया सही है, पर प्रकाश को बत्ती में सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता, वह समीपवर्ती क्षेत्र में फँसे फैले—बिखरे बिना रह ही नहीं सकता। प्रेम असीम है। जो उसकी साधना करेगा, वह किसी व्यक्ति या देवता तक अपने भाव-विस्तार को सीमाबद्ध नहीं कर सकता । चंदन वृक्ष से उद्भूत गंध की तरह प्रेम-भावना निरंतर विस्तृत होती रहती है और उसका रसास्वादन करने का उस क्षेत्र के प्रत्येक प्राणधारी को अवसर मिलता है। प्रेम का विस्तार सहृदयता, सज्जनता, सहानुभूति, उदारता, करुणा, सेवा और आत्मीयता की सद्भावनाओं में विस्तृत होता चला जाता है। प्रेमी की सहज प्रवृत्ति यह होती है कि दूसरों के दुःखों को बाँट लेने के लिए और अपने सुखों को वितरित करने के लिए आतुरता एवं अनुकूलता अनुभव करे।

परमेश्वर किसी व्यक्ति का नाम नहीं है और न उसका कोई विशेष रूप, स्थान है। यह विश्व-ब्रह्मांड ही परमात्मा है। आत्माओं का समन्वित स्वरूप ही परमात्मा कहा जाता है। उसी से दिव्य प्रेम किया जा सकता है। समष्टि के अनुदान से ही व्यक्ति का जन्म और विकास होता है, इसलिए उसी को पालनकर्ता माना जाता है। समाज के स्नेह-सहयोग में ईश्वर की महिमा झाँकती हुई देखी जाती है और उस समष्टि आत्मा को प्रेमास्पद मानकर ही सार्थक भक्ति का परिचय दिया जाता है। स्वार्थ को परमार्थ पर उत्सर्ग करें। समाज की आवश्यकताओं पर अपनी विभूतियाँ निछावर करने की तैयारी करें, तो समझना चाहिए कि दिव्य प्रेम को चरितार्थ करने की प्रक्रिया विदित हो गई। परमेश्वर की भक्ति कल्पना जगत् में विचरण करने वाली भावुकता नहीं, वरन् वह कठोर सचाई है जिसमें मनुष्य व्यक्तिवाद का परित्याग कर समाजवादी बनता है। यही है ईश्वर भक्ति और प्रेम-साधना का तत्त्व ज्ञान।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेम साधना के सूत्र

प्रेम द्वारा उस प्रेम स्वरूप की प्राप्ति में ही जीवन की सार्थकता है। इच्छा की अंतिम चरितार्थता प्रेम में ही है। साधारण दृष्टि से देखने पर मालूम होता है कि प्रत्येक प्राणी प्रेमी है। वह किसी-न-किसी से प्रेम करता ही है। माँ-बाप अपने बच्चों से, पुरुष, स्त्री से, मित्र मित्र से, साथी-साथी से, कोई धन, कीर्ति, यश, भव्य भवनों से प्रेम करता है, तो कोई प्रकृति से, तो कोई ईश्वर से। तात्पर्य यह है कि सृष्टि का कार्य-संचालन प्रेम के माध्यम से ही हो रहा है। इस विश्वभुवन में प्रेम उपासना प्राणिमात्र का स्वाभाविक धर्म है। इसके बिना जीवन का अस्तित्व कायम नहीं रहता।

प्रेम साधना के पथ पर बढ़ता हुआ मनुष्य जब उन्नति की ओर अग्रसर होता है तो वह अंत में उस प्रेम स्वरूप के दर्शन करता है जहाँ सर्वत्र प्रेम के सिवाय कुछ है ही नहीं। इसे ही विश्वप्रेम भी कहते हैं। इस विश्वप्रेम की प्राप्ति कैसे हो? इसका मर्म बहुत कम लोग जानते हैं और उनमें से भी बहुत कम इसको प्राप्त कर पाते हैं।

त्याग और प्रेम का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। "प्रेम तो बिना दिए जी नहीं सकता।" "आप लीजिए, मुझे नहीं चाहिए।" इस नीति से प्रेम की प्राप्ति की जा सकती है। "मैं ही लूँगा" आपको नहीं दूँगा "की नीति से प्रेम स्वरूप की प्राप्ति तो दूर परस्पर का प्रेम भी समाप्त हो जाता है। उत्सर्ग पर ही-त्याग पर ही-प्रेम जीवित है। परमपिता परमात्मा का हमसे कितना प्रेम है, उसने हमारे लिए अपने अमूल्य भंडारों को खोल रखा है। हम भी जो कुछ हमारे पास है, उसे दे डालें। तन, मन, धन, योग्यता जो कुछ हो दूसरों के हित साधन के लिए समर्पित करें।

इसे देने में, उत्सर्ग के मार्ग में व्यवसायिक बुद्धि को बीच में न आने दिया जाय। जो कुछ दें, उसके बदले में कुछ प्राप्ति की आशा न रखें। जो अपने पास है उसे देते रहें, निःस्वार्थ भाव से उत्सर्ग करते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहें। आप देखेंगे विश्वप्रेम का स्रोत आप में उमड़ पड़ेगा। आप आनंदित हो उठेंगे। स्वयं ही नहीं सारे वातावरण को प्रेममय बना देंगे। लेने ही लेने की प्रवृत्ति में प्रेम का विकास असंभव है। लेने की प्रवृत्ति के कारण कुछ ही समय में कैकेई ने राजतिलक उत्सव को शोक में परिणत कर दिया था। किंतु उसके विपरीत राम और भरत के त्याग ने प्रेम की नई लहर बहा दी।

निःस्वार्थ त्याग के पथ पर चलकर भेड़ चराने वाला बालक ईसा मसीह बन गया। त्याग के पथ का अवलंबन लेकर ही महात्मा गांधी, सेंटपाल आदि ने जन-जन में उस प्रेम स्वरूप के दर्शन किए। निःस्वार्थ त्याग ही प्रेम स्वरूप की उपलब्धि करा सकता है। अतः अपने पास जो कुछ है उसे उन्मुक्त भाव से लुटा दीजिए दूसरों के लिए। अपना सर्वस्व अर्पण कर दीजिए। आपका त्याग और निःस्वार्थ भाव जितना उच्च होगा उतना ही आप में ईश्वरीय प्रेम, विश्वप्रेम का पुण्य प्रकाश प्रस्फुटित होगा, जिसके दिव्य प्रकाश से आपका जीवन धन्य बन जायगा।

अहंकारी, अभिमानी, स्वार्थी एवं महत्त्वाकांक्षी के हृदय में विश्वप्रेम की अनुभूति नहीं हो सकती। इसलिए विश्वप्रेम के लिए अपने अहंकार को मारना होगा। अपने हृदय को खाली करो—मैं उसे प्रेम से भर दूँगा। इस ईश्वरीय महावाक्य में स्पष्ट संकेत है कि अहंकार को निकाल देने पर हृदय में ईश्वरीय प्रेम की प्रतिष्ठापना हो सकती है।

अहंकारी मनुष्य की शक्ति से विश्वप्रेम दूर होता है। अहंकार किसका—धन, दौलत, वैभव-ऐश्वर्य का? नहीं, यह सब यहीं छोड़ना पड़ेगा। नाम, पद, प्रतिष्ठा का अहंकार है तो यह रंगीन चोला यहीं उतारना पड़ेगा। बड़े-बड़े शक्तिवान, सामर्थ्यवान इस धूल में मिल गए हैं। फिर किसका अभिमान? अपने आपको इस अहंकार के नागपाश से विमुक्त करके अपने हृदय में विश्वप्रेम की प्रतिष्ठापना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर अपना तथा अन्य लोगों का जीवन धन्य बनाइए। अपनी नई सृष्टि बसाने की कोशिश में जीवन न खोया जाय, क्योंकि वह अस्वाभविक है, असंगत है, ईश्वरीय विधान के विपरीत है, परिणाम दुःखदायी और विनाश ही है।

संसार के प्रत्येक तत्त्व में भलाई बुराई सन्निहित हैं। न कोई पूर्णतः बुरा है और न कोई पूर्णतः भला। मनुष्य के हृदय में भी विकारों के बीच ही प्रेम की जड़ जमी हुई है। शुभ तत्त्व बीज रूप में सभी में स्थित है। ऐसी दशा में बुराइयाँ ही देखना अथवा दूषित दृष्टिकोण को अपनाकर घृणा-निंदा को गले लगाना, प्रेमसाधना के पथ में भारी विघ्न है। अपना दृष्टिकोण बदल जाने पर जो दूषित और बुरे तत्त्व हैं उनमें भी अच्छाई, उस ईश्वरीय तत्त्व झाँकी दृष्टिगत होती है। वहाँ भी उस प्रेम स्वरूप के दर्शन होते हैं क्योंकि विश्वप्रेम की प्राप्ति में कहीं दोष, बुराइयाँ रहती ही नहीं है। घृणा, परनिंदा से प्रेम मर जाता है। अतः यह दृष्टिकोण त्याज्य है। इसके विपरीत अच्छाई का दर्शन करना आवश्यक है।

प्रेम उपासना के लिए हृदय शुद्धि भी अत्यावश्यक है। अपने विकारों को समझकर यथावत् उन्हें दूर करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त दूसरों के लिए अपना हृदय सदैव खुला रखना चाहिए। दुराव प्रेम-साधना में बाधक है। हृदयों पर आधिपत्य किया जा सकता है। बुद्धि की दौड़, तर्क-वितर्क, चालाकी, प्रतिभा के प्रदर्शन से मित्र को भी पराया बना देती है। शुद्ध हृदय और निष्कपट व्यवहार से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है। अतः भूलकर भी चालाकी, दुराव-छिपाव से काम न लेकर सबसे निष्कपट व्यवहार एवं सहृदयता के संबंध कायम करने चाहिए।

प्रेम की साधना आत्मभावों को जोड़ने और उनके विस्तार में ही है। साधारणतः मनुष्य उन वस्तुओं से प्रेम करता है, जिन्हें वह अपनी समझता है। जो उसे अच्छी लगती हैं, उनसे वह प्यार करता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। अच्छी लगने वाली वस्तुओं के मूल में वह आत्मभाव ही उनसे जुड़ा हुआ है। कोई अपने मकान-संपत्ति से, कोई अपने बाल-बच्चों से, कोई अन्य चीजों से प्रेम करते हैं और दूसरों के बाल-बच्चों, धन, चीजों, मकान आदि से प्रेम नहीं करते, क्योंकि उनमें उसका आत्मभाव स्थित नहीं है, वह उन्हें अपना नहीं समझता। किसी भी वस्तु के आकर्षण में आत्मभाव जोड़ देने पर ही वह अच्छी लगती है। इसलिए विश्वप्रेम के लिए, सर्वत्र उस प्रेम स्वरूप के दर्शन के लिए, अपने आत्मभाव को चारों ओर जोड़ देना आवश्यक है।

अपने चारों ओर आत्मभाव आरोपित करके अपने-पराये की भेद-दृष्टि हटा देनी चाहिए। सभी बच्चों, स्त्री-पुरुषों, पशु पक्षियों से आत्मभाव स्थापित किया जाए। सर्वत्र अपना ही नजर आएगा और उनसे प्रेम संबंध कायम होंगे। सभी को अपना समझने का अभ्यास डालना चाहिए। यदि कोई किसी अर्थ में बुरा भी है, तो घृणा, निंदा न की जाय, क्योंकि जैसे कोई व्यक्ति अपनी संतान, भाई-बंधु की बुराई को क्षमा करता हुआ उसे प्रकाश में नहीं लाता, और प्रशंसाजनक बातों को ही प्रधानता देता है। यही भाव अन्य सभी से बनाना आवश्यक है।

विश्वप्रेम की साधना में मूल आधार है—अपने आत्मभाव का विस्तार। इसका नियमित अभ्यास डालना आवश्यक है। इसका प्रारंभ अपने घर-पड़ोस से करना चाहिए। सर्व प्रथम अपने घर के लोगों से ही आत्मीयता के संबंध काम करने चाहिए, उससे बढ़कर अपने पड़ौस, मुहल्ले, प्रांत, देश, समाज तक अपने आत्मभाव का विस्तार करना चाहिए और एक दिन यही भाव विश्व-मानव के साथ स्थापित हो जाता है। पवित्र प्रेम का अभ्यास पहले अपने पर से ही प्रारंभ करना चाहिए। प्रेम की प्रारंभिक पाठशाला घर ही है और इससे बढ़कर फिर अपना क्षेत्र विस्तृत करते रहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा भी प्रेमोपासना का एक आवश्यक अंग है। दूसरों की अपने से जितनी बने उतनी भरपूर सेवा करनी चाहिए। वृद्ध, रोगी, बाल-बच्चों की खूब सेवा करनी चाहिए। इस संबंध में अपने जीवन से दूसरों को कुछ देते रहने की नीति अपनानी चाहिए। जीवन का उद्‌देश्य यही होना चाहिए।

प्रेम ही जीवन है। प्रेम-साधना ही जीवन का उद्‌देश्य है। निखिल विश्व में उस अनंत, रस स्वरूप, प्रेम स्वरूप की दिव्य अनुभूति प्राप्त करना, हृदय में विश्व-प्रेम को प्रतिष्ठापित करना ही आत्मा का उद्‌देश्य है।

□

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org